मासिक

शिविरा पत्रिका

वर्ष : 53 जनवरी, 2013 अंक : 7

प्रकाशन तिथि : 2 जनवरी, 2013

मूल्य : 10 रुपये

चित्र समाचार

राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल के परीक्षा परिणाम को ऑनलाइन जारी करते हुए माननीय शिक्षामंत्री श्री बृजकिशोर शर्मा।

राष्ट्रीय सेवा योजना +2 स्तर के जिला समन्वयकों की एक दिवसीय कार्यशाला दिनांक 10 दिसम्बर 2012 को खाटूश्याम जी (सीकर) में आयोजित हुई। इस अवसर पर सम्भागी अधिकारियों को सम्बोधित करते हुए शिक्षा निदेशक डॉ. वीना प्रधान।

शिक्षा विभागीय कर्मचारी संघ के तत्वावधान में शिक्षा निदेशालय स्थापना दिवस दिनांक 16 दिसम्बर 2012 को निदेशालय परिसर में मनाया गया। इस अवसर पर *(बाएं)* प्रारम्भिक शिक्षा निदेशक डॉ. रविकुमार सुरपुर एवं अन्य अतिथिगण के साथ सम्मानित हुए कर्मचारी तथा *(दाएं)* उपस्थित कर्मचारी।

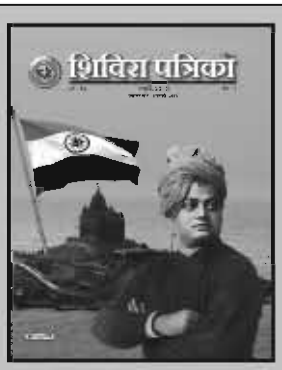

शिविरा पत्रिका

प्रारम्भिक एवं माध्यमिक शिक्षा का समाचार-विचार मासिक

वर्ष : 53 अंक : 7

जनवरी, 2013

प्रकाशन तिथि : 2 जनवरी, 2013

प्रधान सम्पादक
डॉ. वीना प्रधान

●

वरिष्ठ सम्पादक
ओमप्रकाश सारस्वत

●

सहायक
सांग सिंह
मुकेश व्यास

मूल्य : 10 रुपये

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए 50 रु.
- संस्थाओं/अन्य व्यक्तियों के लिए 100 रु.
- मनी ऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर के नाम देय है।
- पोस्टल ऑर्डर/चैक स्वीकार्य नहीं हैं।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।

पत्र व्यवहार हेतु पता

वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा, राज. बीकानेर-334 011
दूरभाष : 0151-2528875
E-mail : teacher.today@yahoo.com

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से शिक्षा विभाग राजस्थान का सहमत होना आवश्यक नहीं है। –व.सं.

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते

श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

इस अंक में

हिन्द देश के निवासी सभी जन एक हैं	5	दिशाकल्प
स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा-दर्शन	6	डॉ. अन्नाराम शर्मा
स्वामी विवेकानन्द की राष्ट्रीय शैक्षिक परिकल्पना	8	बजरंग प्रसाद मजेजी
युगपुरुष : स्वामी विवेकानन्द	10	रूपनारायण काबरा
स्वामी विवेकानन्द जी की दृष्टि में भारतीय नारी	11	साँवलाराम नामा
नया साल - नये सपने - नये संकल्प	13	अभयकुमार जैन
स्वाध्याय से ही जीवन प्रकाशित होता है	15	द्वारकेश भारद्वाज
भारतीय संस्कृति की संरक्षा, शिक्षा और शिक्षक	17	डॉ. विद्या पालीवाल
जिम्मेदार शिक्षक व शिक्षण	18	मोनिका आर्य
सफलता और आत्मविश्वास	19	भैरूलाल नामा
गुणवत्तापूर्ण शिक्षा क्यों? और कैसे?	20	महेश कुमार चतुर्वेदी
व्यक्तित्व में छुपा केरिअर	21	उषा टेलर
शिक्षक का व्यक्तित्व	23	भँवर सिंह
बापू की सीख-19 नशीली चीज़ें	24	मो.क. गाँधी
नवीनता, नवाचार - शिक्षक के आधार	29	शिवरतन थानवी
बच्चों में सृजनशीलता का विकास	31	रामजीलाल घोड़ेला
मानव जीवन की सार्थकता	32	अचल चन्द जैन
बच्चों के शारीरिक विकास में सहायक खेल	33	जगदीश चन्द्र सेन
अभिनव राष्ट्रीय ध्वज मानचित्र पाठ्यक्रम	34	अमर सिंह पाण्डेय
वीडियो खेलों के चक्रव्यूह में फँसा बचपन	35	तरुण कुमार दाधीच
गणित के विकास की कहानी	36	डॉ. राधा माथुर
खेल-खेल में क्रमागत संख्याओं का योग ज्ञात करना	39	गायत्री शर्मा
यों जगाएं गणित में रुचि	40	दयाराम कुम्हार
हासिल की उलझन	41	डॉ. जमनालाल बायती
शिविरा विचार मंच		
नीरस, कठिन विषय नहीं है गणित	42	महेश कुमार मंगल
रोचक गणित शिक्षण	43	डॉ. अन्जना शर्मा
गृहकार्य जाँच एवं गुणवत्ता	43	मांगीलाल आर्य
प्रेरणा-स्रोत बनें, न कि यश के भागी	44	मुरारीलाल कटारिया
अच्छे कार्यों से ही व्यक्ति सफल बनता है	46	नरोत्तम देवी
कुत्ते के नाम वसीयत	50	प्रतिध्वनि

स्थाई स्तम्भ

पाठक पीठ - 4/आदेश परिपत्र 25-28/शिविरा पंचांग - 28/ विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम - 28
पुस्तक परिचय - 45/चतुर्दिक 47-48/भामाशाह - 49

मुखावरण

नभांशु श्रीमाली

पाठक पीठ

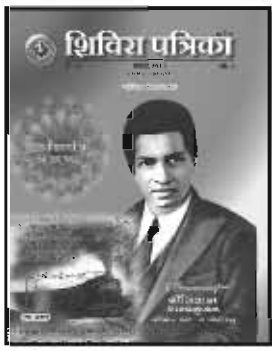

शिविरा नवम्बर 2012 का अंक पढ़ा, सारे अंक के लेख बड़े मनन, चिन्तन, अनुभव के आधार पर लिखे लगे।

कलम के धनी, शिक्षाविद, भाषा विशेषज्ञ, शिविरा के आदि सम्पादक थानवी जी का 'मनसम्पर्क धनी श्री अनिल बोर्दिया' बड़ा ज्ञानवर्द्धक लगा वहीं शिविरा शिक्षण पत्रिका का इतिहास भी ज्ञात हुआ।

शब्दों के धनी, शिविरा पत्रिका में अपने विशिष्ट लेखों के लिए प्रसिद्ध आदरणीय रूपनारायण जी का लेख 'विद्यालयों के समक्ष चुनौतियाँ' विशेषकर राजकीय विद्यालयों के लिए और ऐसे निजी विद्यालयों के लिए चुनौती है जो शिक्षा को व्यवसाय मानते हैं।

नीलम जी विश्नोई का संक्षिप्त लेख '.... हिन्दी' उन लोगों को विचार करने को बाध्य करता है जो क्षेत्रीय भाषाओं के विकास के समर्थक हैं। 'कलम मेरी ....' में लेखक ने असहाय बालक की मानसिक वेदना को उजागर किया है, पर महानगरों को छोड़कर सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में अंग्रेजी माध्यमों के विद्यालयों का तेजी से बढ़ना आज के अभिभावक का अंग्रेजी के मोह को उजागर करता है। अंक की अच्छी सामग्री के चयन के लिए सम्पादक मण्डल को धन्यवाद।

–शिवचरण मंत्री, श्रीनगर, अजमेर

उत्तरोत्तर शिविरा आकर्षक व पठनीय सामग्री से भरपूर छप रही है। साधुवाद ! हर अंक मासान्त मिला है। पढ़कर आनन्द ही हुआ कि काफी रोचक व प्रेरणास्पद प्रसंग इसमें छपे हैं। वर्षों पूर्व शिक्षक-निदेशक प्रश्नोत्तर चलते थे जो अति लाभप्रद थे। कृपया पुनः शुरू कर गुरुवृन्द को अनुगृहीत करावें। जिससे हमारी शिक्षकों की अबूझ अनसुलझी समस्याओं का निदान हो पावे। 'दिशाकल्प' तो विभागीय मार्गदर्शिका बन रहा है। चतुर्दिक में विस्तार दें।

–मोहनराम बिश्नोई, मदासर (जैसलमेर)

'शिक्षा से जीवन में सफलता' दिशाबोध के शंखनाद से प्रारम्भ शिविरा का नवम्बर 2012 अंक का बच्चों के साथ चाचा नेहरू वाला सुन्दर मुखपृष्ठ एवं करणी माता को समर्पित अन्तिम कवर पृष्ठ दोनों में ही शिक्षा, शिक्षक, बाल-प्रेम, राष्ट्रभक्ति, संस्कृति एवं विरासत का समन्वय है। 'पिता के पत्र पुत्री के नाम' के माध्यम से शिक्षक के रूप में नेहरू के शिक्षकत्व का प्रस्तुतिकरण प्रशंसनीय है, प्रेरक है। काश, इस लेख को तथा 'पिता के पत्र पुत्री के नाम' पुस्तक को बी.एड. प्रशिक्षण में व्यापक और प्रभावी महत्व दिया जाए। इस लेख पर चर्चा-परिचर्चा हो और यह भी कि यह पुस्तक कक्षा 8 से 10वीं तक के विद्यार्थियों को पढ़ने हेतु प्रेरित किया जाए और इस पर आधारित प्रश्नोत्तरी व परीक्षण भी तीन-चार चरणों में हो। शिक्षकों के सही और समर्पित शिक्षण की दिशा में यह लेख निश्चय ही प्रभावी होगा। लेखक के नेहरू के शिक्षण कौशल और पत्रों का समन्वय अत्यन्त ही पठनीय, चिन्तनीय एवं पालनीय बन गया है, शिक्षकों, अभिभावकों दोनों के लिए। यह स्वाध्याय आवश्यक है।

'इन्दिरा जी का पत्र बच्चों के नाम' भी इस अंक का विशिष्ट उपहार है। श्री थानवी जी द्वारा शिविरा के जन्मदाता 'मनसम्पर्क धनी श्री अनिल बोर्दिया द्वारा प्रसूत 'शिविरा पत्रिका व नया शिक्षक' सेवारत, अनवरत शिक्षा के स्रोत रहे हैं और रहेंगे। थानवी जी के इस लेख को सम्पूर्ण पढ़ना और सोचना भी शिक्षामनीषी श्री बोर्दिया के प्रति एक सार्थक, सही श्रद्धांजलि होगी। 'प्रतिध्वनि' के अन्तर्गत 'पिसनहारी का कुआं' एक रम्य, प्रभावी एवं सामयिक सन्देश-संपूरित रचना है जल संरक्षण के प्रति सभी को जागरूक करने हेतु। समग्र अंक सराहनीय है, शिक्षकों को जगाने वाला है, साधुवाद !

–रूपनारायण काबरा, वैशाली नगर, जयपुर

शिविरा दिसम्बर अंक आद्योपान्त पढ़ा, आकर्षक मुखपृष्ठ पर महान् गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन का आवक्षचित्र अद्भुत लगा। गणित विषय जो वेदांग शास्त्रों में सर्वोपरि है चिन्तन के अन्तर्गत दिए श्लोक से ही स्पष्ट हो रहा है वरन् जीवन के हर पहलू को छूता गणित भले ही सबके मत भिन्न हों पर प्रभावित जरूरत करता है। मेरे शिक्षक जिन्होंने कक्षा में मनोविज्ञान का प्रयोग कर मुझे भी गणित के अकारण भय से मुक्त किया उनका आभारी हूँ। इस अंक को पढ़कर इतर शिक्षक भी प्रेरणा लेंगे। हमारे गणितज्ञ जिनकी सूची पृष्ठ तेरह पर प्रकाशित है संग्रहणीय है। साथ ही गर्वानुभूति होती है कि ऐसे गणितज्ञ हमारे देश में हुए हैं।

मेरा एक सुझाव है कि निदेशालय स्तरीय व मण्डल स्तरीय ताजा गतिविधियाँ जो समाचारिका के रूप में शिविरा में प्रतिमाह प्रकाशित हो सकें तो दूर-दराज में बैठा शिक्षक जान सके कि विभागीय कौनसी गतिविधि इन दिनों सम्पन्न हुई है।

दिशाकल्प में निदेशक महोदया की अपील जो गणित शिक्षण कराने वालों से की गई है हृदयस्पर्शी लगी।

–बालकृष्ण शर्मा, कनेछनकलाँ, भीलवाड़ा

शिविरा मिली, गणित शिक्षण पर ढेर सारी सामग्री - आपको बधाई ! पर दुःख है कि सारी सामग्री महाविद्यालयी लेखकों की है। आप विद्यालयी शिक्षा में एक भी लेखक तैयार नहीं कर सके - खैर। सम्भव है उन्हें सूचना भी न मिली हो। मुखपृष्ठ व अन्तिम पृष्ठ धरोहर अच्छा संजोया है, इसे जारी रखिए। पाठकों को नई जानकारियाँ मिल रही हैं। आपके परिश्रम को नमन करता हूँ।

–प्रो.(डॉ.) जमनालाल बायती, भीलवाड़ा

चिन्तन

हिन्द देश के निवासी सभी जन एक हैं
रंग रूप, वेश-भाषा चाहे अनेक हैं।
बेला, गुलाब, जूही, चम्पा, चमेली
प्यारे-प्यारे फूल गुंथे माला में एक हैं।
कोयल की कूक न्यारी, पपीहे की टेर प्यारी
गा रही तराना बुलबुल, राग मगर एक हैं।
गंगा, जमुना, ब्रह्मपुत्र, कृष्णा, कावेरी
जाके मिल गई सागर में हुई सब एक हैं।
हिन्द देश के निवासी सभी जन एक हैं।
रंग-रूप, वेश-भाषा, चाहे अनेक हैं।

सत्यमेव जयते

डॉ. वीना प्रधान
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

दिशाकल्प

उत्तम नागरिक-आदर्श राष्ट्र

हिन्द देश के निवासी सभी जन एक हैं

सर्वप्रथम आप सबको नववर्ष 2013 एवं देश के 64वें गणतंत्र दिवस की कोटिशः शुभकामनाएँ। आज, जब मैं शिक्षा विभाग के निदेशक पद पर कार्यरत हूँ और अक्सर स्कूलों में जाने तथा शिक्षकों एवं बच्चों से मिलने का सौभाग्य प्राप्त होता है, मुझे मेरा बचपन याद आता है। विशेषकर अपने स्कूली जीवन को याद कर मैं रोमांचित हो जाती हूँ।

विद्यालयों में होने वाली प्रार्थना सभाओं में तब जैसे जीवन मूल्यों का अमृत बरसता था। कैसा अद्भुत नजारा होता था उन क्षणों में ! विद्यालय के निर्धारित परिधान में कद के अनुसार सावधान की मुद्रा में पंक्तिबद्ध खड़े बच्चे, सामने प्रधानाध्यापकजी के साथ विद्यालय के सभी शिक्षक, हारमोनियम एवं तबले की संगति के साथ प्रार्थना, अभियान गीत एवं राष्ट्रगान की मोहक प्रस्तुति। आज के समाचार, सुविचार, शारीरिक अभ्यास, उपस्थिति अंकन, स्वच्छता व स्वास्थ्य जाँच, सामान्य निर्देशों की घोषणा– इन सबकी एक के बाद एक प्रस्तुति में सतत जिज्ञासा बनी रहती थी। कहीं कोई उबाव नहीं होता था। हमें शिक्षकों के रूप में अपने अभिभावक ही नजर आते थे। कहना न होगा, छात्र-छात्राओं के रूप में हम भी उन्हें अपने बच्चे ही लगते होंगे।

प्रार्थना सभा सत्र में प्रस्तुत किए जाने वाले गीतों में 'हिन्द देश के निवासी सभी जन एक हैं' गीत मुझे अक्सर याद आता रहता है। कितने सुन्दर भाव तथा कितना गहरा अर्थ एवं मूल्यबोध लिए है यह गीत। मुझे विश्वास है कि अब भी हमारे विद्यालयों में प्रार्थना सभा एवं अन्य अवसरों पर यह गीत गाया जाता होगा। यदि किन्हीं विद्यालयों में यह गीत नहीं गाया जाता है तो मेरी अपील है कि इसे प्रार्थना सभा कार्यक्रमों में अवश्य शामिल करें। इस गीत को मन से गा कर और अभ्यास करवा कर तो देखिए, आप में राष्ट्रभक्ति के भाव स्वयंमेव प्रस्फुटित होते नजर आएँगे। ऐसे अनमोल गीत बहुतेरे हैं। उनसे मित्रता करिए। उन गीतों को अपना बनाएँ। स्वयं बन जाएँ उन गीतों के। देखिए कितना आनंद आता है, क्योंकि गीत मन के मीत और आत्मा का संगीत होते हैं।

इस माह में भारत का 64वाँ गणतंत्र दिवस है। गणतंत्र दिवस भारत माता के अमर सपूतों-स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति श्रद्धा व सम्मान प्रकट करने के साथ ही राष्ट्रभक्ति के भाव हृदय में संजोने का आह्वान करता है। आइए, हम गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के बल से उत्तम नागरिक-आदर्श राष्ट्र का सपना साकार करें जो महात्मा गाँधी की रामराज्य संकल्पना का आधार है। आखिर यही तो चाहते थे बापू। उत्तम नागरिक-आदर्श राष्ट्र का दारोमदार उत्तम विद्यार्थी-आदर्श विद्यालय में निहित है।

मेरी संस्था प्रधानों एवं शिक्षकों से गुजारिश है कि वे उत्तम चरित्र एवं संस्कारवान बच्चों के रूप में **भावी भारत का वर्तमान** रचें तो निश्चय ही आदर्श राष्ट्र की रचना का आधार होगा। गणतंत्र दिवस के पावन अवसर पर राष्ट्र की एकता, अखण्डता एवं भावनात्मक एकता का संकल्प लें और दिल में हर समय यह भाव संजोए रखें कि, ***'हिन्द देश के निवासी सभी जन एक हैं।'***

जय भारत, जय-जय भारत।

(डॉ. वीना प्रधान)

''विद्यालयों में होने वाली प्रार्थना सभाओं में तब जैसे जीवन मूल्यों का अमृत बरसता था। कैसा अद्भुत नजारा होता था उन क्षणों में ! विद्यालय के निर्धारित परिधान में कद के अनुसार सावधान की मुद्रा में पंक्तिबद्ध खड़े बच्चे, सामने प्रधानाध्यापकजी के साथ विद्यालय के सभी शिक्षक, हारमोनियम एवं तबले की संगति के साथ प्रार्थना, अभियान गीत एवं राष्ट्रगान की मोहक प्रस्तुति।''

स्वामी विवेकानंद का शिक्षा-दर्शन

❑ डॉ. अन्नाराम शर्मा

स्वामी विवेकानंद भारतीय शिक्षा एवं संस्कृति के निष्ठावान उन्नायक हैं। पराधीन भारत में जब शिक्षा को विदेशी प्रभाव-विस्तार का साधन बनाया जा रहा था, तब उन्होंने अपनी एक मौलिक शिक्षा-दृष्टि प्रतिपादित की। इस दृष्टि का आधार है– अद्वैत वेदांत। अद्वैतवाद ब्रह्म एवं आत्मा की अभिन्नता का दर्शन है। इस दर्शन में आत्मा को ही ज्ञान का स्रोत माना गया है। स्वामी विवेकानंद के अनुसार, ''प्रकृति में कोई ज्ञान नहीं, मानव की आत्मा से ही सारा ज्ञान प्रकट होता है।'' पर आत्मा पर अज्ञान का आवरण रहता है। जैसे-जैसे यह आवरण विशीर्ण होता है, ज्ञान में वृद्धि होती जाती है– अद्वैत वेदांत से प्राप्त इस चिन्तन-सूत्र के आधार पर स्वामी विवेकानंद ने ज्ञान के पश्चिमी मॉडल को ध्वस्त करते हुए भारत के लिए एक राष्ट्रीय शिक्षा पद्धति की कल्पना की, जिसमें स्वाधीनता, समानता, धर्मबोध, आध्यात्मिकता, चरित्रगठन एवं वैज्ञानिकता पर काफी बल दिया गया है।

पश्चिमी शिक्षा : अश्रद्धा एवं अविश्वास की जननी– स्वामी विवेकानंद के अनुसार पश्चिमी शिक्षा नकारात्मक है। यह भारतीयों में श्रद्धा और विश्वास को क्षीण करती है। इस शिक्षा ने पिछले पचास वर्षों से 'तीनों प्रान्तों (बंगाल, मुम्बई एवं मद्रास) में एक भी मौलिक विचारों का व्यक्ति पैदा नहीं किया।' विश्वविद्यालयी शिक्षा पर प्रहार करते हुए उन्होंने कहा कि यह बाबुओं का उत्पादन करने में क्षमता रखने वाले कुशल यंत्र के अतिरिक्त और क्या है? यदि इतना ही होता तो मैं प्रभु को धन्यवाद देता। पर कहाँ? देखो न, लोग किस प्रकार श्रद्धा व विश्वास से हीन होते जा रहे हैं। वे घोषणा करते हैं– गीता भ्रमात्मक है– एक प्रक्षेपक मात्र है और वेद ग्रामीण लोकगीतों से अधिक महत्व नहीं रखते। अपनी संस्कृति एवं इतिहास के प्रति नई पीढ़ी के इस उपेक्षात्मक रवैये के लिए पश्चिमी शिक्षा ही जिम्मेवार है।

वर्तमान शिक्षा आँकड़ों पर आधारित पुस्तकीय ज्ञान के अतिरिक्त कुछ नहीं है, अतः

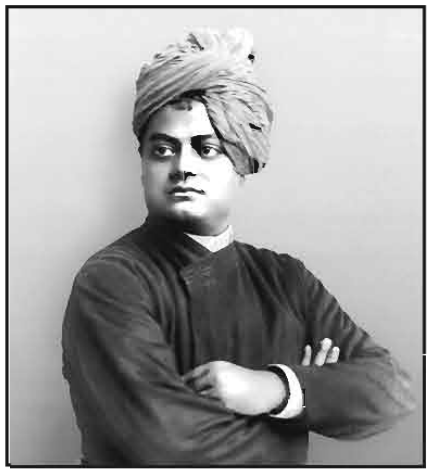

यह अनुर्वद एवं यांत्रिक है। इसमें सर्जनात्मकता एवं जीवनोपयुक्तता के तत्व नहीं हैं। स्वामी विवेकानन्द सवाल उठाते हैं कि ''आपकी शिक्षा का लक्ष्य क्या है? या तो क्लर्की अथवा वकील बनना अथवा अधिक से अधिक एक डिप्टी मजिस्ट्रेट बनना, जो कि एक दूसरे प्रकार की क्लर्की ही है, क्या यही सब कुछ नहीं है? अपनी आँखें खोलो और देखो कि इस भारत देश में, जो कि खाद्य-सामग्री के लिए प्रसिद्ध था, आज भोजन के लिए कैसी त्राहि-त्राहि मची हुई है, क्या आपकी शिक्षा प्रणाली इस कमी को पूरा कर सकेगी?'' इस प्रकार स्वामी विवेकानन्द ने चार्ल्स ग्रांट और मेकाले के लम्बे-चौड़े शैक्षिक दावों का खोखलापन उजागर किया।

डॉ. अन्नाराम शर्मा

शिक्षा एवं साहित्य मनीषी डॉ. अन्नाराम शर्मा हिन्दी के यशस्वी शिक्षक एवं शोध निदेशक हैं। भारतीय साहित्य, संस्कृति, बाजारवाद एवं उत्तर आधुनिकता पर आपके लगभग डेढ़ दर्जन शोधपत्र मधुमती, वीणा, अक्सर, पंचशील, अनुशीलन जैसी प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। आप वर्तमान में डॉ. बी.आर.ए. राजकीय महाविद्यालय, श्रीगंगानगर में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष के रूप में कार्यरत हैं। आपका पता है– 3/27, शंकर कॉलोनी नं. 3, श्रीगंगानगर।

शिक्षा का उद्देश्य-मनुष्य निर्माण– स्वामी विवेकानंद के अनुसार ''सारी शिक्षा एवं समस्त प्रशिक्षण का एकमेव उद्देश्य मनुष्य का निर्माण होना चाहिए।'' मनुष्य होने की पहली शर्त है– आत्मविश्वास। सदियों से अज्ञान एवं निराशा के अंधकार में सोये भारतवासियों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा, ''ऐ वीर ! साहस का अवलम्बन करो। भाई, कहो कि भारत की मिट्टी मेरा स्वर्ग है, भारत के कल्याण में मेरा कल्याण है और रात-दिन तुम्हारी यही रट लगी रहे– हे गौरीनाथ, हे जगदम्बे, मुझे मनुष्यता दो, माँ मेरी दुर्बलता और कापुरुषता दूर कर दो, माँ मुझे मनुष्य बना दो।'' इस प्रकार विवेकानंद शिक्षा के प्रसार से भारतीयों की जड़ता, हीनता और निकम्मेपन को दूर कर उनमें मनुष्यता-बोध जगाना चाहते थे। उनके चिन्तन का मूलमंत्र ही यही है– उत्तिष्ठत् ! जाग्रत !! प्राप्य वरान्नि बोधत् !!! अर्थात् उठो, जागो और जागकर औरों को जगाओ।

शिक्षा का चरित्र-निर्माण से विशेष सम्बन्ध है। उनके अनुसार शिक्षा वही है जिससे हम अपना जीवन गढ़ सकें, मनुष्य बन सकें, चरित्र गठित कर सकें और विचारों का सामंजस्य गठित कर सकें; यदि पाँच ही भावों को पचाकर तदनुसार जीवन और चरित्र बना सको तो तुम्हारी शिक्षा उस आदमी की अपेक्षा बहुत अधिक है जिसने पूरे ग्रंथालय को कंठस्थ कर लिया है। प्रकारांतर से यहाँ सैद्धान्तिक शिक्षा की विगर्हणा करते हुए जीवनोपयोगी शिक्षा पर बल दिया गया है।

शिक्षा का नियंत्रण भारतीय हाथों में– स्वामी विवेकानंद का मत है कि विदेशियों द्वारा नियंत्रित संचालित शिक्षा मूलतः उन्हीं के हितों की पूर्ति करती है, अतः ''देश की सारी शिक्षा आध्यात्मिक या धर्मनिरपेक्ष हमारे हाथों में होनी चाहिए और यह राष्ट्रीयता से भरपूर हो और राष्ट्रीय विधि से ही दी जानी चाहिए।'' ध्यातव्य है कि अंग्रेजी नियंताओं ने राष्ट्रीय इतिहास एवं नायकों को विकृत रूप में प्रस्तुत किया था और वे आर्यों को विदेशी आक्रमणकारी घोषित कर ब्रिटिश शासन की न्यायोचितता सिद्ध कर रहे थे इसी से स्वामी विवेकानंद शिक्षा पर भारतीयों का नियंत्रण चाहते थे। भारत के जातीय नायकों– श्रीराम, कृष्ण एवं हनुमान के आदर्शों को जनजीवन में साकार करना चाहते थे।

शिक्षा की 'राष्ट्रीय विधि' से उनका तात्पर्य गुरुकुल पद्धति से है। गुरुकुल में गुरु के समीप रहता हुआ विद्यार्थी संयम, एकाग्रता, अभ्यास, ब्रह्मचर्य एवं योग के माध्यम से 'अन्तर्विज्ञानों' एवं 'बाह्य विज्ञानों' का ज्ञान प्राप्त करता था। स्वामी विवेकानंद मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा देने के हिमायती थे पर संस्कृत का ज्ञान भी सबके लिए आवश्यक मानते थे। उनकी दृष्टि में संस्कृत के प्रचार के बिना समाज की विकसित अवस्था में स्थायित्व नहीं आ सकता।

शिक्षार्जन : शिक्षक एवं माता-पिता की भूमिका– स्वामी विवेकानंद के अनुसार ''बालक स्वयं ही अपने को शिक्षा देता है।'' उसे अन्य कोई नहीं सिखा सकता। ''मैं सिखा रहा हूँ– यह सोचकर शिक्षक सब कुछ बरबाद कर देता है। वेदान्त कहता है कि मनुष्य के भीतर ही सब कुछ है। केवल उन्हें जगाना मात्र होगा– शिक्षक का बस इतना ही कार्य है।'' शिक्षक तथा माता-पिता के सुधार की उग्र चेष्टाएँ बालक के विकास की गति को अवरुद्ध कर देती हैं और वह 'शेर' की बनिस्पत 'लोमड़ी' बन जाता है।

बालक के शिक्षार्जन में परिजन के दायित्वों की ओर संकेत करते हुए उन्होंने कहा है कि आप उनके विघ्नों, मार्ग की कठिनाइयों को दूर कर सकते हैं, परन्तु ज्ञान तो उसके अपने स्वभाव से ही उत्पन्न होता है। जमीन को थोड़ा नरम भर कर दो, ताकि अंकुर को निकलने में आसानी हो। उसके चारों ओर एक घेरा बना दीजिए, सावधानी रखिए कि कोई उसे नष्ट न कर डाले, पाला या बर्फ से उसका नाश न हो जाए। इस प्रकार स्वामी विवेकानंद बालकों की शिक्षा में स्वाधीनता परम आवश्यक मानते थे। बालक को ताड़ना की अपेक्षा सहानुभूति एवं आत्मीयतायुक्त वातावरण प्रदान करने की अनुशंसा आधुनिक मनोवैज्ञानिक भी करते हैं।

शिक्षक अर्थात् गुरु के व्यक्तिगत जीवनादर्श के बिना कोई नहीं हो सकती। शिष्य को बाल्यावस्था से ऐसे व्यक्ति (गुरु) के साथ रहना चाहिए जिसका चरित्र जाज्वल्यमान अग्नि के समान हो, जिससे उच्चतम ज्ञान का जीवंत आदर्श सदैव उसकी दृष्टि के समक्ष बना रहे। स्वामी विवेकानंद शिक्षा में व्यावसायिकता के कट्टर विरोधी थे। उनके अनुसार शिक्षादान का महान कार्य सदैव त्यागी लोगों द्वारा ही होता रहा है अतः शिक्षादान का भार पुनः त्यागियों के कंधों पर ही डालना चाहिए। गुरु के लिए हृदयगत पवित्रता और निष्पादता का होना आवश्यक है, तभी उसके शब्दों का मूल्य होगा।

स्त्री, दलित एवं आम आदमी की शिक्षा– स्वामी विवेकानंद शिक्षा में मेकाले के 'छानने के सिद्धांत' के कट्टर विरोधी थे जिसके अनुसार उच्चवर्ग के चुनिंदा लोगों को ही शिक्षा दी जाए जहाँ से छनकर उसका प्रभाव नीचे तक पहुँचे। उन्होंने कहा कि ''भारत के सर्वनाश का मुख्य कारण देश के कुछ थोड़े से मुट्ठी भर लोगों में शिक्षा और बुद्धि का सीमित होना है। यदि हमें फिर से उठना है तो यह समस्त जनसमूह में शिक्षा के प्रसार से ही होगा।'' स्त्रियों, दलित एवं आम भारतीयों की निरक्षरता एवं जड़ता को देखकर उनकी आत्मा कराह उठी। उन्होंने कहा कि जब तक लाखों-करोड़ों लोग भूख और अज्ञान के अंधकार में रहते हैं मैं उस व्यक्ति को देशद्रोही समझता हूँ जिसे उनके खर्च पर शिक्षा मिली है और उनकी ओर तनिक ध्यान नहीं देता। समाज में दलितों की दुर्दशा ने उन्हें उद्वेलित कर दिया था। अस्पृश्यता एवं भेदभाव के कारण ही दक्षिण के हजारों पेरिया ईसाई बनते जा रहे थे– यह देख उन्होंने तथाकथित उच्चवर्गों को खूब खरी-खोटी सुनाई। उनके अनुसार दलितों, अछूतों में शिक्षा-सहानुभूति का स्पर्श ही राष्ट्र को अखण्ड रख पायेगा।

स्वामी विवेकानंद ने प्राचीन भारत में स्त्री-शिक्षा के उज्ज्वल आदर्शों की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। उनके अनुसार वेदों और उपनिषदों में प्राप्त गार्गी, मैत्रेयी आदि ब्रह्मवादिनियों के बरक्स पश्चिमी नारी की स्वतंत्रता कुछ भी नहीं है। उन्होंने कहा है, ''क्या वनों में स्थित हमारे पुरातन विश्वविद्यालयों में लड़के एवं लड़कियों की समानता से अधिक पूर्ण कुछ और हो सकता है। अपने संस्कृत नाटक पढ़ो, शकुन्तला की कहानी पढ़ो और देखो कि क्या टेनिसन की 'प्रिंसेज' कविता हमें कुछ सिखा सकती है।'' पर खेद है कि आज हम स्त्री-पुरुष में भेदभाव कर रहे हैं। उन्होंने स्पष्ट कहा कि स्त्रियों में शिक्षा का प्रसार किये बिना किसी राष्ट्र की उन्नति नहीं हो सकती। स्त्रियों के सम्मान के कारण ही अमरीका इतना आगे बढ़ सका है।

स्वामी विवेकानंद धर्मपरक शिक्षा के समर्थक थे। उनके अनुसार धर्मशिक्षा के अभाव में चरित्र-निर्माण संभव नहीं है। वर्तमाल काल में आज तक भारत में स्त्री-शिक्षा का जो प्रचार हुआ है उसमें धर्म को ही गौण बनाकर रखा गया है। सारे दोष इसी कारण उत्पन्न हुए हैं। धर्मशिक्षा के अतिरिक्त वे नारी समाज को विज्ञान-शिल्प, गृहकार्य, भोजन बनाने, शरीर-पालन एवं सिलाई जैसे आधुनिक विषय भी सिखाना चाहते थे। उनके अनुसार आज भारत को आवश्यकता है– वेदांतयुक्त पाश्चात्य विज्ञान की। ज्ञान-विज्ञान की प्रगति अमरीका में उन्होंने अपनी खुली आँखों से देखी थी इसीलिए वे भौतिक विज्ञान की अवहेलना नहीं करते। एक स्थान पर तो उन्होंने ''भारत के लिए वेदांत को भुलाने की आवश्यकता'' भी जताई है। उनका मानना था कि ''सबसे पहले युवकों को सबल बनाना चाहिए, धर्म तो बाद की चीज है। गीता के अध्ययन की तुलना में तुम फुटबॉल के द्वारा स्वर्ग के अधिक निकट पहुँचोगे। जब तुम्हारा शरीर तुम्हारे पैरों पर दृढ़ रूप में खड़ा होगा और तुम अपने को मनुष्य के रूप में अनुभव करोगे, तब तुम उपनिषदों और आत्मा की महत्ता को अधिक अच्छी तरह समझोगे।''

इस प्रकार स्वामी विवेकानंद ने शिक्षा में समन्वयात्मक दृष्टिकोण उपस्थित किया। उनके शिक्षा-दर्शन में प्रवृत्ति-निवृत्ति, व्यष्टि-समष्टि, तर्क-श्रद्धा, भावी-भूत, सामयिकता-सनातनता, पूर्व-पश्चिम आदि का अद्भुत मिश्रण हुआ है पर उसका मूल आधार है– भारतीय आत्मवाद और मूल लक्ष्य है– पराधीनता से मुक्ति/मुक्ति की यही कामना मनुष्यता की पहचान है।

–हिन्दी विभागाध्यक्ष

डॉ. बी.आर.ए. राजकीय महाविद्यालय, श्रीगंगानगर

स्वामी विवेकानन्द की सार्धशती (150 वाँ जन्म दिवस) पर विशेष

स्वामी विवेकानन्द की राष्ट्रीय शैक्षिक परिकल्पना

❑ बजरंग प्रसाद मजेजी

राष्ट्रीय चिन्तन : स्वामी विवेकानन्द विश्व की महान विभूतियों में एक स्वाभिमानी, महान देशभक्त, विचारक, युगदृष्टा, मानवप्रेमी, समाज सुधारक महान राष्ट्रसंत थे। भारत में स्वामी विवेकानन्द ने रूढ़िवादी विचारों, अन्धविश्वासों को छोड़ने एवं पराधीनता को त्यागने का आह्वान किया। उनके समाज सुधारों के वक्तव्यों ने न केवल भारत वरन् यूरोपीय देशों के अंधभक्तों की आँखें खोल दी। विदेशी सत्ताधारियों द्वारा भारत में जुल्म, शोषण अन्याय से दुःखी भारतवासियों में एवं राष्ट्र की जख्मी आत्मा, घायल प्राणों में राष्ट्रीय चेतना स्पंदित की। उनके अध्यात्म ज्ञान तथा आत्मशक्ति से भारतीयों में आत्मबल का संचार हुआ। उन्हें स्वामी रामकृष्ण परमहंस जैसे गुरु से निर्भीकता, आध्यात्मिकता, सद्चरित्रता, स्वदेशप्रेम का वरदान मिला, जिसके कारण उनके क्रांतिकारी विचार वर्तमान पीढ़ी के मार्गदर्शक हैं। उनकी ओजस्वी वाणी, तेजस्वी व्यक्तित्व, चारित्रिक दृढ़ता स्तुत्य एवं अविस्मरणीय है। वे सम्पूर्ण विश्व में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का वास्तविक स्वरूप देखने वाले थे। उनका कहना था कि– 'सीखो लेकिन अन्धानुकरण मत करो। नया और श्रेष्ठतर चीजों के लिये जिज्ञासा के लिये संघर्ष करो। ध्येय के प्रति पूर्ण संकल्पित व समर्पण रखो।' वे आत्मविश्वास के माध्यम से चरित्र निर्माण द्वारा मनुष्य निर्माण के पक्षधर थे। उन्होंने कहा कि– 'आदर्श के लिए जीओ। मदान्ध मत बनो, कहरवादी मत बनो और अंधविश्वास को त्याग कर कठिनाइयों का निर्भीकता से सामना करो। सोचो ! अगर दुनियाँ में कोई पाप है तो वह दुर्बलता है, इसे दूर करो। वास्तव में शक्ति धर्म से बड़ी है।' स्वामी विवेकानन्द आध्यात्मिकता के प्रबल समर्थक थे। वे कहते थे कि– 'ध्यान रखो यदि तुम आध्यात्मिकता को त्याग कर तथा इसे एक ओर रखकर पश्चिम की जड़वादपूर्ण सभ्यता के पीछे दौड़ोगे तो परिणाम यह होगा कि तीन पीढ़ियों में तुम मृत व्यक्ति बन जाओगे क्योंकि इससे राष्ट्र की रीढ़ टूट जायेगी। आजकल तुम संसार में जड़ के समान पड़े हो। तुमको बतलाया गया है कि तुम हीन हो, तुममें कोई शक्ति नहीं है। यह सुनकर वर्षों से अपने को हीन और निकम्मा समझने लगे हो। ऐसा ध्यान करते-करते तुम वैसा ही बन गये हो। उठो। जागो शक्तिशाली बनो।' उन्होंने कहा कि हमें जनता को केवल सकारात्मक विचार देना चाहिए, नकारात्मक विचार मनुष्य को कमजोर बनाते हैं।

शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण : 'नववेदान्त' में स्वामी विवेकानन्द ने लिखा है कि 'शिक्षा द्वारा मनुष्य का निर्माण किया जाता है। समस्त अध्ययनों का अन्तिम लक्ष्य मनुष्य का विकास करना है। जिस अध्ययन द्वारा मनुष्य की संकल्प शक्ति का प्रवाह संयमित होकर प्रभावोत्पादक बन सके, उसी का नाम शिक्षा है।' जो शिक्षा प्रणाली जीवन संघर्ष से जूझने की क्षमता प्रदान करने में सहायक नहीं हो, जो मनुष्य में नैतिक बल का, उसकी सेवावृद्धि का, उसमें सिंह के समान साहस का विकास नहीं करती वह 'शिक्षा' नाम के योग्य नहीं है। शिक्षाविदों को चाहिए कि वे आधुनिक विज्ञान की सहायता से विद्यार्थियों के ज्ञान को जगायें। उन्हें इतिहास, भूगोल, विज्ञान, गणित और साहित्य की सद्शिक्षा दें और इनके साथ-साथ धर्म एवं आध्यात्मिकता के महान सत्य को भी बताएँ। उन्होंने दर्शन में मानव प्रकृति के विभिन्न पहलुओं पर गम्भीर विचारों का सर्वांग चित्र प्रस्तुत कर शिक्षा के बौद्धिक एवं शारीरिक पहलुओं पर दृष्टिपात किया तथा दर्शन, ज्ञानशास्त्र, शिक्षा का पाठ्यक्रम, शिक्षा का माध्यम इत्यादि पर व्यापक दृष्टिकोण अपनाया। स्वामी विवेकानन्द का मानना था कि ''शिक्षा उस ज्ञान समुच्य का नाम नहीं है, जो शिक्षार्थी के मस्तिष्क में ठूँस कर भर दिया जाये, जो सारी जिन्दगी बिना पचाये सड़ता रहे। यह तो भावों-विचारों को आत्मसात् करने का वह माध्यम है, जिसमें जीवन निर्माण हो, मनुष्यत्त्व आवे, चरित्र-गठन हो, मानव की संकल्प शक्ति का प्रवाह संयमित होकर प्रभावोत्पादक बने। ऐसी शिक्षा वर्तमान के लिए ही नहीं हो अपितु भविष्य के लिए भी प्रासांगिक हो। वे चाहते थे कि देश के सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक ताने-बाने को प्रदूषित होने से बचाने के लिए हमें ऐसी शिक्षा प्रणाली विकसित करनी होगी जो चारित्रिक अस्मिता एवं चेतनता का उद्बोध करे। व्यवहार कुशल, सृजनशील, सुदृढ़ चरित्र का निर्माण करे और राष्ट्रहित में समर्पित हो। उनका कहना था कि– 'शिक्षा में मूल्यों का समावेश न हो तो वह शिक्षा अपूर्ण है। मूल्य व्यवस्था में नैतिक, सामाजिक, आध्यात्मिक, राष्ट्रीय मूल्य अनिवार्य रूप से सम्मिलित होना चाहिए।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शैक्षिक परिकल्पना : स्वामी विवेकानन्द ने हमारे देश की वर्तमान शिक्षा पद्धति पर कटाक्ष करते हुए कहा कि देश ने विज्ञान एवं तकनीक क्षेत्र में आश्चर्यजनक उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं। उद्योग एवं कृषि विज्ञान के प्रयोग से क्रान्ति तो आई है। परन्तु, दरिद्रता, क्षुधा, अशिक्षा, जातिवाद जैसी बुराईयाँ आज भी समाज में व्याप्त है। वर्तमान की आवश्यकता है कि हमारे देशवासी लोहे के पट्ठे, फौलाद की नाड़ियाँ और प्रबल मनशक्ति वाले नागरिक बनें, जो आत्मबल एवं मूल्यपरक नींव की आधारशिला पर निर्भय होकर अत्याचार, उत्पीड़न, परपीड़ानुभव के विरुद्ध-प्रतिरोध के सिद्धान्त का अनुगमन कर सकें, तभी सृजनात्मक कार्यकलापों द्वारा समाज में परिवर्तन

लाया जा सकता है। हम मानव निर्माण चाहते हैं, हम मनुष्य निर्माण करने वाले सिद्धान्त चाहते हैं। हम मानव की सर्वांगीण निर्माण की शिक्षा चाहते हैं। स्वामी विवेकानन्द– ''शिक्षा के साथ नैतिक एवं धार्मिक विचारों का सामंजस्य, विश्वबन्धुत्व, की भावना, भारतीय संस्कृति के प्रति उदारभाव की मनोवृत्ति तथा ऐसे समाज की स्थापना करने में चिंतनशील थे, जिसमें मनुष्य अपनी सम्पूर्ण योग्यताओं, क्षमताओं और विचारों को विकसित करे।'' देशवासियों से उनका कहना था कि– ''चिंतन-मनन कर राष्ट्र चेतना जागृत करके, आध्यात्मिकता का आधार न छोड़ें। उन्होंने शिक्षा को धर्म आदर्श, चरित्र, सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों की नींव पर आधारित करने पर बल दिया।

स्वामी विवेकानन्द ने देश की वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के बारे में विचार व्यक्त करते हुए कहा कि यह न तो विशाल जनसंख्या तक पहुँच पाई है और न ही मूल्यपरक बन पाई है तथा न ही भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को समाहित कर पाई है। शिक्षा का माध्यम, हीनभावना, मानसिक दासता, पारदर्शिता का अभाव, कुप्रबन्धन, योग्य एवं प्रतिबद्ध शिक्षकों का अभाव, अनुशासनहीनता आदि अनेक चुनौतियाँ शिक्षा को जनकल्याण से दूर करती हैं। वर्तमान में विद्यालय सापेक्ष शिक्षा नहीं दे पा रहे हैं, जो शिक्षा दी जा रही है उसको मानव बनाने की शिक्षा नहीं कही जा सकती है। निश्चित रूप से नकारात्मक शिक्षा दी जा रही है। उनका मानना था कि केवल पुस्तकीय ज्ञान शिक्षा नहीं है। ऐसी शिक्षा बालकों को देनी होगी कि वे अपने हाथ, पैर, नाक, कान, आँखों का ठीक प्रकार उपयोग कर सकें। स्वामीजी ने अभिभावकों पर कटाक्ष करते हुए कहा कि– जो अभिभावक स्वयं अशिक्षित हैं, वे अपने बालक को मूर्ख, बेवकूफ, नालायक कहकर पढ़ने हेतु दबाव बनाते हैं, ऐसे बालक भविष्य में उन्नति नहीं करते। इसके विपरीत **अभिभावक बालक को स्नेह से शिक्षा का महत्व बताते हुए अध्ययन की प्रेरणा देंगे तो ऐसे बालक भविष्य में उन्नति करते हैं।** युवाओं से उनका सम्बोधन था कि **''ध्येय के प्रति पूर्ण संकल्प व समर्पण रखो।''** भारत का राष्ट्रीय आदर्श त्याग और सेवा की भावना है। उनका मानना था कि– ''पहाड़ मुहम्मद के पास नहीं जायेगा– मुहम्मद को पहाड़ के पास जाना होगा। इसी प्रकार आज की आवश्यकता है कि शिक्षा बालक के पास खेत, खलिहान, खदान, कारखाना जहाँ भी बालक हो वहाँ जाए। मात्र घोषणाओं से शिक्षा की उन्नति संभव नहीं है। शिक्षा में परिवर्तन लाने का संदेश देते हुए स्वामी विवेकानन्द ने कहा कि– ''वर्तमान शिक्षा निषेधात्मक एवं निर्जीव है, वस्तुतः शिक्षा में चरित्र निर्माण के विचारों का सम्मिश्रण हो। शिक्षा से लौकिक परमार्थ हमारे हाथों में हो तथा हमारी आवश्यकता के अनुरूप हो। शिक्षा मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करने वाली हो।

–से.नि. प्रधानाध्यापक
सांपला, अजमेर

शोकाभिव्यक्ति

... उन मासूमों की याद में !

अमेरिका के कनेक्टिकट राज्य के न्यू टाउन स्थित सैंडी'क एलीमेन्टरी स्कूल में 14 दिसम्बर 2012 के दिन एक सिरफिरे ने अंधाधुंध गोलीबारी कर 20 नन्हें मुन्नों की जान ले ली। उपवन से बीस फूल असमय मुरझा गए। सुनकर दिल रोने को आता है। एक हूक सी उठती है। ऐसा भी क्या सिरफिरापन। पाँच से दस वर्ष की आयु के थे ये बालक। स्कूलें ही सुरक्षित नहीं हैं तो फिर कहाँ होगी सुरक्षा। बच्चे तो भगवान के रूप होते हैं। यदि हम स्कूलों में पढ़ रहे बच्चों की सुरक्षा भी नहीं कर सकते तो हमारे सुरक्षा सम्बन्धी दावे बेकार हैं। बीस बच्चों के अलावा विद्यालय स्टाफ के छः व्यक्ति और मारे गए। इस प्रकार कुल 26 जानें गईं। दो शिक्षक बच्चों के आगे ढाल बन खड़ी हो गईं और बच्चों से पहले स्वयं हत्यारे की शिकार बनीं। क्या बीता होगा उनके दिल पर। सोचकर ही कलेजा बाहर को आता है। दुनियाभर में इस हत्याकांड की कड़ी निन्दा हुई। अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा की रुलाई फूट पड़ी जो स्वाभाविक है। जिसने भी सुना-जाना रुह काँप कर रह गई।

इस खौफनाक मंजर की भेंट चढ़े बच्चों एवं शिक्षकों को श्रद्धांजलि लिखते हाथ काँप रहा है। कुछ भी लिख दो, कितना ही कह दो, महज औपचारिकता ही तो होगी। औपचारिकताओं से आगे बढ़कर दुनिया में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने के लिए कारगर कदम उठाने होंगे। स्कूलों और बच्चों को भयमुक्त और सुरक्षित किए बिना समाज, राष्ट्र और विश्व का भला होने वाला नहीं है।

अमेरिका के सैंडी'क स्कूल में मारे गए बच्चों एवं शिक्षकों के प्रति अश्रुपूरित सम्मान एवं श्रद्धासुमन परमात्मा के समक्ष इस विनम्र प्रार्थना के साथ कि हे प्रभु ! विश्व के किसी भी कोने में फिर से ऐसी घटना देखने-सुनने को न आए। शिविरा उन अदेखे और अमिले बच्चों की मोहिनी मूरत और निर्दोष सूरत एवं उनमें निहित भावी सम्भावनाओं की कल्पना कर तहेदिल दुःखी है। हे परमेश्वर ! उन्हें अपनी गोद में चिर विश्राम व शान्ति प्रदान करना।

–वरिष्ठ सम्पादक (शिविरा)

शरण में आए हम हैं तुम्हारे

शरण में आए हम हैं तुम्हारे
दया करो हे ! दयालु भगवन्
जो तुम हो स्वामी तो हम हैं सेवक
जो तुम पिता हो तो हम हैं बालक
सम्भालो बिगड़ी दशा हमारी
दया करो .....

प्रदान कर दो महान शक्ति
भरो हमारे में ज्ञान भक्ति
तभी कहलाओगे न्यायकारी दया करो.....

युगपुरुष : स्वामी विवेकानंद

❑ रूपनारायण काबरा

जब भारत में वैदिक संस्कृति का इतना पतन हो रहा था कि लोग अपने ही देश में अपने को 'साहब' कहलाने में गौरव अनुभव करने लगे थे जबकि विदेशों में उन्हें 'इंडियन डॉग' कहा जाता था। गुलामी के उस काल में जब हमारा धर्म, हमारी संस्कृति, हमारी सभ्यता, सभी से हम विमुख होते जा रहे थे और अपने को भारतीय या हिन्दू कहने-कहलाने में शर्म महसूस करते थे तब सारे राष्ट्र का आत्मविश्वास हिल उठा था। विदेशी परिधान, विदेशी भाषा, विदेशी पदवी धारण कर हम समाज में अपने को प्रतिष्ठित मानते थे। पतन की पराकाष्ठा के इस काल में स्वामी विवेकानंद का अवतरण हुआ जो एक विद्युत की गति और चकाचौंध करती रोशनी के साथ आये और हिन्दू-हिन्दी हिन्दुस्तान का नाम विश्व में ऊँचा किया। भारतीयों में अपने धर्म एवं अपनी सभ्यता के प्रति गौरव जगाया। भारत की आत्मा को झकझोर कर पुनः 'उत्तिष्ठत जाग्रत' का मंत्र दिया, और कहा ''भारतवासियों जागो, आसमान के देवताओं का ध्यान छोड़ो। हमारा अपना समाज हमारा देवता है, वही सब ओर व्याप्त है। समझ लो कि सब देवता सो रहे हैं, इन देवताओं के पीछे न दौड़कर उस देवता की, उस विराट पुरुष की, जिसे हम अपने चारों ओर देख रहे हैं, क्यों न उसकी पूजा करें? जब हम इसकी पूजा कर लेंगे तब हम अन्य सब देवताओं की पूजा करने के योग्य होंगे।''

विवेकानंद श्री रामकृष्ण परमहंस के पास गये थे ईश्वरदर्शन की उत्कट अभिलाषा लेकर; पर उन्होंने भगवान का नहीं 'राष्ट्र देव' का साक्षात्कार कराया, जो भूखा, नंगा, पराधीन एवं हतप्रभ था और जिसे आवश्यकता थी एक युगपुरुष के सहारे की, जो उसे रसातल में जाने से रोक सके, जो उसके सोये मान को जगा सके। श्री रामकृष्ण की प्रेरणा से विवेकानन्द को सत्य का साक्षात्कार हुआ, यथार्थ का बोध हुआ और वे अलख जगाने का संकल्प लेकर उठ खड़े हुए और भारत की गिरती हुई अस्मिता को बचाने का प्रयास प्रारंभ किया। वे देश को जगाने समग्र राष्ट्र में घूमे, यही नहीं विदेशों में भी भारत की सनातन संस्कृति का झण्डा गाड़ आये। शिकागो में आयोजित विश्वधर्म सम्मेलन में उन्होंने सनातन वैदिक धर्म की श्रेष्ठता प्रमाणित कर सभी को चमत्कृत कर दिया और अनेकों ने स्वामी जी का शिष्यत्व ग्रहण कर लिया।

अंग्रेजों से भयाक्रान्त भारतीयों को उन्होंने अपनी ओजस्वी वाणी में कहा– ''संसार में यदि कुछ पाप है तो वह है भय। कोई भी कार्य जो तुम्हारे भीतर की शक्ति को जगा दे, वही पुण्य है और जो तुम्हारे शरीर और मन को दुर्बल कर दे वही पाप है। शक्ति और साहस ही जीवन है और दुर्बलता ही मृत्यु है।'' जनजागरण करते हुए उन्होंने स्थान-स्थान पर जगा-जगाकर कहा, ''दुर्बल मस्तिष्क कुछ नहीं कर सकता, उसे हमें सबल बनाना होगा। धर्म बाद में आयेगा। संकीर्णता ही मृत्यु है। और सम्प्रसारण ही जीवन है। यदि तुम्हें जीवित रहना है तो संकीर्ण घेरा छोड़ना होगा। विराट को, समष्टि को पहचानना होगा, स्वीकारना होगा।'' स्वामी विवेकानंद संत थे, संन्यासी थे, पर वे पारिभाषिक संन्यासी नहीं थे, पारम्परिक सन्त नहीं थे। उनकी तपस्या का उद्देश्य था देश को जगाना और जगाकर माँ को मुक्त कराना– विदेशी सत्ता से, विदेशी मानसिकता से।

उन्हें अपनी क्षमता पर इतना विश्वास था, अपने पुनीत लक्ष्य में इतनी निष्ठा और कर्म में इतनी आस्था कि वे कहते थे, मुझे कुछ स्त्री और पुरुष मिल जाएँ जो हृदय से पवित्र हों और वृत्ति से निःस्वार्थ तो निःसन्देह मैं इस संसार को हिला दूँगा।''

भारतवासियों को सतर्क करते हुए उन्होंने कहा, ''हे भारत, तुम्हारे लिए सबसे भयंकर खतरा है पश्चिम के अन्धानुकरण का। इसका जादू तुम्हारे ऊपर इतनी बुरी तरह सवार होता जा रहा है कि क्या अच्छा है और क्या बुरा, इसका निर्णय भी अब तर्क, बुद्धि तथा विवेक से न करके पाश्चात्य अभिमत से करने लगे हो। वे जो अच्छा कहें वहीं अच्छा और जो बुरा कहें वही बुरा, इस मानसिकता से बढ़कर मूर्खता और क्या होगी?''

वे पाश्चात्य संस्कृति के भारतीय प्रत्यारोपण के विरुद्ध तो थे पर संकीर्ण नहीं थे, दकियानूसी नहीं थे। वे कहते थे, ''दूसरों से सीखो अवश्य पर अपने स्वत्व को भूलकर नहीं। औरों के पास जो कुछ अच्छा है अवश्य सीखो जैसे कि स्वच्छता, श्रमनिष्ठा एवं राष्ट्र प्रेम इत्यादि, किन्तु इस प्रकार सीखो कि वह तुम्हारी प्रकृति के अनुकूल एवं अनुरूप हो। स्वयं को भारतीय मुख्य धारा से पृथक मत होने दो। औरों की संस्कृति, रहन-सहन, वेशभूषा और रीतिरिवाज से ईर्ष्या कर दुःखी मत बनो। तुम्हारी स्वयं की संस्कृति महान है और तुम्हारे अपने सामाजिक पर्यावरण में कोई दोष, विकृति या विसंगति आ गई हो तो उसे सुधारो, न कि दूसरों की अन्धी नकल करो।''

उन्हें स्वयं के भारतीय होने का सच्चा गर्व एवं गौरव था। विदेशों में गर्व से मस्तक उठाकर वे कहते थे, ''आई एम फ्रॉम इंडिया व्हेअर द गंगा फ्लोज एण्ड द हिमालया कीप्स इट्स हेड 'हाई' (I am from India, where the Ganga flows and the Himalaya keeps its head high.) वे कहते थे, भारत की मिट्टी मेरा स्वर्ग है। भारत के समाज में मेरा बचपन का झूला, यौवन की फुलवारी तथा बुढ़ापे की काशी है।''

हिन्दू जाति में फैल रहे पाखण्ड, संकीर्णता और मिथ्याचरण से वे दुःखी थे। वे कहते थे कि हमें अपने अतीत को नये सिरे से पहचानना होगा, उसे परिष्कृत भी करना होगा, हमारे भविष्य को भी गौरवपूर्ण अतीत के ढाँचे में ढालना होगा।

वे कहते थे– ''यद्यपि मैं हिन्दू जाति का एक नगण्य घटक हूँ, तथापि मुझे अपनी जाति पर गर्व है। मैं स्वयं को हिन्दू कहने में गर्व करता हूँ। तुम ऋषियों की सन्तान हो। इस देश का वासी कहलाने में मैं अपना गौरव मानता हूँ।''

वे विद्वान थे, वेदवेत्ता थे, ज्ञानी थे, दार्शनिक थे लेकिन अपने पत्रों में उन्होंने लिखा है– ''मैं तत्वजिज्ञासु नहीं, मैं दार्शनिक नहीं, मैं साधु नहीं, मैं गरीब हूँ, गरीबों से ही प्यार करता हूँ। यदि मुझे लगे कि मेरे नर्क में जाने से किसी दुःखी आत्मा को शान्ति मिलती है तो मैं वहाँ सौ बार जाऊँगा।''

अंग्रेजों तथा अंग्रेज पादरियों के प्रति उनका जबरदस्त आक्रोश था। अंग्रेजों को चेतावनी देते हुए उन्होंने कहा था– ''आप लोगों के मन में आये सो करिए पर मैं बता देना चाहता हूँ कि यदि अंग्रेज पादरी हमारी आलोचना करते हैं, उन्हें यह नहीं भूलना है कि यदि सम्पूर्ण भारत खड़ा हो जाये और हिन्द महोदधि की तलहटी की समस्त कीचड़ को उठाकर पाश्चात्य देशों के मुँह पर फेंक दें, तो यह उस दुर्व्यवहार का लक्षांश भी नहीं होगा जो तुम हमारे प्रति कर रहे हो।'' उस तेजस्वी महापुरुष की तेजोमय वाणी में सार्वकालिक और सार्वभौमिक प्रेरणा का सन्देश है।

–ए-438, किशोर कुटीर, वैशाली नगर, जयपुर

स्वामी विवेकानन्द जी की दृष्टि में भारतीय नारी

❑ साँवलाराम नामा

''कर्म के राही कर्म किये जा,
राह के शोले भस्म किये जा।
अरे होगा वही जो तू चाहेगा,
हौंसले अपने बुलंद किये जा॥''

देश, समाज के उत्थान व पतन के पदचिह्न नारी के इर्द-गिर्द घूमा करते हैं। वह जननी ही नहीं, बच्चों की सर्वप्रथम गुरु भी है। नैतिकता सम्पन्न नारी ही समाज, राष्ट्र का निर्माण कर इस धरती को स्वर्गागरीयसी बना सकती है। नारी शक्ति ही संसार संचालिता है।

अतः भारतीय संस्कृति में नारी का स्थान सबसे उत्कृष्ट माना जाता है, क्योंकि वह सृष्टि की सृजनकर्ता है, पालनकर्ता है। श्रेष्ठ समाज के निर्माण में उसकी अहम् भूमिका है। इसी भावना के अनुरूप स्वामी विवेकानन्द जी ने स्त्री और पुरुष समाज रूपी पक्षी के दो सुदृढ़ पंख हैं। उनका मानना था कि कोई भी पक्षी एक पंख से नहीं उड़ सकता। उनकी इस धारणा से किसी भी समाज-राष्ट्र के गौरव और उत्कर्ष में नारी का योगदान स्वतः स्पष्ट हो जाता है। पक्षी के लिए दोनों पंख समान महत्वशील हैं। उसके लिए दोनों पंखों में न कोई छोटा होता है न बड़ा। इसी प्रकार स्त्री पुरुष दोनों के समान योगदान से ही किसी भी घर-परिवार, समाज या देश का उत्थान होता है। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति में सभी प्रकार की परम्पराओं और अनुष्ठानों में स्त्री की उपस्थिति अनिवार्य मानी गई है जबकि अन्य संस्कृतियों में नारी की स्थिति भारतीय नारी से भिन्न मानी गई है।

अन्य संस्कृतियों से अंतर उन्होंने सेमेटिक नारियों की भारतीय नारियों से तुलना करते हुए कहा है– ''सेमेटिक लोग स्त्रियों की उपस्थिति को उपासना में घोर विघ्न स्वरूप मानते हैं। उनके अनुसार स्त्रियों को किसी प्रकार के धर्म-कर्म का अधिकार नहीं है। जबकि 'आर्यों' के अनुसार तो सहधर्मिणी के बिना कोई धार्मिक कार्य नहीं कर सकता है' भारतीय स्त्रियों की महत्ता को प्रदर्शित करते हुए स्वामी विवेकानन्द ने अपने कथन की पुष्टि में आगे कहा है– ''गार्हपत्य अग्नि में आहुति प्रदान करने की जो है वैदिक प्रक्रिया है उसके अनुष्ठान में सहधर्मिणी की उपस्थिति अनिवार्य है।''

बौद्धकालीन स्त्रियों की चर्चा करते हुए स्वामी जी ने स्वीकार किया कि बौद्ध युग में स्त्रियों को पुरुषों की अपेक्षा निम्न अधिकार दिये गये थे क्योंकि उस युग में मठ युग प्रथा अर्थात् धर्म संघ में रहने की प्रथा का प्रवर्तन था जिसमें मठ प्रथा के नियमों के अनुसार मठ स्वामिनियाँ कुछ निर्दिष्ट मठ अध्यक्षों की अनुमति के बिना किसी महत्वपूर्ण कार्य में हाथ नहीं डाल सकती थीं। जिसके अन्ततोगत्वा परिणाम खेदजनक ही रहे। अतः यह अवस्था चिरकाल तक नहीं रह सकी। सनातन धर्म में भी बौद्धकाल की भाँति संन्यास धर्म है और यह धर्म वेदों द्वारा प्रतिपादित भी है परन्तु यहाँ स्त्री-पुरुष का कोई भेद-भाव नहीं किया गया है। उदाहरणरूप में स्वामीजी ने बताया कि– ''विदेहराज जनक की राजसभा में धर्म के गूढ़ तत्वों पर महर्षि याज्ञवल्क्य के वाद-विवाद में ब्रह्मचारिणी गार्गी ने पुरुषों के समान ही प्रधान रूप से भाग लिया और कहा– मेरे दो प्रश्न मानों कुशल धनुर्धारी के हाथ में दो तीक्ष्ण बाण हैं।'' इस पर कोई विरोध नहीं हुआ।

नारी शिक्षा– नारी शिक्षा के क्षेत्र में भी स्वामी विवेकानन्द कोई भेदभाव नहीं मानते थे। एक बार जब उनसे स्त्रियों की शिक्षा के सम्बन्ध में चर्चा की गई तब उन्होंने कहा था– ''...प्राचीन गुरुकुलों में बालक-बालिकाएँ समान रूप से शिक्षा ग्रहण करते थे। जैसे कि आज भी हमारे देश में सभी विद्यालयों, महाविद्यालयों में सहशिक्षा का संचालन हो रहा है परिणाम स्त्री शिक्षा ने विभिन्न क्षेत्रों में झण्डे गाड़े हैं। इससे अधिक साम्य भाव समान शिक्षा, सार्वजनिक शिक्षा का अधिकार और बालिकाओं, किशोरियों को शिक्षा में कई निःशुल्क सुविधाएँ देकर शिक्षा प्राप्ति में प्रेरणा, प्रोत्साहन दिया जा रहा है। इससे नारी शिक्षा वृद्धि का ग्राफ उत्तरोत्तर ऊपर बढ़ता जा रहा है। नारियों की शिक्षा के बारे में उन्होंने यह भी कहा– ''हम चाहते हैं कि नारियों को ऐसी शिक्षा दी जाए जिससे वे निर्भय होकर भारत के प्रति अपने कर्तव्य को भलीभाँति निभा सकें।'' उन्होंने आगे भी कहा– ''भारत की नारियाँ पवित्र और त्यागमूर्ति हैं। क्योंकि उनके पास वह सहज शक्ति और बल है जो सर्वशक्तिमान परमात्मा के चरणों में सर्वार्पण करने से प्राप्त होती है।''

विदेश भ्रमण काल खण्ड में जब स्वामी जी से स्त्री-पुरुष के भेद सम्बन्ध में चर्चा की गई तब उन्होंने कहा था कि– ''पाश्चात्य समालोचना के आकस्मित बहाव से प्रभावित होकर और पाश्चात्य नारियों की तुलना में अपने देश की नारियों की अवस्था भिन्न देखकर यह नहीं मान बैठे कि हमारे यहाँ की नारियों की दशा हीन है। विगत कई सदियों से भारत में ऐसी परिस्थितियों का निर्माण होता रहा है जिसमें हम नारियों का विशेष संरक्षण करने को बाध्य हुए हैं। यही तथ्य हमारे प्रचलित सामाजिक रीति रिवाजों के मूल में है, न कि स्त्री की हीनता का सिद्धांत।''

इससे और भी आगे बढ़ते हुए उन्होंने कहा– ''नारियों के सम्बन्ध में हमारा हस्तक्षेप करने का अधिकार उनकी शिक्षा देने तक ही सीमित है। क्योंकि 'हमारी स्त्रियाँ अपनी समस्याओं को हल करने में संसार के किसी भी भाग की स्त्रियों के पीछे नहीं हैं।'' उन्होंने बताया– ''राम और सीता भारतवर्ष के आदर्श

हैं। सभी बच्चे विशेषकर लड़कियाँ सीता की पूजा करती हैं। भारतीय नारी का सर्वोच्च है सीता, पवित्र, समर्पित और दुःखिनी सीता। इन चरित्रों के अध्ययन से पाश्चात्य तथा भारत की आदर्श सम्बन्धी धारा का पार्थक्य स्पष्ट हो जाता है। इस जाति के लिए सीता सहनशीलता की प्रतिमूर्ति है। पश्चिम कहता है– 'कर्म करो और अपने कर्मों के माध्यम से अपनी शक्ति का प्रदर्शन करो।' भारत कहता है– 'सहो और सहनशीलता द्वारा अपनी शक्ति प्रकट करो।'

भगिनी निवेदिता को उनके लिखे पत्र 29 जुलाई 1897 से भी कुछ ऐसा ही प्रकट होता है। 'मैं तुमसे यह स्पष्ट कह देना चाहता हूँ कि मेरा यह दृढ़ निश्चय है और विश्वास है कि तुम्हारे लिए भारत में कार्य करने का एक महान् भविष्य है। पुरुष कार्यकर्ता नहीं अपितु महिला कार्यकर्त्री की आवश्यकता है, एक सिंहनी की आवश्यकता है, जो भारतीयों के लिए विशेषकर महिलाओं के लिए कार्य कर सकें।' स्त्रियों के लिए इस प्रकार के उत्कृष्ट, सौम्य और सृजनात्मक विचार देखकर स्वामी जी से नारियों के लिए उनके संदेश के विषय में पूछा गया तब उन्होंने कहा– ''वही जो पुरुषों के लिए है। भारत और भारतीय धर्म के प्रति विश्वास और श्रद्धा रखो, तेजस्विनी, ओजस्वनी बनो, हृदयपट में उत्साह उमंग, आशा, उत्सुकता भरो। भारत में जन्म लेने के कारण लज्जित न हों अपितु उसमें गौरव, पवित्रता, शौर्य का अनुभव करो और सदा याद रखो। यद्यपि हमें दूसरे देशों से कुछ लेना अवश्य पर हमारे पास दुनिया को देने के लिए दूसरों की अपेक्षा सहस्त्र गुना अधिक है।'' नारी की विशिष्ठता के बारे में कहा है– ''काव्य और प्रेम दोनों नारी हृदय की सम्पत्ति हैं। पुरुष विजय का भूखा होता है और नारी समर्पण की।

जैसा पिता वैसा पुत्र

हमारे प्रिय नेताजी सुभाषचंद्र बोस बचपन से ही अत्यंत कुशाग्र बुद्धि और मेधावी थे। उनके वकील पिता की हार्दिक तमन्ना थी कि वे एक आई.सी.एस. अधिकारी बनें। पिता की इच्छा को परिपूर्ण करने के लिए सुभाष इंग्लैण्ड शिक्षा प्राप्त करने को गए और वहाँ पर कठोर परिश्रम और लगन से अपने लक्ष्य को सदा आगे रखकर अध्ययन, स्वाध्याय किया। प्रतिफल आई.सी.एस. की परीक्षा उत्तीर्ण की, लेकिन उनका मन-मस्तिष्क, दिल अंग्रेजों की गुलामी का विरोधी था। उनके हृदयपटल में राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रसेवा की प्रबल भावना रग-रग और रोम-रोम में रम गई थी। एक तरफ तो आई.सी.एस. का उच्च एवम् गौरवपूर्ण पद तथा दूसरी ओर राष्ट्रसेवा का कठिन त्यागमय पथ था। उनके मन में हलचल और अंतर्द्वंद जोर का चल रहा था क्योंकि एक पथ फूलों सजा तो दूसरा पथ काँटों भरा।

अंततः राष्ट्रसेवा का प्रबल भाव जीत गया और उन्होंने अपना त्यागपत्र अंग्रेज सरकार को सौंप दिया। उनके पिता के मित्र सर विलियम ड्यूक ने उनका स्तीफा अपने पास रखकर उनके पिता को यह सूचना भेजी।

पिता ने उत्तर भेजा– ''मैं अपने पुत्र के इस कार्य को राष्ट्र के लिए गौरव और गर्व की पवित्र दृष्टि से देखता हूँ। मैंने उसकी इस शर्त को स्वीकार करके ही विलायत भेजा था।'' विलियम ड्यूक इस उत्तर से हैरान हो गए। अब उन्होंने सुभाष को बुलाकर पूछा– ''नौजवान ! बहादुर !! तुम अपने भोजन का अब क्या प्रबंध करोगे? जरा-सा सोचो?''

सुभाष ने उत्तर दिया तत्काल– ''मैंने बचपन से दो आने रोज से गुजारा करने की आदत डाली है और दो आने तो मैं पैदा कर ही लूँगा।'' सर विलियम अवाक् होकर सुभाष का मुँह ताकने लगे।''

सुभाषचंद्र को उनके पिता ने पत्र लिखा– ''तुमने देश सेवा संकल्प लिया है, ईश्वर तुम्हें ऐसी शक्ति दे, जिससे तुम्हें सफलता मिले।'' सुभाष ने प्रत्युत्तर में लिखा– ''पिताजी ! आज मुझे आप पर जितना गर्व हो रहा है, इससे पहले कभी नहीं हुआ।''

राष्ट्रसेवा की आशा, उमंग, जोश रखने वाले हर अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों में इसे निभाते हैं और परिवार का सहयोग व समर्थन इस जोश को दोगुना कर देता है।

जब हम महापुरुषों के महान् कार्य-कलापों के बारे में पढ़ते या सुनते हैं, तब बालक, माता-पिता, शिक्षकों के मन-मस्तिष्क में उन्हीं जैसा कुछ विशेष काम करने की ललक, कसक, लालसा हिलोरें लेती हैं। अतः हम अपने देश के नौनिहालों इसी प्रकार की प्रेरणादायक शिक्षा व्यवस्था देने का संकल्प करें।

–सदर बाजार रोड, निकट बड़ा चौहरा, भीनमाल, जालौर-343029

मेधावी बालक

बंगाल के वर्धमान शहर का एक बालक एन्ट्रेंस की अंग्रेजी विषय की परीक्षा देने कलकत्ता पहुँचा। अंग्रेज परीक्षक ने उससे पूछा– "स्कूल मास्टर और स्टेशन मास्टर में क्या अन्तर है?"

विद्यार्थी ने उत्तर दिया– "द स्कूल मास्टर ट्रेन्स द माइन्ड, व्हाइल द स्टेशन मास्टर माइन्ड्स द ट्रेन्स।"

(अर्थात् एक शिक्षक मस्तिष्क को संचालित करता है, जबकि स्टेशन मास्टर गाड़ियों को)

परीक्षक बालक के इस उत्तर से काफी प्रभावित हुआ और उसे सर्वोच्च अंक दिये।

यही बालक आगे चलकर "क्रान्तिकारी सुभाषचन्द्र बोस" के नाम से विख्यात हुआ।

–डॉ. श्याम मनोहर व्यास, पूर्व शिक्षा उप निदेशक
15, पंचवटी, उदयपुर (राज.)

गीत मंगलमय हो - मनमीत मंगलमय हो।
प्रीत मंगलमय हो - रीत मंगलमय हो।
प्रगति मंगलमय हो - सुमति मंगलमय हो।
ज्ञान मंगलमय हो - विज्ञान मंगलमय हो।
ध्यान मंगलमय हो - परिणाम मंगलमय हो।
वसती मंगलमय हो - वसन्त मंगलमय हो।
पूजा मंगलमय हो - पूज्य मंगलमय हो।
मान मंगलमय हो - सम्मान मंगलमय हो।
नेह मंगलमय हो - स्नेह मंगलमय हो।
प्रातः मंगलमय हो - सुप्रभात मंगलमय हो।
नववर्ष मंगलमय हो - हर वर्ष मंगलमय हो।
जब तक हो हर वर्ष मंगलमय हो।
हर्ष मंगलमय हो - नूतन वर्ष मंगलमय हो।

–डॉ. एम.पी. शास्त्री

'हमारी महत्वाकांक्षाएँ बड़ी-बड़ी हैं। हमारी प्रतिबद्धता बहुत गहरी है। हमारे प्रयास इनसे भी बड़े हों।' रिलायंस के लिए यही मेरा सपना है। भारत के लिए भी यही मेरा दर्शन है।

–धीरू भाई अम्बानी

'उत्पादकता पथ के हम राही, नये वर्ष का करते वन्दन।/सब हो सुखी और जन-जन का खुशहाली में बीते जीवन।/नये सृजन की ऊर्जा भरकर निज तन-मन में,/सर्वोत्तम से करे राष्ट्र अपने का अर्चन।'

'अभिनन्दन हो नये वर्ष का, हममें गुणवत्ता प्रेम पगे।/सुख-सौरभ से महके, भारत सर्वोत्तम का भाव जगे॥ **–रमेश मिश्र**

''समय की बहती धारा है,
समय ने किसे निहारा है,
समय पर चूका जो इंसान,
हमेशा ही वो हारा है।''
भूत को भूलों, वर्तमान को साधो,
अपने आपको अतीत के खूंटे में मत बाँधो,
भविष्य की सोच, नया सृजन करो,
रूढ़िगत परम्पराओं को सिर पर मत लादो॥
मत बनो, तुम लकीर के फकीर,
तुम हो अनन्त शक्ति के धनी वीर,
आदमी भेड़ नहीं शक्ति का प्रतीक है, शेर है,
तुम बदल सकते हो लाखों की तकदीर॥

इस नववर्ष की बेला पर अतीत से सीखना होगा। वर्तमान का सदुपयोग करना होगा तथा भविष्य के लिए आशान्वित होना होगा।

नया साल - नये सपने - नये संकल्प

❑ अभयकुमार जैन

● एक साल बीत गया - फिर नया साल आया। ● जरा सोचिए मन में क्या खोया क्या पाया? ● क्या मन में शांति रही और हृदय में प्रेम रहा? ● क्या हाथ काम में लगे रहे और मन प्रभु से जुड़ा रहा? ● क्या रोते घुटते ही बिताया या हिम्मत से जीवन को जीया? ● क्या कुछ साहस दिखाया आपने? नया कुछ करके दिखाया? ● आइये प्रार्थना करे प्रभु से, नया वर्ष बहुत शुभ हो। ● सब तरह से आगे बढ़ें, जीवन गौरव मय हो।

प्रो. कविवर अजहर हाशमी ने नववर्ष के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखा है– ''समय के पृष्ठ पर भविष्य का आलेख है- नववर्ष। इसलिए हमें संकल्प की स्याही और कर्म की कलम से समय के पृष्ठ पर सृजन की इबारत लिखना चाहिए। मुँह से निकली हुई बात और हाथ से निकला हुआ समय वापस नहीं आता। अतः उक्ति और युक्ति समय के तराजू पर संतुलित होना चाहिए। वास्तविकता तो यह है कि आँख में भविष्यरूपी सपना होता है।

निःसंदेह नववर्ष का स्वागत उत्साह व उमंगपूर्वक करे, लेकिन अनर्गल व्यय, ऊटपटांग संवाद ओर मदिरापान से बचना चाहिए। आजकल होता यह है कि नववर्ष का स्वागत पाखण्ड की पेढ़ी पर बैठकर किया जाता है, जहाँ विकारों की जय-जयकार होती है व संस्कारों का तिरस्कार होता है। ऐसा कृत्य अशोभनीय है, अनुचित है और अव्यावहारिक है, क्योंकि वर्तमान के द्वार पर नववर्ष भविष्य की दस्तक होता है। इस दस्तक को पहचानने के लिए होश की जरूरत होती है। शराब के नशे में बेहोश आदमी न तो नववर्ष पर भविष्य की दस्तक सुन पाता है और न समय को पहचान पाता है। इसलिए आवश्यक है कि हम नववर्ष के संदर्भ में उज्ज्वल भविष्य के सपने तो देखें लेकिन उन सपनों को साकार करने के लिए दृढ़संकल्प के साथ सतत पुरुषार्थ भी करें।

नववर्ष में हम दृढ़ संकल्प के साथ सत्कर्म करें। अपने पुरुषार्थ से प्रकृति और पर्यावरण की पवित्रता को बनाए रखने का समर्पित भावना से प्राणवृत अभियान चलाएँ। सुदृढ़ संकल्प, सकारात्मक सोच और सतत सत्कर्म के साथ समय का सदुपयोग करने वाला अपना अभीष्ट प्राप्त कर लेता है। हम यह संकल्प करें कि अमुक विकार छोड़ने के लिए निरन्तर प्रयास करेंगे तो हमें सफलता अवश्य मिलेगी शर्त यह है कि पुरुषार्थ की पूँजी, धैर्य का धम और संस्कारों की सम्पदा हमारे पास हो। नववर्ष में विकारों का विसर्जन और संस्कारों का सृजन होना चाहिए। सृजन का स्वप्न ना देखिए, पुरुषार्थ का संकल्प लीजिए, नववर्ष का स्वागत कीजिए।

–अजहर हाशमी

आशावादी बनें, यह आत्मा का ईंधन है, सकारात्मक सोचें, घातक है नकारात्मक सोच। अपने आदर्शों को नहीं त्यागें वे कभी पुराने नहीं होते। प्रेम लें, प्रेम दें– इससे अच्छा शब्द तो दुनिया में और नहीं।

नया वर्ष, नई उमंग, नव उत्साह, नव उल्लास, नये संकल्प, नई उम्मीद, नये स्वप्न, लेकर आता है। आज नववर्ष की बेला पर एक-दूसरे को बधाई दे रहे हैं, अभिनन्दन कर रहे हैं। शुभ संदेशों का आदान-प्रदान कर रहे हैं– नववर्ष शुभ हो।

नववर्ष की मंगलमय घड़ियों में हम आत्मचिन्तन करें, आत्म विश्लेषण करें, अपने जीवन का मूल्यांकन करें। जीवन का अर्थ मात्र जीना, मौज-मस्ती, खाना-पीना ही नहीं है अपितु जीवन का अर्थ है कि उसे किस तरीके से जीया जा रहा है। आपकी जीवन शैली कैसी है? आपका स्वयं का पारिवारिक जीवन, सामाजिक जीवन कैसा है? आप कितने लोकप्रिय हैं, आपके सामाजिक सम्बन्ध कैसे हैं।

आज के आधुनिक प्रतिस्पर्धात्मक व औद्योगिक युग में नववर्ष के स्वागत के मायने ही बदल गये हैं। 31 दिसम्बर की शाम से ही लोग टी.वी. के सामने चिपक जाते हैं, होटलों में पार्टियों के दौर, गाना-बजाना, पीना-पिलाना, नाच, आतिशबाजी चलाकर हम नववर्ष का स्वागत करें तो यह हमारी सभ्यता, आचार-विचार व जीवन शैली नहीं होनी चाहिए, इसके विपरीत सादगी, त्याग, प्रेम, सौहार्द्र व भाईचारे से मनाना चाहिए, नहीं तो देश में प्रतिवर्ष 31 दिसम्बर को कई घटनाएँ, दुर्घटनाएँ व गम्भीर हादसे हो जाते हैं, जिनका दर्द हमें काफी अर्से तक रहता है। अतः हम कुछ संकल्प लें, हमारी जीवन शैली में बदलाव लावें ताकि हम स्वस्थ, मस्त व दीर्घ हो। कुछ अच्छा सोचें।

पुरानी बातों को पीछे छोड़ दें, पुराने कष्ट, पीड़ा, दुःख, गलतियों तथा अविवेक पूर्ण कार्यों को भूल जायें। अतीत को पीछे छोड़ दें, गलतियों या अपनी कमजोरियों को भूलकर नये ढंग से जीवन जीने का प्रयास करें।

जार्ज बेनफील्ड अतीत को भूलने तथा नये सिरे से जीवन व्यतीत करने की सलाह देते हैं। कटु अतीत से नाता तोड़कर नए ढंग से, नए उत्साह और यौवन से मधुर उल्लासित जीवन व्यतीत कीजिए। नया जीवन व्यतीत करना कठिन व मुश्किल नहीं है। नये सिरे से अपना काम कीजिए, नया वातावरण बनायें, प्रत्येक दिन आपको समृद्धि, शांति, आशा व उत्साह की ओर ले जा रहा है, सर्वत्र उत्साह, प्रसन्नता व आनन्द है, फिर अतीत के शूल कंटकों व मुसीबत से क्या सरोकार? कहा जाता है कि हर सुबह एक नया संदेश लेकर आती है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन डब्ल्यू.एच.ओ. के अनुसार आधुनिक जीवन शैली, भागमभाग व दौड़ती जिन्दगी रातो-रात लखपति, करोड़पति व शिखर पर पहुँचने की तमन्ना व आकांक्षा ने इस समय सम्पूर्ण विश्व में 45 करोड़ लोगों को मानसिक बीमारियों जैसे तनाव, डिप्रेशन, अवसाद व असुरक्षा की भावना से त्रस्त व ग्रस्त बनाया, यदि यही गति रही तो आगामी डेढ़ दशक में हर चौथा व्यक्ति इनमें से किसी भी रोग की चपेट में आ जावेगा।

अतः हमें नये वर्ष में कुछ सोचना होगा, चिन्तन करना होगा तथा हमारी दिनचर्या व जीवन के तौर-तरीकों, आचार-विचार एवं खान-पान में बदलाव लाकर हम स्वस्थ, मस्त, प्रसन्न व दीर्घायु प्राप्त कर सकते हैं तथा शांत व तनावरहित जीवन जी सकते हैं।

प्रातःकाल जल्दी उठें : प्रातःकाल जल्दी उठना ही चाहिए। प्रातः भ्रमण करें, व्यायाम, प्राणायाम, मालिश करें। अभी तो संत श्री बाबा रामदेव जी के कार्यक्रमों की धूम मची हुई है। टी.वी. आस्था चैनल पर देखकर उसी अनुसार अनुलोम, विलोम, कपाल भाति आदि विभिन्न प्राणायाम कर हम कई असाध्य व्याधियों से छुटकारा पाने से कामयाब हो सकते हैं।

चिंतन में बदलाव लायें : पुरानी असफलताओं से नाता तोड़ लेना ही समझदारी है अन्यथा उनसे उत्पन्न आत्महीनता और आत्मग्लानि हमें स्नायविक दुर्बलता का शिकार बना सकती है, जिन व्यक्तियों के प्रति आपकी नाराजगी, जिनसे आपका वैरभाव है, ईर्ष्या है, मन-मुटाव है, जिन्होंने आपको हरदम हरपल व हर प्रकार से नुकसान पहुँचाया हो, उसको मन में से निकालें, नये सिरे से सम्पर्क स्थापित करें। यदि आप स्वस्थ, स्वच्छ व सद्भावना से उनसे मैत्री स्थापित करेंगे तो निश्चित है आपके मधुर सम्बन्ध स्थापित होंगे तथा दोनों पक्ष तनाव रहित हो जावेंगे।

कुछ बातें विशेष ध्यान रखें : ● लोगों को स्नेहपूर्वक अभिवादन करें। ● दूसरों को अधिक महत्व देने की आदत डालें, उन्हें ऐसा अनुभव करवाने के प्रसंगों का भरपूर इस्तेमाल करें। ● बहस चाहे कितनी भी गरमागरम हो जाये लेकिन कभी भी अपमानजनक और चोट पहुँचाने वाली भाषा व शब्दों का प्रयोग न करें। मतभेद को मनभेद में परिवर्तित न करें। ● किसी का कोई भी रहस्य या जानकारी अपने मन की अंतल गहराइयों में रखें, उसे कभी बाहर न आने दें। ● जो व्यक्ति आपकी ओर सहायता के लिए निहारते हैं, उनके साथ व्यवहार कुशलता, सहानुभूति, प्रेम व सद्व्यवहार रखें। ● दूसरों के विवेक और उपलब्धियों की मान्यता देने और उनकी प्रशंसा करने में उदारता बरतें।

आशा है नववर्ष के अवसर पर यह सूत्र अपनाकर अपना जीवन मंगलमय बना सकते हैं।

जीवन व्यवहार में जो भी बुराइयाँ हैं उनका करें पूर्णतः बहिष्कार।/नववर्ष में सद्गुणों को, सहर्ष, सहज ही करें स्वीकार॥/सद्गुणों, संकल्पों से अपनी पहचान बनाएँ।/नववर्ष को नव संकल्पों से आदर्श ऐतिहासिक बनाएँ॥

जीवन में एक सूत्र अपनाएँ : *''जीवन एक गणित है, जिसमें मित्रों को जोड़ें, दुश्मनों को घटाएँ, सुखों का गुणा करें व दुःखों का विभाजन करें।''*

सुखी जीवन के लिए : ● मैं औरों के साथ स्वयं की तुलना नहीं करूँगा। ● मैं किसी से सेवा और सुख-सुविधाओं की माँग नहीं करूँगा। ● मैं सादगी को अपना आदर्श मानूँगा। 'सादा जीवन उच्च विचार' जीवन का उद्देश्य होगा। ● मैं सदैव सुझाव व अनुरोध की भाषा बोलूँगा, आदेशात्मक नहीं। ● प्रतिकूल परिस्थिति में ठीक है, इस शब्द का प्रयोग करूँगा तथा आज कल से बेहतर है। ● मैं खाने-पीने व बोलने में संयम रखूँगा। ● दिनचर्या नियमित रखें। प्रतिदिन का कार्य प्रतिदिन करूँगा, कामटालू प्रवृत्ति का पूरी तरह त्याग करूँगा। ● मैं अपमान व असफलता के प्रसंगों को ध्यान में नहीं लाउंगा तथा प्रतिशोध, ईर्ष्या की भावना यदि है तो धीरे-धीरे कम करूँगा। ● जो कार्य आपके सामने हो उसे अपना मानते हुए पूरी निष्ठा से करें। आप कार्य में सफल भी होंगे तथा इससे आपका आत्मविश्वास भी बढ़ेगा। फलतः आप खुद को पहले से अधिक प्रसन्न पाएँगे। ● कुछ गलतियाँ आपसे हुई होंगी, जिसका परिणाम भी आपको ही भुगतना होगा, फिर दुःख किस बात का? यह तो एक मौका है खुद को सुधारने का और जीवन में अनुभव लेने का। ● आत्मसम्मान सबसे महत्वपूर्ण है। जब आप अपने भीतर के इंसान का सम्मान नहीं करेंगे तो दूसरे क्यों आपको सम्मान देंगे। कभी अपने आपको दूसरों से कम न समझें। पर हाँ, घमण्ड से भी बचें। ● लोगों

को कभी अपनी कमियाँ स्वयं न बताएँ। यह एक प्रकार से खुद की ही बुराई है। ● खुद के किए कार्यों व प्रयासों की स्वयं सराहना करें, लेकिन बड़बोलेपन से बचें। ● हर व्यक्ति का अपना अलग स्वभाव होता है, इस बात को समझते हुए पूरी कोशिश करें कि सबके साथ आपके सम्बन्ध मधुर हों। अगर आपको कोई भला-बुरा कह भी दें तो उसे नज़रअन्दाज करने का प्रयत्न करें। किसी की गलत बात पर चिढ़ने से आपको ही तकलीफ होगी। ● अपने परिवार, अपने दोस्तों व कार्य के बीच तालमेल बिठाने का प्रयास करें और सबको पर्याप्त समय दें। आखिर इन्हीं की वजह से आपकी खुशियाँ व महत्व है। ● अपने सहकर्मियों की सफलता पर उनसे जलने से बेहतर है कि सफलता के लिए अपने प्रयासों को और गति दी जाए। दूसरों से जलने से आपके हाथ सिर्फ दुःख और चिड़चिड़ापन ही आएगा। ● अपने आपको हमेशा बताते रहें कि आपमें आत्मविश्वास है और आप कोई भी कार्य करने में सक्षम हैं। ● अपने हर कार्य को बेहतर ढंग से करने का प्रयास करें लेकिन यह भी समझ लें कि इस दुनिया में कोई भी परिपूर्ण नहीं हो सकता। ● और हाँ, अपनी सेहत का पूरा ध्यान रखें।

सारांश : नववर्ष सभी को निरोग, दीर्घायु व स्वस्थ रखे, इसके लिए हम सबको चाहिए कि अपने जीवन में कोई भी व्यसन, बुराई या गलत आदत है तो उसे छोड़े तथा किसी भी अच्छे कार्य का शुभारम्भ करें। बड़ों को पूरा सम्मान दें तथा छोटों को असीम प्यार बाँटें, कभी किसी के लिए बुरा न सोचें, किसी को दुःख क्लेष, पीड़ा नहीं पहुँचाएं।

इसी संदर्भ में पूज्य श्री चन्द्रप्रभ व ललितप्रभ सागरजी द्वारा रचित ''जीवन की वर्णमाला'' को नववर्ष में जीवन में अपनाएँ व सुखी जीवन का निर्माण करें–

अ से अदब करो।
आ से आत्मविश्वास रखो।
इ से इबादत करो।
ई से ईमानदार बनो।
उ से उत्साह रखो।
ऊ से ऊर्जावान बनो।
ए से एकता रखो।
ऐ से ऐश्वर्यवान बनो।
ओ से ओजस्वी बनो।
औ से औरों की सेवा करो।
अं से अंग प्रदर्शन मत करो।
क से कर्म करो।
ख से खरे बनो।
ग से गरिमा रखो।
घ से घमण्ड मत करो।
च से चरित्रवान बनो।
छ से छलो मत।
ज से जलो मत।
झ से झगड़ो मत।
ट से टकराओ मत।
ठ से ठगो मत।
ड से डरो मत।
ढ से ढलना सीखो।
त से तत्पर बनो।
थ से थको मत।
द से दया करो।
ध से धर्म करो।
न से नरम बनो।
प से परिश्रम करो।
फ से फर्ज निभाओ।
ब से बलवान बनो।
भ से भलाई करो।
म से महान बनो।
य से यकीन करो।
र से रहम करो।
ल से लक्ष्य प्राप्त करो।
व से वचन निभाओ।
स से समय के पाबन्द बनो।
श से शर्म रखो।
ष से षड्यन्त्र मत रचो।
ह से हँसमुख बनो।
क्ष से क्षमा करो।
त्र से त्राही मत मचाओ।
ज्ञ से ज्ञानी बनो।

–''तृप्ति'', बंदा रोड,
भवानीमण्डी-326502, झालावाड़

स्वाध्याय से ही जीवन प्रकाशित होता है

❑ द्वारकेश भारद्वाज

हमारे जीवन में एक महत्वपूर्ण पक्ष है– ज्ञान। जो व्यक्ति ज्ञान शून्य होता है वह एक प्रकार से अंधा है। अंध व्यक्ति के लिए जैसे बहुत सारी चीजें अज्ञात रह जाती हैं, वैसे ही व्यक्ति के ज्ञान पर जब आवरण आया हुआ होता है तब वह विभिन्न विद्याओं का जानकार नहीं हो पाता। अतः आदमी का यह लक्ष्य रहे कि जीवन में ज्ञान का विकास हो और वह ज्ञानवान हो। ज्ञान का विकास तब होता है जब ज्ञानावरणीय कर्म निर्बल होता है। इस निर्बलता से निजात पाने का एक उपाय है– स्वाध्याय। यह स्व+अध्याय दो शब्दों से मिलकर बना है। स्वाध्याय का अभिप्राय ''स्वयम् अध्ययनम्'' से है अर्थात् अपने आप बिना किसी दूसरे की सहायता के अध्ययन करना स्वाध्याय में सहायक तत्व हैं–

1. विचार– पुस्तकों से पढ़कर स्वयं समझने का प्रयत्न करना, दूसरे विद्वानों के विचारों को मन में धारण करना।

2. चिन्तन– यह सोचना कि हम उन विचारों से कहाँ तक सहमत हैं एवं

3. मनन– उनके ऊपर अपनी मौलिक धारणाएँ आरोपित कर पचाना।

अपना अध्ययन करना, अपने बारे में जानना ही स्वाध्याय है– स्पष्ट है स्वाध्याय का सीधा सम्बन्ध आत्मा के साथ है। आत्मा के बारे में जान लेने का तात्पर्य है अध्यात्म के बारे में जान लेना। संस्कृत व्याकरण के अनुसार स्वाध्याय की व्याख्या है ''सुष्ठु अध्यायः इति स्वाध्याय''। गहनता के साथ सर्वांगीण रूप से अध्ययन करना ही तो स्वाध्याय है। पढ़ना और पढ़ाना ही तो स्वाध्याय रूपी सिक्के के दो पहलू हैं। पठन पाठन से ज्ञान का आवरण पतला होता है। जिससे ज्ञान की रश्मियाँ प्रविष्ट हो जाती हैं।

ज्ञान प्राप्ति के लिए विद्यालयों की बाढ़ आई हुई है। उच्च अध्ययन संस्थानों की बहुलता

बढ़ती ही जा रही है। ज्ञान का विश्वव्यापी विस्फोट हो रहा है। शिक्षण संस्थाओं की विपुलता है। सर्वशिक्षा अभियान व अनिवार्य शिक्षा की संवैधानिक परिणिति के लिए बहुमुखी प्रयास सरकारी व गैरसरकारी अभिकरण करने में संलग्न हैं। गरीबी की जीवन रेखा से नीचे जीने वालों के बच्चों को भी निःशुल्क शिक्षा मिले इसके लिए विभिन्न सुविधाएँ एवं प्रलोभनों की बाढ़ आ गई है। जाहिर है अज्ञान के कारण मानव अनेक रूढ़ियों को पकड़ लेता है और गलत कार्यों में भी संलग्न हो जाता है। शिक्षा का विकास ही अज्ञान जनित समस्याओं के फैलते मायाजाल से छुटकारा दिलाने में सक्षम है। आध्यात्मिक व शिक्षा के क्षेत्र में रत व्यक्तियों के लिए तो स्वाध्याय की विशिष्टता है। साधक व शिक्षकों के लिए स्वाध्याय अमृत तुल्य है। इसका एक कार्य प्राप्त ज्ञान से दूसरों को भी विभूषित करना। शिविरा पत्रिका ने अपने प्रकाट्य वर्षों में एक नारा ''जो पढ़ता नहीं उसे पढ़ाने का अधिकार नहीं'' देकर शिक्षक पत्रिका शिविरा के पाठक बढ़ाने का आह्वान किया था।

आज भी शिविरा पत्रिका के संस्थापक वरिष्ठ सम्पादक शिवरतन थानवी शिविरा के माध्यम से गत कुछ माह से ''झोला पुस्तकालय'' शीर्षक से प्रकाशित लेखों के माध्यम से ज्ञानार्जन हेतु पुस्तकें पढ़ने को प्रेरित करने में संलग्न हैं। पुस्तक जगत के पुरोधा स्व. चम्पालाल रांका, जयपुर रियासत के मास्टर मोती लाल संघी ने भी अपने जीवन काल में स्वाध्याय हेतु पठन पाठन के लिए मानसिकता व समाज में चेतना पैदा करने के महती प्रयास किए। पाठक मंच भी बने। लेकिन स्वाध्याय के लिए समुचित वातावरण जितना बनना चाहिए नहीं बन पाया। जबकि विभिन्न माध्यमों से ज्ञान, विज्ञान, प्रज्ञान का विस्फोट होने के कगार पर हैं। प्रतिवर्ष नये प्रकाशन व वेबसाइट आ रही हैं। लेकिन इसी अनुपात में स्वाध्यायियों की संख्या में अभिवृद्धि न होना दुःखद है। आज के साधक (शिक्षक) तो जो पढ़ चुके उसे ही पूर्ण ज्ञान मानते हैं। पुस्तकालयों में पुस्तकें धूल चाट रही हैं। जो शिक्षक स्वयं स्वाध्यायी नहीं होगा, ज्ञान में गहनता प्राप्त करने की ललक से विरक्त होगा, जब तक स्वयं की ज्ञान विकसित नहीं हो जाएगा तब तक वह दूसरों को ज्ञान देने में सक्षम नहीं होगा। गुरुकुल व्यवस्था में शिक्षा ग्रहण कर समाज में प्रवेश करने प्रस्थान करने से पूर्व दीक्षा संस्कार के वक्त बटुकों को गुरु जो महत्वपूर्ण शिक्षा देता था उसमें एक ''स्वाध्याय में प्रमाद मत करना'' भी था। अतः स्वाध्याय में कभी प्रमाद नहीं करना चाहिए। स्वाध्याय में निरंतरता व तल्लीनता बनी ही रहनी चाहिए। ताकि स्वाध्याय ज्ञान की सर्वोत्तम विधि की मान्यता पाता रहे। स्वाध्याय से ज्ञानार्जन होता है। ज्ञानवान व्यक्ति सम्यक आचार व व्यवहार का पालनहार होता है। सम्यक ज्ञान से ही जीवन में सही गलत का तार्किक बुद्धि कौशल विकसित होता है– संयम आता है– ईमानदारी आती है। सम्यक ज्ञान का पुष्ट आधार है– स्वाध्याय। इसलिए मनीषियों में स्वाध्याय को सर्वोत्तम तप की संज्ञा दी है। स्वाध्याय से तार्किक ज्ञान होता है– आत्मा विराट होती है– चित्त का निरोध होता है। लेकिन शर्त है कि ज्ञान प्राप्ति की तड़प होनी चाहिए– क्योंकि जैसा पूर्व में कहा है– स्वाध्याय तपस्या है– साधना है। तड़प हो तो बुढ़ापे में भी ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। इसके अनेक प्रेरक उदाहरण हैं।

जिस तरह सोना तपकर कुंदन बनता है, उसी तरह धारा के विपरीत तैरने का दमखम रखने वाले भी अलग चमकते दिखते हैं। ऐसी ही एक शख्सियत राजस्थान के नागौर जिले के छोटे से गांव भैसंदा के 30 वर्षीय हुक्माराम चौधरी हैं जिन्होंने नरेगा में मजदूरी करते यह जाना कि कलेक्टर सबसे बड़ा अधिकारी होता है। बस तय कर लिया कि अब कलेक्टर ही बनना है और स्वाध्याय के बलबूते पर यू.पी.एस.सी. द्वारा वर्ष 2011-12 की आई.ए.एस. की कठिन परीक्षा में पूरे राष्ट्र में 110वाँ स्थान प्राप्त कर कलेक्टर बनने का स्वप्न साकार किया। हुक्माराम के पिता अस्थमा से पीड़ित थे अतः परिवार की जिम्मेदारी बचपन से ही उनके कंधों पर आ गई। स्कूल जाते, खेत संभालते व छुट्टियों में मजदूरी करते सुबह शाम ट्यूशन भी छोटे बच्चों को पढ़ाते। उन्होंने स्वाध्याय का सहारा लिया और इग्नू से 12वीं के बाद कॉलेज की पढ़ाई की। ग्रेज्युएट होने के बाद वर्धमान खुला विश्वविद्यालय से एम.एससी. उत्तीर्ण कर दिल्ली में जाकर कोचिंग की। स्वाध्याय की बैसाखी के सहारे हुक्माराम नरेगा मजदूर से कलेक्टर बन गया।

स्वाध्याय के लिए भाषा का गहन ज्ञान होना जरूरी है। भाषा के व्याकरण को सीखना होगा। संस्कृत साहित्य में कहा भी है कि–

बिना व्याकरणेनान्धः बधिरः कोश वर्जितः।
साहित्य रहित पंगु मूकस्तं विवर्णितः ।।

शब्द भंडार से रहित व्यक्ति अंधा है– बहरा है। क्योंकि जब भाषा ज्ञान व शब्द भंडार से रहित व्यक्ति भाषण सुनने जायेगा तो वक्ता द्वारा अपने उद्‌बोधन में नये-नये शब्दों के प्रयोग किया जायेगा जो भाषा अज्ञानी श्रोता के लिए उन शब्दों का सुनना और न सुनना प्रायः अर्थहीन होगा। अतः शब्द भंडार से रहित व्यक्ति को बहरा बताया गया है।

शब्द हैं सुन्दर तो अर्थ बोलेंगे।
अर्थ में वह शक्ति है असमर्थ बोलेंगे।।
है न जिन्हें भाषा, शैली तर्क से मतलब।
वे जहाँ बोलेंगे केवल व्यर्थ बोलेंगे।

जिसकी साहित्य में रुचि नहीं होती वह भाषा की दृष्टि से पंगु है। जो तर्क बल से रिक्त है वह श्रोता तो हो सकता है लेकिन प्रश्नकर्ता नहीं हो सकता। अतः वह मूक है। गूंगे का गुड़ इसी को तो कहते हैं।

स्वयं को ज्ञान का विकास करना चाहिए। पत्राचार पाठ्यक्रम, इन्दिरा गाँधी व वर्द्धमान खुला विश्वविद्यालय के बहुआयामीय पाठ्यक्रम, ओपन स्कूल पाठ्यक्रम एवं स्वयंपाठी परीक्षा योजनाएँ स्वाध्याय के लिए प्रेरक व स्तुत्य प्रयास हैं। इन पाठ्यक्रमों को छात्रों को स्वाध्यायी कहना उचित होगा। गहन व विशेष स्वाध्याय हेतु स्रोतों की जानकारी देने हेतु ही हर पुस्तक के अंत में सन्दर्भ ग्रन्थों की सूची या बिबिलोग्राफी दी जाती है। आज इन्टरनेट जैसी सुविधाओं से भी स्वाध्याय हेतु अनुकूल व विश्वस्त साधन व सामग्री उपलब्ध है। पुस्तकालयों का उपयोग स्वाध्याय की ओर एक सशक्त कदम है।

व्यक्ति में ज्ञान का विकास हो। चाहे अध्यात्म का क्षेत्र हो अथवा व्यवहार का। ज्ञान का विकास होना ही जीवन की महती उपलब्धि है। हमें स्वाध्याय का विकास व सतत बनाये रखकर जीवन को प्रकाशित करना चाहिए।

–बी-68, हवेली ज्ञान द्वार, सेठी कॉलोनी,
जयपुर-302004

भारतीय संस्कृति की संरक्षा, शिक्षा और शिक्षक

❑ डॉ. विद्या पालीवाल

भारतीय संस्कृति की संरक्षा का दायित्व शिक्षा का है। मनुज-मन को अज्ञान-तम से मुक्त कर ज्ञान के दिव्य आलोक से आलोकित करने का कार्य शिक्षा द्वारा सम्पन्न किया जाता है। शिक्षा संस्कार करती है, परिष्करण करती है और संस्कृति के चिरंतन सोपान को यथावत बनाये रखने में अपना सक्रिय योगदान देती है।

अब तनिक हम संस्कृति शब्द को परिभाषित करें तो संस्कृत भाषा में सम उपसर्ग पूर्वक कृ धातु में क्तिन प्रत्यय के योग से संस्कृति शब्द निष्पन्न होता है। व्युत्पत्ति की दृष्टि से 'संस्कृति शब्द परिष्कृत कार्य अथवा उत्तम स्थिति का बोध कराता है। यह उत्तम स्थिति शिक्षा के द्वारा ही संभव है तथा यह संस्कार देने का कार्य, चाहे गुरुकुल हो अथवा शिक्षा भवन के विशाल प्रांगण, शिक्षक द्वारा ही सम्पन्न किया जाता है।

वर्तमान संदर्भ में जहाँ असमानताएँ, विषमताएँ तथा स्वयं को प्रतिष्ठित करने की अभिप्साएँ चहुँ ओर मुँह बायें खड़ी हैं, पाश्चात्य सभ्यता के अन्धानुकरण की 'होड़ा-होड़ी' ने हमारे सामाजिक जीवन में तथा हमारे मानक में अप्रत्याशित संस्खलन की दरारें कर दी हैं; सांस्कृतिक प्रदूषण की स्थितियों को जन्म दे दिया है। आज भौतिक-आवरण ओढ़ कर स्वयं को विशिष्टतम कहलाने की परिभाषा को ही हम संस्कृति मान बैठे हैं किन्तु संस्कृति का निवास हृदय में, आचार-विचार, व्यवहार-विनिमय के सौजन्य में है जिसे गुरु द्वारा बाल-हृदय में आरोपित करना अपेक्षित समझा जाता है। अस्तु संस्कृति का सच्चा संवाहक शिक्षक है।

सिकन्दर महान के भारत-विजय के स्वप्न को यथार्थ का बोध कराने वाला शिक्षक ही है। वह अपनी कुटिया में बैठकर जिस राष्ट्रनीति और धर्म का अवबोध कराता है वह युगों तक इतिहास का स्वर्णिम पृष्ठ जाना जाता है। इस देश की पावन माटी को गरिमा-विभूषित करने का कार्य आचार्य चाणक्य, महामना मदनमोहन जी मालवीय, पं. बाल गंगाधर तिलक, टैगोर एवं अरविन्द घोष जैसे युग पुरुष मनीषियों ने किया है। आज हमें ऐसे अनन्य निष्ठा समर्पित शिक्षक वर्ग की आवश्यकता है।

शिक्षक शिक्षा की विरासत सहेजे है। उसे अपनी क्षमता को उस छोटे से दीपक के समान महान बनाना है जो सूर्यास्त के पश्चात् सूर्य की 'दुविधा' अन्धकार को दूर कर धरा को ज्योतिर्मय रखने की बात करता है– चुनौती स्वीकारता है।

आत्मा की पाठशाला में पढ़े संत कबीर ने जिस शाश्वत सत्य और गुरु-महिमा का बोध कराया है वह शिक्षक की भूमिका के लिए पर्याप्त है– *"गुरु कुम्हार सिष कुंभ है, गढ़ि-गढ़ि काढै खोट।/अन्तर हाथ सहार दे, बाहर वाहै चोट॥"*

किन्तु शिक्षक की यह भूमिका गहन-गंभीर है। इसके लिए शिक्षक स्वयं ज्ञाता हो, दाता हो और विधाता हो तभी राष्ट्र-निर्माण और संस्कृति के संवर्धन और संरक्षण का दायित्व वहन कर सकेगा।

शिक्षा और शिक्षक का परस्पर अन्योन्य सम्बन्ध है। शिक्षक का व्यक्तित्व ही वह आधार है जिस पर शिक्षा-व्यवस्था सक्रिय रूप से चलती है। किसी भी विद्यालय का भवन, छात्रवर्ग, सहायक सामग्री आदि कितनी ही प्रभावशाली क्यों न हो जब तक वहाँ के अध्यापक चरित्रवान, विद्वान तथा मनसा-वाचा-कर्मणा अपने कर्म के प्रति समर्पित न हो उस विद्यालय का शिक्षण-स्तर उन्नत नहीं हो सकता।

शिक्षा एक द्विमुखी प्रक्रिया है– यह प्रक्रिया दोनों के सहयोग से ही सम्पन्न होती है। पहले यह मत था कि शिक्षक सक्रिय होता जब कि छात्र वर्ग निष्क्रिय श्रोता ही होता था जो शिक्षक द्वारा इधर-उधर 'तोड़ा-मरोड़ा जा सकता था' किन्तु युग के साथ परिस्थितियाँ बदल चुकी हैं। आज शिक्षार्थी एक सक्रिय, तर्कशील एवं कल्पना करने वाला प्राणी है। वह कुछ मूल प्रवृत्तियों, अभिरुचियों, योग्यताओं एवं सहज प्रेरणाओं को लेकर शिक्षा जगत में प्रविष्ट होता है। आज दूरदर्शन और अन्य प्रगति की नवीनतम विधाओं ने उसके मानस में व्यापक हलचल मचा दी है।

उसके इस कौतुहलपूर्ण जीवन में शिक्षक एक कुशल चितेरे की भाँति इन तत्वों को विकसित कर उसके व्यक्तित्व का निर्धारण करता है।

विद्यार्थी हर क्षण अपने शिक्षक को देखता है तथा उनकी प्रत्येक बात को अपने जीवन में उतारने का प्रयत्न करता है। वह अपने गुरु की प्रत्येक बात को बड़ी पैनी दृष्टि से देखता है– उनके आदर्श को, उत्प्रेरण को, पठन-पाठन की क्रिया को, जीवन जीने की व्यवहारगत स्थितियों को - सब देखता हुआ यथा तथ्य जीवन में उतारने का प्रयास करता है।

ऐसी स्थितियों में शिक्षक दायित्व गुरुतर हो जाता है। उसे कहाँ, कैसा, कब, किस प्रकार स्वयं के जीवन की क्रियाओं को संचालित करना है; इस हेतु सतर्क रहना होगा। विद्यालय केवल पुस्तकीय ज्ञान के आधार-स्तम्भ ही नहीं वरन् मानवीय मूल्यों से परिपूर्ण मानव-मूर्ति गढ़ने के दृढ़ आधार हैं। निःसंदेह गुरु ही असद् से सद् एवं तम से प्रकाश की ओर अग्रसर करता हुआ चिरंतन सत्य का साक्षात्कार कराता है।

अस्तु समाज और राष्ट्र का यह कर्तव्य है कि शिक्षक वर्ग को इस प्रकार सक्षम वातावरण उपलब्ध कराये कि वह सच्चे अर्थों में विद्यार्थियों को 'सा विद्या या विमुक्तये' की भावभूमि में प्रविष्ठ करा सकें।

–22, बृजविहार, पुलां, उदयपुर (राज.)

जिम्मेदार शिक्षक व शिक्षण

❑ मोनिका आर्य

शिक्षक व शिक्षण एक सिक्के के दो पहलू हैं। शिक्षण का आधार तब ही महत्वपूर्ण व फायदेमंद होता है जब शिक्षक अपने शिक्षण को सही तरह से प्रस्तुत करें। एक शिक्षक किसी विषय में अपनी अभिव्यक्ति छात्रों के सामने तब ही व्यक्त कर सकता है जब वह स्वयं उस विषय का अध्ययन कर चुका हो, अगर शिक्षक स्वयं अध्ययन नहीं करता तो वह न तो अपने आप को कक्षा में सही ढंग से प्रस्तुत कर सकता है और न ही वह उचित तरीके से शिक्षण विषय को प्रस्तुत करने में सफल हो सकता है। एक सफल शिक्षक बनने और शिक्षण कार्य को कुशलता से सम्पन्न करवाने के लिए यह जरूरी है कि शिक्षक समय के साथ चले, अपनी अभिव्यक्ति को खुलकर प्रस्तुत करें, अपने कार्य में संरचनात्मकता को महत्त्व दें, अपनी सोच को सकारात्मकता के साथ आगे बढ़ाएँ, अपने व्यक्तित्व विकास के साथ-साथ अपने छात्रों को हुनर पहचानें, अपने कार्यों, सोच और अपनी शिक्षण पद्धति में आधुनिकता का समावेश करें। अपने आप को अपनी शिक्षण संस्था की व्यवस्थाओं एवं नियमों के अनुरूप प्रगति के लिए हमेशा तैयार रखें और सबसे बड़ी प्राथमिकता अपने कार्य शिक्षण, अपनी संस्था, छात्रों और अपने अनुभवों की क्रियात्मकता को प्रदान करें। अगर एक शिक्षक इन सभी बातों को अपनाता है और इन विचारों को नवीनता के साथ अपने दैनिक जीवन में समावेशित करता है तो वह सच में एक जिम्मेदार शिक्षक कहलाता है, जो अपने व अपनी शिक्षण व्यवस्थाओं के लिए जिम्मेदारी युक्त पद प्राप्त करने का प्रथम दावेदार माना जाता है।

एक जिम्मेदार शिक्षक के लिए यह जरूरी है कि वह संरचनात्मकता के साथ अपनी शिक्षण पद्धतियों में ऐसी सहायक सामग्रियों का समावेश करे, जिसके माध्यम से वह अपने आप को छात्रों व कक्षा में अध्यापन कार्य करवाते समय आत्मविश्वास से पूर्ण हो। एक शिक्षक में आत्मविश्वास तब ही विकसित हो सकता है जब शिक्षक आत्मचिन्तन, मनन व स्वाध्याय (स्वअध्ययन) करें। इन्हीं विचारों से सम्बन्धित रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कहा था कि– ''शिक्षक का वास्तविक प्रेम उसकी शिक्षा से होना चाहिए, जब तक शिक्षक स्वयं अध्ययन नहीं करता तब तक वह सच्ची शिक्षा नहीं दे सकता है।''

शिक्षा व रुचिपूर्ण सच्ची शिक्षा के मध्य वही अन्तर होता है जो अन्तर हम फीकी व मीठी चीजों में करते हैं क्योंकि किसी भी फीकी चीज को देखकर हम उसे खाने में रुचि नहीं ले सकते अगर उसे किसी मजबूरी से खानी भी पड़े तो हम उसे उस उत्साह के साथ नहीं खाएँगे जिस उत्साह के साथ हम किसी मीठी चीज को खाते हैं। ठीक उसी तरह अगर एक शिक्षक अपनी शिक्षा को देते समय स्वयं अध्ययन करने के साथ उसमें नवीनता का समावेश करने में रुचि नहीं लेता तब तक वह अपने शिष्यों को उस मिठास का अनुभव नहीं करा सकता, जो शिष्य के लिए बेहतरीन परिणाम के रूप में सामने आती है।

शिक्षक की जिम्मेदारी सिर्फ छात्रों को बेहतरीन शिक्षा देना ही नहीं होता, जिम्मेदारी शब्द का यह मतलब कतई नहीं है कि वह अपने छात्रों को अच्छी तरह व समय पर अपने विषय का पाठ्यक्रम पूरा करवाने में सफल हो जाए। सिर्फ पाठ्यक्रम पूरा करवाना शिक्षक की जिम्मेदारी नहीं होती, उसे अपने विषय में विशेषज्ञ होना भी जिम्मेदारी का ही एक अनिवार्य रूप है। यह तभी संभव हो सकता है जब शिक्षक अपने विषय में मेहनत करने के साथ-साथ अपनी शिक्षण कला व अपने विद्यालय के प्रति, उसकी व्यवस्थाओं के प्रति, उनके नियमों का जिम्मेदारी से पालन करें क्योंकि एक शिक्षक को जिम्मेदारी का सही अहसास उसकी शिक्षण संस्थाओं द्वारा ही करवाया जाता है। शिक्षण संस्थाएँ ही एक शिक्षक को अपनी व्यवस्थाओं से जिम्मेदार बनाती हैं।

जिम्मेदारी शब्द शिक्षक के साथ उसकी शिक्षण पद्धतियों तथा उसके शिक्षण संस्थाओं के साथ जुड़ा होता है। एक शिक्षक अगर किसी विषय को शिक्षण पद्धतियों के साथ रुचि लेकर अपने छात्रों के सामने प्रस्तुत करता है तो अपने विषय व अपने छात्रों को समझाने के तरीकों में उसकी जिम्मेदारी साफ नजर आती है।

शिक्षण कला शिक्षक का बहुमूल्य हथियार समझा जाता है, क्योंकि बिना शिक्षण कला के शिक्षक का अस्तित्व नहीं के बराबर है। शिक्षण करवाने व उसमें नई बातों के समावेश से ही शिक्षक अपने निश्चित लक्ष्य की प्राप्ति तक पहुँच सकता है। उस बेहतरीन लक्ष्य तक पहुँचने के लिए यह जरूरी है कि वह सबसे पहले जिम्मेदार बनें। जिम्मेदारी ही वह पुरस्कार है जो एक शिक्षक को बेहतरीन शिक्षक होने का गौरव दिलवा सकता है।

इसलिए यह कहा जाता है कि– ''जीवन को सफल बनाने के लिए शिक्षा की आवश्यकता होती है, डिग्री की नहीं। ज्ञान के साथ-साथ नम्रता, धैर्य उसकी सादगी तथा शिक्षण कार्य में नवीनता, कुशलता तथा अनुभव के उपयोग का श्रेष्ठतम तरीका ही एक सफल शिक्षक की डिग्री होती है। अगर एक शिक्षक के पास यह डिग्री नहीं होती तो उसके लिए कागज की डिग्री भी व्यर्थ है।''

–वरिष्ठ अध्यापिका
पब्लिक मॉन्टेसरी उ.मा.वि., पीपाड़ शहर, जोधपुर

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो छिटकाय।
टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ पड़ जाय॥

***

ऐसी वाणी बोलिए, मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करे, आपहुँ शीतल होय॥

सफलता और आत्मविश्वास

❑ भैरूलाल नामा

आत्मविश्वास अर्थात् स्वयं में, आत्मबल होना हर एक व्यक्ति के लिए आवश्यक है। आत्मबल के कारण ही मनुष्य असम्भव से दिखने वाले कार्य को आसानी से कर सकते हैं। यदि किसी कार्य की शुरुआत करने से पूर्व सफलता पर संदेह होता है तो कार्य की सफलता संदिग्ध हो जाती है। यदि किसी व्यक्ति को मोटरसाइकिल चलाना सिखाना है और वह व्यक्ति सोचेगा कि गिर जाएँगे, मोटरसाइकिल नहीं चला पाएगा। आत्मबल की कमी के कारण उसमें डर व भय पैदा हो जाएगा तथा आत्मविश्वास की कमी के कारण वह मोटरसाइकिल चलाना नहीं सीख पाएगा। इसी तरह किसी बालक को परीक्षा में पास होने पर सन्देह है तो वह पढ़ाई में एकाग्र नहीं हो पाएगा। और वह अनुत्तीर्ण हो जाएगा। इसी प्रकार किसी भी कार्य या लक्ष्य प्राप्ति को शुरू करने से मन में निराशा उत्पन्न होती है। कार्य पूरे मनोयोग से नहीं करते, आत्मविश्वास की कमी होने से किसी कार्य में सफल होना संभव नहीं है आत्म विश्वास को प्रभावशाली बनाने, सफलता, प्रसन्नता तथा लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आत्मविश्वास होना अति आवश्यक है। आत्मविश्वास बनाये रखने के लिए बचपन से लालन-पालन में माता-पिता की अहम् भूमिका होती है। वे अपनी सन्तान को आत्मविश्वास के गुर सिखाते हैं। बचपन में बच्चों को अत्यधिक कठोर अनुशासन में नहीं रखें। उनको आयु के अनुसार कार्य करने की स्वतंत्रता दें। घर में बच्चों को स्वच्छ वातावरण दें। छोटे-बड़े योग्य कार्य करने में उनमें छूट दें। साथ ही बच्चों को घर में सुरक्षित महसूस हो ऐसा उनको महसूस होना चाहिए। परिवार में किसी तरह की कलह, झगड़ा, इत्यादि नहीं करने चाहिए। इन बुराइयों से हमेशा बचकर ही रहना चाहिए इसके अलावा युवाओं, वयस्कों में आत्मबल बनाये रखने के लिए निम्न तथ्यों को सदैव जीवन का अंग बनाना चाहिए। ''मन के जीते जीत मन के हारे हार।'' हमारे सभी कार्यों विचारों का नियंत्रण संचालन मस्तिष्क एवं मन के द्वारा होता है। यदि विवेकपूर्ण मन विचारों को नियंत्रित और व्यवस्थित कर लिया जाता है तो तनाव नहीं होता और शरीर में आत्मबल आत्मविश्वास विकसित होता है।

यदि मन में संशय, भय और असुरक्षा की भावना है तो मनोबल कम हो जाता है। भय के कारण हीनता, कुंठाएं, निर्बलता हो जाती है। अतः दृढ़ता, साहस, धैर्य, संकल्प, मनोबल नहीं रहता और वे व्यक्ति तनावग्रस्त और दुःखी हो जाते हैं और अनेक व्याधियों के चंगुल में फँस जाते हैं। जीवन में असफलताएँ भी मिलती हैं। अतः मन को नियंत्रित रखें तथा सकारात्मक विचार रखें। सफलताएँ और सुख प्राप्त होगा।

जीवन की अधिकांश, जटिलताओं, तनाव, चिन्ता का कारण नकारात्मक निराशावादी विचार होते हैं।

यदि कार्य की शुरुआत करने से पूर्व ही यह सोचते हैं कि क्या वह सफल होंगे। यदि नकारात्मक विचार है तो व्यक्ति प्रसन्न तथा तनावमुक्त नहीं रह सकता नकारात्मक विचारों का प्रभाव व्यक्तित्व पर भी पड़ता है। ऐसे में व्यक्ति का व्यक्तित्व प्रभावित होता है। सकारात्मक विचार होने से व्यक्ति के जीवन में उत्साह उमंग, स्फूर्ति तथा कार्य के प्रति सहज भाव होता है जिससे आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। जो व्यक्ति शारीरिक, मानसिक रूप से स्वस्थ रहते हैं, उन व्यक्तियों को सफलता अवश्य मिलती है। उनके आत्मविश्वास में और अधिक वृद्धि होती है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति मन में यह विश्वास रखे कि यह कार्य मैं कर सकता हूँ तथा यह मन में आभास न होने दें कि यह मैं नहीं कर सकता हूँ। जीवन में उत्साह रखे, आलस्य, निराशा स्वास्थ्य के लिए घातक है, जीवन में ऐसे सपने न संजोएं जो हमारे से नहीं हो सकता है। दिव्य स्वप्नों में न रहें बल्कि क्षमता के अनुसार संभव लक्ष्य निर्धारित करें और उनकी प्राप्ति के लिए क्रमबद्ध तरीके से पूरे उत्साह मनोयोग से लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास करें।

व्यक्ति के अपने जीवन में सफल होने के लिए, प्रसन्न रहने के लिए उत्साह, उमंग होना आवश्यक है। जीवन में सुख, दुःख, बाधाएँ समस्याएँ, दिक्कतें, कठिनाइयाँ, वगैरह आती रहती हैं। इनसे घबराना नहीं चाहिए। यह तो जीवन जीने का क्रम है। यदि व्यक्ति पूरी लगन निष्ठा, धैर्य तथा उत्साहपूर्वक कार्य करे तो रुकावटें और समस्याओं का समाधान अनायास ही हो जाएगा और अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर रहने से सफलता का मार्ग प्रशस्त हो जाएगा।

कार्य में आस्था रखें। जो भी लक्ष्य निर्धारित किया है। उस पर पूर्ण आस्था होने पर ही कार्य पूर्ण आत्मविश्वास मनोयोग से कर सकते हैं। यदि इसके विपरीत यदि कार्य लक्ष्य पर आस्था नहीं है तो कार्य अधूरे मन से किया जाता है। जिसके कारण सफलता मिलने में सन्देह होता है।

व्यक्ति के जीवन में मनोबल, आत्मविश्वास, धैर्य उत्साह, कार्य के प्रति लगन, निष्ठा होने पर कार्य कुशलता बढ़ती है और व्यक्ति का व्यक्तित्व निखरता है। जीवन में सफलता में संशय नहीं रहता तथा वह व्यक्ति स्वस्थ, प्रसन्न रहता है। गौतम बुद्ध का उपदेश जैसा विचार होगा वैसा ही वह हो जाएगा।

–अध्यापक
रा.उ.प्रा.वि. 5, नेहरू कॉलोनी, बालोतरा

काल करे सो आज कर, आज करै सो अब।
पल में परलय होयगी, बहुरि करेगो कब॥

***

माँगन मरन समान है, मति माँगो कोई भीख।
माँगन ते मरना भला, यह सतगुरु की सीख॥

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा - क्यों और कैसे?

❑ महेश कुमार चतुर्वेदी

आज के सूचना प्रौद्योगिकी युग में देश के हर क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए। टी.वी., मोबाइल, ई-मेल, फैक्स, इंटरनेट से कोई अछूता नहीं। पलक झपकते ही सूचना सम्प्रेषण का कार्य सुगमता से हो जाता है। विश्व के किसी भी कोने में घर बैठे बात करना एवं वहाँ की जानकारी प्राप्त करना आज सहज हो गया है।

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में– चिकित्सा, टेक्नोलॉजी, उद्योग, यातायात, वास्तुनिर्माण, व्यापार, शिक्षा, कला, संगीत, संस्कृति आदि क्षेत्रों में आमूल-चूल परिवर्तन होकर विकास एवं प्रगति के नए कीर्तिमान कायम किए हैं। प्रत्येक क्षेत्र में नए-नए अनुसंधान एवं खोजों को जानकर हम दाँतों तले उँगली दबा लेते हैं।

वह दिन दूर नहीं जब हमारा देश विकासशील राष्ट्र से ऊपर उठकर संसार के विकसित राष्ट्रों की श्रेणी में शुमार हो जाएगा।

- ''विकास के इन सोपानों को यदि मंजिल मिली तो वह मात्र- शिक्षा से।''
- ''जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में यदि बदलाव की बहार आई है। परिवर्तन की लहर चली है और विकास के बदले पद चिह्न कहीं दिखे हैं तो मात्र शिक्षा से।''
- ''इतिहास उठाकर दृष्टिपात करें तो आदि मानव से मानव को सभ्य मानव तक पहुँचाने का चमत्कारित कार्य हुआ है तो वह शिक्षा से।''
- अगर कहीं क्रांति का आगाज हुआ है तो सिर्फ शिक्षा से।

शिक्षा यदि इतनी महत्त्वपूर्ण है और जीवन के लिए उपयोगी है तो उसे स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं। जिस प्रकार सूर्य की रोशनी सारे संसार को आलोकित करती है। उसी प्रकार शिक्षा भी मानव जीवन के तम को हर उसको प्रकाशमान एवं दैदिप्यमान करने में पीछे नहीं है।

बालक बचपन से लेकर एक निर्धारित पाठ्यक्रमी शिक्षा को ग्रहण करता है तो वह है– विद्यालय। शिक्षा ग्रहण करने का सहज, सरल और सुलभ माध्यम है, तो वह है– विद्यालय।

यदि विद्यालय इतना ही महत्वपूर्ण है तो आइए आज से 10-15 वर्ष पूर्व विद्यालय की शिक्षा व्यवस्था पर विहंगम दृष्टि दौड़ाएँ। उस समय विद्यालय के पास संसाधनों का अभाव था। विद्यालय भवन रहित अथवा जर्जर अवस्था में थे। बच्चे खुले में पढ़ते थे। न कोई फर्नीचर और न कोई दरी पट्टी। न कोई श्याम-पट्ट और न कोई अतिरिक्त शिक्षण सामग्री। फिर भी शिक्षा के महत्त्व को स्वीकारते हुए शिक्षा ग्रहण करनी थी और तालीम प्राप्त की भी। उस वक्त शिक्षा की गुणवत्ता की आवश्यकता इतनी महसूस नहीं की गई क्योंकि कम संसाधन होते हुए भी बालक सीखने के मानक स्तर को आसानी से ग्रहण कर लेता था। उस जमाने के पढ़े हुए लोग आज भी हिसाब-किताब, पहाड़े एवं पढ़ने-लिखने में आज के बी.ए. पास को पीछे छोड़ देते हैं।

ज्यों-ज्यों विकास के सोपान चढ़ते गए। बदलाव की आवश्यकता महसूस की गई। शिक्षाविदों ने रटंत एवं ढर्रे से पढ़ाई जाने वाली शिक्षा के बदलाव पर जोर दिया। पाठ्यक्रम बदला गया। शिक्षा में नवाचार नई जानकारियों, नई खोजों, नए आविष्कार और नई तकनीकी को स्थान दिया जाने लगा।

आधुनिक और सुसज्जित विद्यालय बनने लगे। स्कूलों में कम्प्यूटर ने पदार्पण किया। सरकार ने शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए भवन कक्षा-कक्ष, शौचालय, झूले-रपस पट्टी, बिजली-पानी आदि की सुविधा उपलब्ध कराने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी और तो और विभिन्न छात्रवृत्तियाँ, पोषाहार, निःशुल्क पाठ्यपुस्तकें उपलब्ध कराई गई। आर.टी.ई. के तहत 6-14 आयुवर्ग के बालकों को सर्व सुलभ शिक्षा के तहत निःशुल्क शिक्षा को अमली जामा पहनाया गया। शिक्षा के सार्वजनीकरण के तहत 6-14 आयु वर्ग के बालक-बालिकाओं को चिह्नित कर उन्हें शिक्षा की विभिन्न योजनाओं से जोड़ा गया और एक नाम दिया– अनिवार्य शिक्षा।

पाठ्यक्रम के बदलाव के साथ शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया गया। बच्चों के शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए टी.एल.एम. सामग्री, एस.एम.जी. एवं पुस्तकालयों के लिए राशि स्वीकृत की गई। विद्यालय में लहर एवं कल्प कक्ष योजना लागू की गई। माँ-बेटी सम्मेलन आयोजित किए गए। आओ सीखें बनाएँ प्रतियोगिता आयोजित की गई। इन्सपायर एवार्ड से बालकों को प्रोत्साहित किया। प्रतिभावान बालिकाओं को स्कूटी दी गई। दूर-दराज से स्कूल आने वालों को साइकिलें दी गईं। वजीफे, पुरस्कार आदि न जाने क्या-क्या सुविधाएँ मुहैया की गई। ज्यों-ज्यों विद्यालय की भव्यता और अप्रत्याशित संसाधनों की बढ़ोत्तरी हुई। त्यों-त्यों गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की आवश्यकता महसूस की जाने लगी। प्रारम्भ में मीडिया, राजनेताओं, शिक्षाविदों एवं जनमानस में दबी जुबान से इस विषय पर आवाज उठाई और अब तीव्रता से यह आवाज बुलन्द हुई। विद्यालय को सर्व-सुलभ साधन उपलब्ध कराने के पश्चात् छात्र क्यों सीखने के न्यूनतम स्तर को सीख नहीं पाए? क्यों छात्र पढ़ाई में कमजोर पाए गए।

आइए, एक नजर मार्केट की स्थिति पर डालें। आज बाजार में सीलबंद सामग्री खरीदते वक्त आई.एस.आई. मार्का देखते हैं। इसका तात्पर्य है जिस डिब्बे पर आई.एस.आई. मार्का है। उसमें मानक स्तर की गुणवत्तापूर्ण सामग्री उपलब्ध है। डिब्बे के ऊपर अलग-अलग मात्रा में मिश्रित सामग्री का ब्यौरा ग्राम-मिलीग्राम में दिया जाता है। यह सब दर्शाता है कि सामग्री क्वालिटीयुक्त है। गुणवत्तापूर्ण है। यही बात शिक्षा पर लागू होती है। एक ही कक्षा में वर्षपर्यन्त पढ़ने वाला बालक कुछ न कुछ तो सीखेगा। कम से कम सीखने की न्यूनतम अधिगम स्तर की दक्षता उसमें आ जानी चाहिए। यानी कि कक्षा पाँच में आते-आते बालकों को पढ़ना-लिखना, गिनती-पहाड़े और साधारण जोड़-बाकी, गुणा-भाग तो आ ही जाने चाहिए। तभी लगेगा कि हमारा बालक शिक्षा के आई.एस.आई. मार्का युक्त है। तभी हम कह सकेंगे हमारा प्रॉडक्ट, हमारा बालक समाज के योग्य बन चुका है। ऐसी शिक्षा कहलाएगी– गुणवत्तापूर्ण शिक्षा जिसकी सब प्रशंसा करना चाहेंगे। उसको सब अपनाना चाहेंगे। जो सामग्री जितनी गुणवत्तापूर्ण होगी। उसकी माँग बाजार में उतनी ही ज्यादा होगी। यही तो हम सब चाहते हैं– शिक्षा के क्षेत्र में बालक खरा उतरे। बालक

अपने विद्यालय और अपने गुरु की पहचान बन सकें। और वह दिन दूर नहीं कि हम सबके सार्थक प्रयासों से शिक्षा की प्रखर ज्योत मुखर होकर गाँव-गाँव, ढाणी-ढाणी तक पहुँचेगी। और सबको गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिलेगी? लेकिन गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिलेगी कैसे? इसके लिए सार्थक उपाय ही शिक्षा को बेहतर बनाने के लिए मील का पत्थर साबित हो सकते। आइए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए निम्न बिन्दुओं पर चिंतन-मनन करें– 1. शिक्षक समर्पित भाव से अपने पेशे से जुड़े। 2. शिक्षकों की जवाबदेही तय करना। 3. शिक्षकों को गैर शैक्षणिक कार्यों से मुक्त रखना। 4. शिक्षकों की कमी-पूर्ति करना। 5. शिक्षा को राजनीति से मुक्त रखना। 6. शिक्षा को रोजगारोन्मुखी बनाना। 7. छात्रों के नियमित विद्यालय न आने अथवा होमवर्क न करने पर जवाबदेही तय करना। 8. अभिभावकों को जागरूक करना। 9. कठिन विषयों के लिए अतिरिक्त कक्षा शिक्षण की व्यवस्था करना। 10. शिक्षकों को पोषाहार कार्य से मुक्त रखना। यह कार्य किसी सामुदायिक संगठन अथवा किसी स्वतंत्र एजेंसी से करवाना। 11. भयमुक्त विद्यालय निरीक्षण की कार्य योजना बनाना। 12. पाठ्यपुस्तकों को रोचक, सरल एवं आकर्षक बनाना। 13. 'आठवीं तक कोई फेल नहीं' नियम में शिथिलता देना। 14. अभिभावकों की मासिक-त्रैमासिक बैठक बुलाना। 15. डाक का विकेन्द्रीकरण करना या पाक्षिक एवं मासिक डाक ही मँगवाना। 16. अच्छे कार्य करने वाले शिक्षकों को प्रोत्साहित कर उन्हें पुरस्कृत करना। 17. गतिविधि आधारित सतत मूल्यांकन हेतु शिक्षकों को प्रशिक्षित करना एवं इसकी कार्य पुस्तिका विद्यालय में भेजना। उपर्युक्त बिन्दुओं के साथ वर्तमान शिक्षा सत्र में 'शिक्षा-सम्बलन' गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा के क्षेत्र में एक सार्थक प्रयास है।

सितम्बर 12 में 6000 विद्यालयों का सम्बलन एवं दिसम्बर 12 में 8000 विद्यालयों का सम्बलन जाँच के पश्चात् पुनः प्रथम स्तर के 6000 विद्यालयों का फरवरी-मार्च 13 में प्रगति संबलन जाँच कर गुणवत्ता शिक्षा हेतु कार्य योजना बनाई जाएगी। निश्चित ही कार्य-योजना से गुणवत्ता शिक्षा के दूरगामी परिणाम निकल सकेंगे।

–प्रधानाध्यापक
रा.उ.प्रा.वि., पुराना, छोटीसादड़ी, प्रतापगढ़ (राज.)

व्यक्तित्व में छुपा केरिअर

❑ उषा टेलर

केरिअर की तलाश करने वाले को यदि अपने व्यक्तित्व की जानकारी होती है, तो उसे सर्वोत्तम केरिअर का चयन करने में मदद मिलती है। क्योंकि व्यक्तित्व और केरिअर में गहरा सम्बन्ध होता है।

केरिअर और व्यक्तित्व के सम्बन्धों को जानकर अपनी सफलता के रास्ते की पहचान बेहतर ढंग से कर सकता है।

आपके कमजोर व मजबूत पक्षों के बारे में जानकारी होती है, तो केरिअर का चुनाव करने में काफी आसानी होती होगी।

अच्छा जीवन बिताने के लिए अपने बारे में ज्यादा से ज्यादा जानना फायदेमंद होता है तथा केरिअर बनाने के लिए केरिअर काउंसलर की मदद ली जा सकती है।

केरिअर की तलाश करने वाले को यदि अपने व्यक्तित्व की विशेषताओं की जानकारी है, तो उसे सर्वोत्तम केरिअर का चयन करने में मदद मिलती है।

व्यक्तित्व की विशेषताएँ एवं संभावित केरिअर विशेषताएँ : 1. ईएसटीजे (संरक्षक)– ● स्वाभाविक नेता व्यक्तित्व की जिम्मेदारी लेना पसंद करते हैं और परम्परा तथा सुरक्षा का सम्मान करते हैं। ● अच्छे व्यक्तित्व के लिए जीवन का विशेष मानक तय करते हैं तथा उनमें शानदार सांगठनिक योग्यता होती है। ● अच्छे व्यक्तित्व वाले अतिसावधान, स्पष्टवादी, ईमानदार व वफादार होते हैं तथा अपने कर्तव्य का पालन करने को प्रयासरत होते हैं।

सम्भावित केरिअर– ● ये अनेक तरह के काम करने में योग्य होते हैं और नेतृत्व वाली जगह पर इन्हें सबसे ज्यादा खुशी होती है। ● ये चुने हुए केरिअर के बारे में लचीलापन व व्यवस्था को बनाए रखने में सबसे ज्यादा उपयुक्त होते हैं।

2. आईएसटीजे (कर्तव्यनिष्ठ) विशेषताएँ– ● कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति परम्परा का सम्मान, सुरक्षा और शांतिपूर्ण जीवन निर्वाह करते हैं। ● तर्क और बौद्धिक सोच-विचार से निष्पक्ष निर्णय लेते हैं और तथ्यों तथा प्रत्यक्ष सूचनाओं का सम्मान करते हैं। ● स्थिर, व्यावहारिक और जमीन से जुड़े होते हैं व अकेले काम करने को तरजीह देते हैं, जरूरत के समय टीम के साथ कार्य करते हैं।

सम्भावित केरिअर– ● केरिअर में सफलता प्राप्त करने के लिए चारित्रिक विशेषता सबसे अहम भूमिका अदा करती है तथा वे दृढ़ निश्चय और अध्यवसाय होते हैं। ● वे कॉर्पोरेट और बिजनेस वर्ल्ड में मैनेजमेंट और एग्जीक्यूटिव दोनों स्तरों पर सफलतापूर्वक काम कर सकते हैं।

3. आईएसएफजे (सेवाभावी) विशेषताएँ– ● इनके पास लोगों के बारे में सूचनाओं का संग्रह होता है, जिससे लोगों की भावनाओं व प्रतिक्रियाओं के प्रति सजग रहते हैं। ● स्थिर, व्यावहारिक, दयालु और विचारशील होते हैं जिससे अपनी जिम्मेदारी गम्भीरता से पूरी करते हैं।

सम्भावित केरिअर– ● लोगों की भावनाओं की समझ होने और काम को समझने की खास योग्यता के साथ लोगों की जरूरतों के मुताबिक संरचना तैयार की योजना बनाकर लोगों की जरूरत के मुताबिक वातावरण तैयार कर सकते हैं। ● डिजाइनिंग व इंटीरियर डेकोरेशन, नर्सिंग कार्यों में ज्यादा सफलता पाते हैं।

4. आईएसटीपी (मेकेनिक) विशेषताएँ– ● समस्याओं का समाधान करने, चीजें किस तरह और क्यों काम करती हैं, उसे जानने में रुचि होती है। ● भविष्य के बजाय वर्तमान में जीना पसंद करते हैं और व्यावहारिक व वास्तविकता में जीने वाले होते हैं। ● स्वतंत्र और दृढ़निश्चयी तथा जोखिम लेने वाले व कार्यों के बल पर विकास करते हैं।

सम्भावित केरिअर– ● विचारशीलता और एकाग्रता की वजह से समस्याओं को सुलझाने के लिए लम्बे समय तक काम कर सकते हैं। ● पहले से जाने हुए तथ्यों और आंकड़ों की

मदद से समस्याओं का समाधान खोजने के लिए शानदार तार्किक क्षमता काम में लेते हैं। ● फोरेंसिक पेथोलॉजी, सिस्टम एनालिस्ट व सिस्टम एनालिस्ट में ज्यादा सफलता पाते हैं।

5. ईएसएफपी (प्रदर्शक) विशेषताएँ– ● नए अनुभवों के लिए प्रेरित और उत्साहित होते हैं तथा चीजों के सौंदर्य को महत्व देते हैं। ● व्यावहारिक, यथार्थवादी, स्वतंत्र और चौकस होते हैं। ● सिद्धान्त और बड़ी लिखित व्याख्याएँ पसंद नहीं करते।

सम्भावित केरिअर– ● जनसम्पर्क कौशल का उपयोग करके सम्पर्क के दायरे को बढ़ाते हैं और अनुभवों में विविधता लाते हैं। ● सेल्स रिप्रजेंटेटिव, काउंसलर, चाइल्ड केयर, फैशन डिजाइनर के क्षेत्र इन्हें पसंद होते हैं।

6. आईएनटीजे (वैज्ञानिक) विशेषताएँ– ● बहुत जटिल सिद्धान्तों व मुश्किल सामग्री की समझने की क्षमता होती है। ● महान रणनीतिकार, वैश्विक दृष्टि, शांत, संयमी और विश्लेषक होते हैं। ● बड़ी और मुश्किल सैद्धान्तिक चुनौतियाँ पसंद करते हैं व ज्ञान तथा कौशल को महत्व देते हैं। ● रचनात्मक, ऊर्जावान, नए आविष्कार करने वाले और उपाय कुशल होते हैं।

सम्भावित केरिअर– ● वैज्ञानिक, इंजीनियर, कम्प्यूटर साइंटिस्ट, प्रोफेसर व अध्यापक, चिकित्सक जैसे कार्यों में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

7. ईएसएफजे (देखभाल करने वाला) विशेषताएँ– ● व्यवस्थित, वफादार, उदार और सहानुभूति रखने वाले होते हैं। ● व्यावहारिक और जमीन से जुड़े हुए तथा शांति से जीवन बिताने वाले होते हैं। ● व्यवस्था, संरचना और समय सारणी तैयार करने में आनन्द लेते हैं व दूसरों की जरूरतों को अपनी जरूरतों से ज्यादा प्राथमिकता देते हैं।

सम्भावित केरिअर– ● घरेलू काम, नर्सिंग, अध्यापन, प्रशासकीय काम, चाइल्ड केयर, ऑफिस मैनेजर आदि उनके लिए सही केरिअर हैं।

8. ईएनटीजे (एग्जीक्यूटिव) विशेषताएँ– ● सिद्धान्तों को योजनाओं में बदलने के लिए तत्पर होते हैं। ● उच्चस्तरीय ज्ञान, भविष्य के प्रति जागरूक, आत्मविश्वासी और निर्णायक होते हैं। ● अक्षमता और अकुशलता सहन नहीं करते व चीजों को व्यवस्थित देखना चाहते हैं।

सम्भावित केरिअर– ● खासतौर पर शानदार नेता और संगठन निर्माणकर्ता होते हैं।

9. आईएसएफपी (कलाकार) विशेषताएँ– ● वातावरण व उसमें होने वाले बदलावों के प्रति जागरूक तथा मौजूदा समय में जीना पसंद करते हैं। ● वर्तमान को अच्छी तरह से जीना चाहते हैं तथा विचारों के प्रति वफादार होते हैं। ● विश्वसनीय, संवेदनशील, दयालु तथा सुंदरता की सराहना करते हैं।

सम्भावित केरिअर– ● स्वाभाविक योग्यता का उपयोग कर रचनात्मक कार्य करते हैं तथा कला, संगीत, डिजाइन, काउंसलर, फोरेस्ट रेंजर, मनोवैज्ञानिक पसंदीदा कैरिअर है।

10. ईएनएफजे (दाता) विशेषताएँ– ● लोगों से निष्कपट रिश्ते रखते हैं व दूसरों की भावनाओं को महत्व देते हैं। ● व्यवस्था, संगठन व सामंजस्य को महत्व देते हैं तथा लोगों की प्रशंसा की चाहत होती है। ● ईमानदार, वफादार, रचनात्मक तथा कल्पनाशील होते हैं।

सम्भावित केरिअर– ● गाइड, कंसल्टेंट, समाजसेवा, मानव संसाधन, राजनीतिज्ञ व लेखक आदि इनके पसंदीदा केरिअर हैं।

11. आईएनटीपी (विचारवान) विशेषताएँ– ● सिद्धान्तों और विचारों को पसंद करते हैं व सच्चाई की खोज करने वाले होते हैं। ● स्वतंत्र, मौलिक, रचनात्मक और अन्तरदृष्टि रखने वाले होते हैं। ● भविष्य के बारे में सोचने वाले व सामान्यतया बुद्धिमान व निष्कपट होते हैं।

सम्भावित केरिअर– ● सिद्धान्तों की रचना करने व उनका विश्लेषण कर सही तथा गलत सिद्ध करने की योग्यता होती है। ● वैज्ञानिक, रणनीतिक योजनाकार, तकनीकी लेखक, वन अधिकारी उपयुक्त केरिअर विकल्प हैं।

12. ईएसटीपी (कर्ता) विशेषताएँ– ● काम पसंद, मौजूदा समय में जीना, शानदार याददाश्त, अच्छा स्वभाव जैसी विशेषताएँ होती हैं। ● काम को तेजी से करने वाले ऊर्जावान तथा अपने प्रयासों का तुरंत नतीजा चाहते हैं। ● साहसिक कार्यों के प्रति आकर्षण तथा शुरुआत करना पसंद करते हैं।

सम्भावित केरिअर– ● साहसिक गुण होने से पुलिस, जासूसी, पेरामेडिकल आदि का केरिअर के रूप में चयन करना चाहिए।

13. ईएनटीपी (दूरद्रष्टा) विशेषताएँ– ● प्रोजेक्ट पसंद करने वाले, रचनात्मक और ऊर्जावान होते हैं। ● बुद्धिमान, क्षमतावान, लचीले व बहुआयामी और शानदार संवाद क्षमता वाले होते हैं।

सम्भावित केरिअर– ● ये भाग्यशाली होते हैं, इन्हें तरह-तरह के काम करने की योग्यता होती है। ● वकालत, मनोवैज्ञानी, विपणन, सिस्टम एनालिस्ट सबसे उपयुक्त हैं।

14. ईएनएफपी (प्रेरक) विशेषताएँ– ● बुद्धिमान, क्षमतावान, रचनात्मक और ऊर्जावान होते हैं। ● मौखिक और लिखित संवाद की योग्यता तथा तार्किक व बुद्धिमता से कार्य करते हैं।

सम्भावित केरिअर– ● कंसल्टेंट, उद्यमी, पत्रकार, कम्प्यूटर स्पेशलिस्ट, वैज्ञानिक जैसे पेशे अपनाकर ज्यादा खुश रह सकते हैं।

15. आईएनएफपी (आदर्शवादी) विशेषताएँ– ● व्यवस्था को महत्व देते हैं व लोगों में रुचि लेते हैं। ● सेवाभावी, रचनात्मक, प्रेरक, संवेदनशील और जटिल होते हैं।

सम्भावित केरिअर– लेखक के अलावा काउंसलिंग, समाजसेवा, संगीतज्ञ, धार्मिक कार्य, अध्यापन आदि पेशों में लोग ज्यादा रुचि रखते हैं।

16. आईएनएफजे (रक्षक) विशेषताएँ– ● लोगों और स्थितियों की सहज समझ, आदर्शवादी, उच्च सिद्धान्तवादी, जटिल और गंभीर होते हैं। ● भविष्य का ध्यान रखने वाले, सेवाभावी, लोगों के प्रति संवेदनशील होते हैं। ● हरेक चीज में मतलब और उद्देश्य की खोज करते हैं।

सम्भावित केरिअर– ● धार्मिक कार्य, चिकित्सक, मनोवैज्ञानिक, फोटोग्राफर, कलाकार आदि के क्षेत्रों में ज्यादा सफल होते हैं।

–प्रधानाध्यापिका
राज. बालिका माध्यमिक विद्यालय, कुरज (राजसमंद)

शिक्षक का व्यक्तित्व

❑ भंवर सिंह

शिक्षक का व्यक्तित्व ऐसा होना चाहिए जो सबसे सद्व्यवहार करता हो। जो सदैव क्रियाशील रहता है तथा विश्व में कुछ अनूठा करना चाहता है। असम्भव जिसके शब्दकोश में नहीं हो। जिसमें उमंग और उत्साह का सागर लहराता हो। जो स्वयं सब कुछ करने का साहस रखता हो। जो स्वावलम्बी हो जिसमें दुर्बलता से लगाव नहीं हो। जिसका ललाट तेजस्विता से दमकता हो। और जो परिस्थितियों का दास नहीं, उनका निर्माता, नियंत्रणकर्ता और स्वामी हो। जो वर्तमान में जीता है और आँखों में सुनहरे कल के सपने देखता है। जो भाग्य नहीं अपने कर्म पर विश्वास रखता है। जिसकी दृष्टि सदा लक्ष्य पर होती है। जो बाधाओं को चीरकर अपना मार्ग बनाता है। जो शिक्षक होने का गौरव अनुभव करता है। जिसके होठों पर हमेशा मधुर मुस्कान थिरकती है। जो स्वयं जलकर दूसरों को रोशनी देता है।

पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम अपनी पुस्तक तेजस्वी मन में अपने पूर्व शिक्षक के बारे में लिखते हैं– युवा छात्र की हैसियत से मैंने उस वक्त प्रो. टी. तोताद्री आयंगर के अद्भुत दिव्य व्यक्तित्व को हर सुबह कालेज परिसर से गुजरते और बी.एससी. (ऑनर्स) तथा एम.एससी. के विद्यार्थियों को उन्हें गणित पढ़ाते देखा था। छात्र उन्हें हैरानी से देखते थे जैसे कोई गुरु को देखता है जो वास्तव में थे भी। जब वे चलते थे तो लगता था जैसे ज्ञान का प्रकाश उनके चारों ओर आभामण्डल-सा फैला है।

बाल गंगाधर का कथन है कि ''शिक्षक का अपना चरित्र भी ऐसा होना चाहिए जो मूक शिक्षक का कार्य करे। जिसे देखकर शिक्षार्थी की श्रद्धा स्वयं जागृत हो जाए।

आचार्य विनोबा के विचार में राष्ट्रीय जीवन कैसा होना चाहिए, इसका आदर्श अपने जीवन में उतारना राष्ट्रीय शिक्षक का कर्तव्य है। यह कर्तव्य करने से अपने आसपास उसके शिक्षा की किरणें फैलेंगी और उन किरणों के प्रकाश से आसपास के वातावरण का प्रभाव अपने आप कम हो जाएगा। इस प्रकार शिक्षक स्वतः शिक्षण का केन्द्र है और उसके समीप रहना शिक्षण पाना है। धन वैभव, भव्य वेशभूषा या महँगे प्रसाधनों से ही व्यक्तित्व-चरित्र बनता तो श्रीराम के गुरु वशिष्ठ, श्रीकृष्ण के संदीपन, कबीर के रामानन्द, चन्द्रगुप्त के चाणक्य, स्वामी विवेकानन्द के रामकृष्ण परमहंस और अमीर खुसरों के हजरत निजामुद्दीन आदि गुरुओं को कौन जानता? इनके शिष्य भी अपने गुरुओं की पहचान बन गए। क्या इन शिष्यों के पास केवल वही शिक्षा रही होगी जो उनके शिक्षकों ने दी। अब वह युग और वह परिवेश तो नहीं रहा। नये युग के नये शिक्षार्थी का नया शिक्षक कैसा हो? इस पर विचार करने की आवश्यकता है। छात्र के मन पर शिक्षक के व्यक्तित्व का प्रभाव अमिट होता है, इसलिए शिक्षक के व्यक्तित्व का महत्व भी उतना ही है जितना उसकी डिग्रियों का। व्यक्तित्व का कोई साँचा नहीं हो सकता न ही उसकी विशेषताओं की कोई सूची बन सकती है। यह विभाजन करना भी कठिन है कि कौनसी विशेषता अधिक महत्व की है और कौनसी कम महत्व की। यह तो छात्र पर निर्भर है कि वह अपने शिक्षक की किस विशेषता को महत्व देकर आत्मसात करता है। बीज प्रतिफल तो बाद में होते हैं। इतना अवश्य है कि वह अपने शिक्षक की प्रत्येक विशेषता को बड़ी पैनी नजर से देखता है। छात्र की नजर इतनी तेज होती है कि उसके शिक्षक के रहन-सहन, आचार-व्यवहार की छोटी से छोटी बात भी बच नहीं सकती।

शिक्षा के क्षेत्र में बड़ी डिग्रियों या उच्च स्तरीय रहन-सहन के कारण नहीं बल्कि अपने विशिष्ट मानवीय गुणों, आत्मीय व्यवहार तथा सादगीपूर्ण प्रभावशाली व्यक्तित्व के कारण वे हमें याद रह जाते हैं। एक छात्र अपने प्रिय शिक्षक को वर्षों बाद भरी भीड़ में भी पहचान लेता है। भूतपूर्व छात्र श्रद्धा से स्वयं आकर मिलें। मेरे विचार में यह सबसे बड़ा शिक्षक सम्मान है।

–शारीरिक शिक्षक
रा.उ.मा.वि., सबलपुरा, सीकर

हे शारदे माँ ! हे शारदे माँ ! अज्ञानता से हमें तार दे माँ।

हे शारदे माँ ! हे शारदे माँ !
अज्ञानता से हमें तार दे माँ।
तू स्वर की देवी है संगीत तुझसे
हर शब्द तेरा हर गीत तुझसे
हम हैं अकेले हम हैं अधूरे
तेरी शरण हम, हमें तार दे माँ।
हे शारदे माँ ! ... ... ।

मुनियों ने समझी, गुणियों ने जानी
वेदों की भाषा पुराणों की बानी
हम भी तो समझें हम भी तो जानें
विद्या का हमको, अधिकार दे माँ।
हे शारदे माँ ! ... ... ।

तू श्वेत वरणी कमल पर विराजे
हाथों में वीणा मुकुट सर पे साजे
मन से हमारे मिटा दे अन्धेरा
उजालों का हमको संसार दे माँ।
हे शारदे माँ ! ... ... ।

***

वर दे वीणा वादिनी वर दे

वर दे वीणा वादिनी वर दे
प्रिय स्वतंत्र रव अमित मंत्र नव
भारत में भर दे, वर दे ...

काट अन्ध-उर के बन्धन-स्तर
बहा जननी ज्योतिर्मय निर्झर
कलुष भेद, तम हर, प्रकाश भर,
जगमग जग कर दे, वर दे ...

नव गति नव लय ताल छन्द नव,
नवल कण्ठ नव जलद मन्द्र नव,
नव नभ के नव विहग वृन्द को
नव पर नव स्वर दे, वर दे ...

बापू की सीख-19

नशीली चीज़ें

❑ मो. क. गाँधी

महात्मा गाँधी का व्यक्तित्व बहुआयामी था। राजनीति, अर्थनीति, समाजनीति एवं शिक्षा सभी क्षेत्रों में उनके विचार बहुत उपयोगी हैं। वस्तुतः वे एक मनोवैज्ञानिक शिक्षक थे। उनकी शिक्षा सम्बन्धी 21 रचनाएं 'बापू की सीख' नामक पुस्तक में प्रकाशित हुई हैं। शिविरा के सुधि पाठकों के लिए उन्हें शृंखलाबद्ध प्रकाशित किए जाने का निर्णय लिया गया है। आशा है पाठक इन विचारों को पठन, मनन के साथ आचरण में लाने का प्रयास करेंगे। —वरिष्ठ सम्पादक

नशीली चीजों में, हिन्दुस्तान में शराब, गांजा, भांग, तंबाकू और अफीम गिनी जा सकती हैं। इस देश में पैदा होने वाले नशों में ताड़ी भी एक है और विदेश से आने वाली शराबों का तो कोई ठिकाना ही नहीं है। ये सब सर्वथा त्याज्य हैं। नशे से आदमी होश खो देता है और उस हालत में बेकार हो जाता है। शराब की लत वाले खुद बरबाद होते और अपने कुटुम्ब को बरबाद करते हैं। शराबी सब मर्यादाएँ तोड़ देता है।

एक पक्ष है जो एक निश्चित मात्रा में शराब पीने का समर्थन करता है और उससे फायदा बतलाता है। मुझे इस दलील में कोई जान नहीं मालूम होती। जरा देर को मान भी लें तो बहुत लोग जिससे मर्यादा में रह ही नहीं सकते, इस वजह से भी इसे छोड़ना चाहिए।

ताड़ी का समर्थन पारसी भाइयों की ओर से अधिक हुआ है। वे कहते हैं कि ताड़ी में नशा जरूर है, लेकिन ताड़ी खुराक है और साथ ही दूसरी खुराक को पचाने में मदद देती है। इस दलील पर मैंने बहुत विचार किया और इस बारे में काफी पढ़ा, लेकिन ताड़ी पीने वाले बहुत गरीबों की जो दुर्दशा मैंने देखी है उससे मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि मनुष्य की खुराक में ताड़ी की कोई जगह नहीं हो सकती।

जो गुण ताड़ी में बतलाए जाते हैं वे सब हमें दूसरी खुराक से मिल जाते हैं। ताड़ी ताड़ और खजूर के रस से बनती है। उसके शुद्ध रस में नशा बिल्कुल नहीं है। शुद्ध रूप में रहने पर इसे नीरा कहा जाता है। इस नीरा को असली हालत में पीने पर बहुतों को साफ पाखाना आता है। मैंने स्वयं नीरा पीकर देखा है। अपने पर मैंने यह असर नहीं पाया। पर वह खुराक का काम बखूबी करती है। चाय वगैरा के बदले में आदमी सुबह ही नीरा पी ले तो उसे और कुछ खाने या पीने की जरूरत नहीं रह जानी चाहिए। नीरा को ईख के रस की तरह पकाने पर उससे बहुत बढ़िया गुड़ बनता है। मुल्क में कई तरह के ताड़ और खजूर, बिना मेहनत के उगते हैं। उन सबमें से नीरा निकल सकती है। नीरा ऐसी चीज है कि जहाँ निकले वहाँ उसे तुरन्त पिया जाय तो कोई जोखिम नहीं रहती। उसमें मादकता जल्दी पैदा हो जाती है। इसलिए जहाँ इसका इस्तेमाल तुरंत न हो सकता हो, वहाँ इसका गुड़ बना लिया जाय तो यह ईख के गुड़ का काम देता है। कुछ लोग यह मानते हैं कि यह ईख के गुड़ से ज्यादा गुणकारी है। इसमें मिठास कम होने की वजह से ईख के गुड़ की अपेक्षा यह अधिक परिमाण में खाया जा सकता है। ग्रामोद्योग-संघ द्वारा ताड़-गुड़ का खासा प्रचार हुआ है। अभी इससे बहुत ज्यादा होने की जरूरत है। जिन ताड़ों में से ताड़ी बनाई जाती है, उनमें से गुड़ बनाया जाय तो हिन्दुस्तान में गुड़, खांड की कमी ही न रहे और गरीबों को सस्ते में बढ़िया गुड़ मिल सके। ताड़-गुड़ में से खांड, चीनी दोनों बन सकती हैं। पर गुड़, गुण में खांड और चीनी से बहुत बढ़कर है। गुड़ में जो क्षार हैं वे खांड और चीनी में नहीं रह जाते। जो हालत बिना चोकर के आटे या बिना कन के चावल की है वही बिना क्षार की चीनी की समझनी चाहिए। खुराक के अपनी स्वाभाविक स्थिति में होने पर हमें उसमें से अधिकाधिक सत्त्व मिलता है।

ताड़ी की चर्चा करते हुए अनायास नीरा का उल्लेख करना पड़ा और उसके सिलसिले में गुड़ का। लेकिन शराब के बारे में अभी और कहना है। शराब की बुराई का जितना कड़ुआ अनुभव मुझे हुआ है उतना सार्वजनिक कार्यकर्ताओं में से शायद ही और किसी को हुआ होगा। दक्षिण अफ्रीका में गिरमिट में जाने वाले हिन्दुस्तानियों में से बहुतों को शराब पीने की आदत पड़ी होती है। वहाँ का कानून है कि एक हिन्दुस्तानी शराब घर पर नहीं ले जा सकता। जितनी पीना चाहे शराबखाने में जाकर पिये। औरतें शराब की शिकार होती हैं। उनकी जो दशा मैंने देखी है वह अत्यंत करुणाजनक थी। उसे देखने वाला कभी शराब का समर्थन न करेगा। वहाँ के हब्शियों को साधारणतः अपनी मूल स्थिति में शराब पीने की आदत नहीं थी। कहना होगा कि उनका तो शराब ने सत्यानाश ही कर डाला है। बहुत-से हब्शी मजदूर अपनी कमाई शराब में स्वाहा करते पाये जाते हैं। उनका जीवन भारमय बन जाता है। अच्छे-अच्छे समझदार माने जाने वाले अंग्रेजों को मैंने नालियों में लोटते देखा है। यह अतिशयोक्ति नहीं है। लड़ाई के दिनों में जिन्हें ट्रांसवाल छोड़ना पड़ा था ऐसे गोरों में से एक को मैंने अपने यहाँ रखा था। वह इंजीनियर था। शराब न पीये रहने की हालत में तो उसके सब लक्षण अच्छे थे। वह थियोसोफिस्ट था; लेकिन उसे शराब की लत थी। पीने पर वह बिल्कुल पागल हो जाता था। उसने शराब छोड़ने की बहुत कोशिश की; लेकिन जहाँ तक मैं जानता हूँ, अंत तक वह सफल न हो सका।

दक्षिण अफ्रीका से लौटने पर भी दुःखदायी अनुभव ही हुए। कितने ही राजा शराब की बुरी लत के कारण बिगड़ गए और बिगड़ रहे हैं। जो राजाओं के लिए सही है वही कम-बेश बहुत से धनी युवकों के लिए भी कहा जा सकता है। मजदूरों की हालत देखी जाय तो वह भी करुणाजनक ही है। पाठकों को इसमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि ऐसे कटु अनुभवों के पश्चात मैं क्यों मद्यपान का भारी विरोधी हो गया हूँ।

एक वाक्य में कहूँ तो मद्यपान से मनुष्य शरीर, मन और बुद्धि से हीन हो जाता है और पैसे तो खोता ही है। *'आरोग्य की कुंजी' से*

1. निजी विद्यालयों का समय शिविरा पंचांग के अनुसार ही रखने में सम्बन्ध में। □ 2. राजकीय प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में पुस्तकालय की स्थापना बाबत। □ 3. हितकारी निधि का वर्ष 2012-13 का वार्षिक अंशदान राज्य कर्मचारियों से अनिवार्य रूप से वसूल कर भिजवाने बाबत। □ 4. राजस्थान सरकार द्वारा प्रकाशित पंचांग (कलेण्डर) 2013 में घोषित राजकीय अवकाशों के क्रम में शिक्षा विभागीय पंचांग (शिविरा पंचांग) 2012-13 में संशोधन बाबत। □ 5. स्काउट-गाइड ग्रुप पंजीकरण बाबत। □ 6. राज्य सरकार द्वारा घोषित सार्वजनिक एवं ऐच्छिक अवकाश।

1. निजी विद्यालयों का समय शिविरा पंचांग के अनुसार ही रखने के सम्बन्ध में

• कार्यालय निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर • परिपत्र • प्रायः इस प्रकार के समाचार प्रकाशित होते रहते हैं कि निजी शिक्षण संस्थान विद्यालय का समय शिविरा पंचांग के अनुसार नहीं रखते हैं जिसके फलस्वरूप विद्यार्थियों को अनावश्यक रूप से परेशान होना पड़ता है। निजी विद्यालयों का समय शिविरा पंचांग के अनुसार ही रखने के सम्बन्ध में विभाग द्वारा पूर्व में भी दिनांक 5.07.10 को परिपत्र जारी किया गया था।

अतः पुनः निर्देशित किया जाता है कि राज्य में संचालित राजकीय/गैर राजकीय विद्यालयों का समय एवं राजकीय अवकाश के दिन विद्यालयों में भी अवकाश शिविरा पंचांग एवं राज्य सरकार के दिशानिर्देशों के अनुसार रखने की कठोरता से पालना करें। • **ह., निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।** • क्रमांक : शिविरा/प्रारं/शैक्षिक/एबी/3568/वौ-2/वि.पारी/07-09 दिनांक 07.12.12

2. राजकीय प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में पुस्तकालय की स्थापना बाबत

• कार्यालय निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर • क्रमांक : शिविरा/प्रारं/शैक्षिक/एबी/पुस्त.स्था./11-12 दिनांक : 10.12.12 • विषय : राजकीय प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में पुस्तकालय की स्थापना बाबत। • प्रसंग : इस कार्यालय के पृष्ठांकन पत्र दिनांक 12.7.11 एवं राज्य सरकार का पत्रांक 358 दिनांक 6.12.12 • उपर्युक्त विषयान्तर्गत प्रासंगिक पत्र दिनांक 12.7.11 की ओर आपका ध्यान आकृष्ट कर निर्देशित किया जाता है कि विद्यालय निरीक्षण के दौरान यह देखने में आया है कि प्रायः विद्यालयों में अभी तक पुस्तकालय की स्थापना विधिवतरूप से नहीं हो पाई है जबकि इस हेतु गत दो वर्षों से सर्व शिक्षा अभियान के तहत ग्रान्ट भी आवंटन की जा रही है।

आपको पुनः निर्देशित किया जाता है कि सर्व शिक्षा अभियान द्वारा दिये गये निर्देशों के तहत समस्त राजकीय प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में तत्काल पुस्तकालय की स्थापना करवाकर ग्रान्ट के अनुरूप नवीन पुस्तकों का क्रय करवावें तथा पुरानी पुस्तकों को भी पुस्तकालय में अध्ययन हेतु संधारित करावें, साथ ही पुस्तकालय हेतु कालांश निर्धारित किया गया है उसकी पालना में विद्यार्थियों को आवश्यक रूप से पुस्तकें पढ़ने हेतु प्रेरित करें ताकि पुस्तकालय का अधिकाधिक उपयोग हो सके एवं विद्यार्थियों में अध्ययन की रुचि भी पैदा हो सके। • **ह., उप निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।**

• कार्यालय निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर • क्रमांक : शिविरा/प्रारं/शैक्षिक/एबी/3521/कालांश/2009 दिनांक : 09.05.12 • विषय : कक्षा 6 व 7 के लिए नई विषयवार कालांश व्यवस्था जारी करने बाबत। • उपर्युक्त विषयान्तर्गत कक्षा 6 व 7 के लिए एनसीईआरटी पाठ्यक्रम जो सत्र 2012-13 से प्रारम्भ हुआ है के अन्तर्गत निम्नानुसार कालांश व्यवस्था एवं आवश्यक निर्देश इस पत्र के साथ जारी किये जा रहे हैं, जिन्हें आप अपने अधीनस्थ समस्त विद्यालयों के संस्था प्रधानों को पालनार्थ जारी करावें–

क्र.सं.	विषय	कालांश व्यवस्था
1.	अंग्रेजी	6
2.	हिन्दी	6
3.	संस्कृत	6
4.	गणित	6
5.	विज्ञान	6
6.	सामाजिक विज्ञान	6
7.	कार्यानुभव	2
8.	कला शिक्षा	2
9.	पुस्तकालय	1
10.	स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा	2
11.	निदानात्मक शिक्षण	5
	योग	**48 कालांश प्रति सप्ताह**

आप द्वारा की गई कार्यवाही से इस कार्यालय को अवगत करावें। • **ह., निदेशक।**

3. हितकारी निधि का वर्ष 2012-13 का वार्षिक अंशदान राज्य कर्मचारियों से अनिवार्य रूप से वसूल कर भिजवाने बाबत

• कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर • क्रमांक : शिविरा/हिनि/28203/2012-13 दिनांक : 10.12.12 • विषय : हितकारी निधि का वर्ष 2012-13 का वार्षिक अंशदान राज्य कर्मचारियों से अनिवार्य रूप से वसूल कर भिजवाने बाबत। • राज्य सरकार के आदेश क्रमांक प.21(ग)2/95 दिनांक 02.08.2002 के द्वारा हितकारी निधि में वर्ष 2012-13 का अंशदान राज्य के समस्त अधिकारियों/व्याख्याताओं/वरिष्ठ अध्यापकों/शारीरिक शिक्षकों/उद्योग शिक्षकों/पुस्तकालयाध्यक्षों/कला अध्यापकों/प्रयोगशाला सहायकों/कार्यालय अधीक्षक/कार्यालय सहायक/वरिष्ठ लिपिकों/कनिष्ठ लिपिकों/जमादार एवं चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों (समस्त वर्ग के राज्य कर्मचारी) से वार्षिक अंशदान की निर्धारित दर से अनिवार्य रूप से वसूल कर भिजवाए जाने का प्रावधान किया हुआ है।

हितकारी निधि हेतु अंशदान की निर्धारित दरें : 1. समस्त राजपत्रित अधिकारी (स्कूल व्याख्याता सहित) – 50/- प्रति वर्ष; **2.** व. अ./अधीक्षक/कार्यालय सहायक एवं समकक्ष – 30/- प्रति वर्ष; **3.** अध्यापक/व.लि./क.लि./प्र.शा.से./प्र.शा.स./जमादार/च.श्रे.क. एवं समकक्ष – 20/- प्रति वर्ष।

हितकारी निधि कल्याणकारी योजना का मुख्य उद्देश्य : इस कल्याणकारी योजना के राज्य कर्मचारियों से प्राप्त अंशदान राशि से कर्मचारियों के निधन पर उनके आश्रितों को रुपये 7000/- एवं दुर्घटना में निधन होने पर रुपये 10000/-, गम्भीर बीमारी पर उनको तथा परिवार के किसी भी सदस्य की बीमारी पर रुपये 5000/- तक की सहायता दी जाती है। शिक्षा विभागीय राज्य कर्मचारी/अध्यापकों के 100 बच्चों को जो व्यावसायिक शिक्षा में प्रथम वर्ष में अध्ययनरत होने पर रुपये 1500/- से रुपये 2500/- तक की सहायता दिये जाने का प्रावधान किया हुआ है।

दान स्वरूप राशि का संकलन : इस कल्याणकारी योजना में दानस्वरूप भी राशि लिये जाने का प्रावधान है, दान की कोई सीमा नहीं है। दानदाताओं से सम्पर्क करके दान स्वरूप राशि दिये जाने हेतु प्रेरित किया जाये ताकि कोष में राशि की बढ़ोत्तरी होकर अन्य कल्याणकारी योजनाओं में इसका उपयोग किये जाने में सहायता मिल सके। राज्य कर्मचारियों को भी अंशदान के अतिरिक्त दान का भी अधिकाधिक सहयोग दिए जाने हेतु प्रेरित किया जावे। दान स्वरूप राशि भिजवाते समय दानदाता का नाम, पता एवं राशि का उल्लेख अवश्य करें ताकि दानदाता को धन्यवाद का पत्र भेजा जा सके।

गत वर्ष उत्साहवर्द्धक सहयोग : गत वर्ष इस कल्याणकारी योजना में आपका सहयोग उत्साहवर्द्धक रहा जिससे हितकारी निधि कोष में वृद्धि हो सकी। इसके लिए आप सभी धन्यवाद के पात्र हैं।

अंशदान एवं दान स्वरूप प्राप्त राशि निम्न पते पर भेजी जावे : प्राप्त राशि बैंक ड्राफ्ट द्वारा ही भिजवाई जावे। राशि का बैंक ड्राफ्ट अध्यक्ष हितकारी निधि, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर के नाम से बनवाकर भिजवाया जावे।

अतः आप राज्य के समस्त वर्ग के अधिकारियों, अध्यापकों, मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारियों से वर्ष 2012-13 का अंशदान जनवरी 2013 से अनिवार्य रूप से लेकर एवं दानदाताओं से दान स्वरूप राशि प्राप्त कर राशि का बैंक ड्राफ्ट बनवाकर भिजवायें तथा इस कल्याणकारी योजना को सफल बनाने में आप सभी सहयोगी बनें। **• ह., निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।**

4. राजस्थान सरकार द्वारा प्रकाशित पंचांग (कलेण्डर) 2013 में घोषित राजकीय अवकाशों के क्रम में शिक्षा विभागीय पंचांग (शिविरा पंचांग) 2012-13 में संशोधन बाबत

• कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर • कार्यालय आदेश • राजस्थान सरकार द्वारा प्रकाशित पंचांग (कलेण्डर) 2013 में घोषित राजकीय अवकाशों के क्रम में शिक्षा विभागीय पंचांग (शिविरा पंचांग) 2012-13 में निम्नानुसार संशोधन किया जाता है–

क्र. सं.	शिविरा पंचांग 2012-13 में घोषित अवकाश	अवकाश का प्रकार	राजस्थान सरकार के कलेण्डर अनुसार संशोधित अवकाश
1.	24 अप्रैल, 2013	महावीर जयन्ती	23 अप्रैल, 2013

• ह., निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर। • क्रमांक : शिविरा-मा/मा-स/22418/2012-13 दिनांक 20.12.2012

5. स्काउट-गाइड ग्रुप पंजीकरण बाबत्

• कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर • क्रमांक : नि/मा.शि/बीकानेर/स्काउट-गाइड/2012-13/97 दिनांक : 20.12.2012 • विषय : स्काउट-गाइड ग्रुप पंजीकरण बाबत्। • माननीय मुख्यमंत्री द्वारा वर्ष 2012-13 की बजट घोषणा के अन्तर्गत राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड संगठन द्वारा मण्डल स्तर पर बेसिक कोर्सेज का आयोजन किया गया जिसमें आपके जिले की सहभागिता संख्या (परिशिष्ट संख्या-1) के अनुसार रही है।

बेसिक कोर्सेज में प्रशिक्षण प्राप्त समस्त स्काउटर/गाइडर द्वारा स्काउट गाइड ग्रुप का पंजीकरण का कार्य अब तक पूर्ण नहीं करवाया गया है। अतः आपके जिला क्षेत्र के ग्रुपों को 31 जनवरी 2013 तक ग्रुप पंजीकरण करवाने बाबत निर्देशित करावें। उपर्युक्त तिथि तक ग्रुप पंजीकरण की कार्यवाही पूर्ण नहीं की जाती है तो सम्बन्धित प्रधानाचार्य/प्रधानाध्यापक व अध्यापक/अध्यापिका के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही अमल में लाई जाने वाली कार्यवाही प्रस्तावित की जाए। **• ह., निदेशक, मा.शि. निदेशालय, राजस्थान, बीकानेर।** • क्रमांक : नि/मा.शि./बीकानेर/स्काउट-गाइड/2012-13/97 दिनांक : 20/12/2012 ।

6. राज्य सरकार द्वारा घोषित सार्वजनिक एवं ऐच्छिक अवकाश

• राजस्थान सरकार, सामान्य प्रशासन (ग्रुप-6) विभाग • क्रमांक : प.6(2)साप्र/6/2012 जयपुर, दिनांक : 9 नवम्बर, 2012 • विज्ञप्ति • कलैण्डर वर्ष 2013 (ग्रेगोरियन) ई. शक संवत 1934-35 के दौरान निम्नलिखित दिनों को राज्य सरकार सम्पूर्ण राज्य में सार्वजनिक अवकाश/ऐच्छिक अवकाश घोषित करती है–

सार्वजनिक अवकाश

क्र. सं.	अवकाश का नाम	राष्ट्रीय कलैण्डर	ग्रेगोरियन दिनांक	दिन का नाम
1.	गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती	28 पौष, 1934	18.01.2013	शुक्रवार
2.	बारावफात	5 माघ, 1934	25.01.2013	शुक्रवार
3.	गणतंत्र दिवस	6 माघ, 1934	26.01.2013	शनिवार
4.	महाशिवरात्रि	19 फाल्गुन, 1934	10.03.2013	रविवार
5.	होलिका दहन	5 चैत्र, 1935	26.03.2013	मंगलवार
6.	धूलण्डी	6 चैत्र, 1935	27.03.2013	बुधवार
7.	गुड फ्राइडे	8 चैत्र, 1935	29.03.2013	शुक्रवार
8.	चेटीचण्ड	21 चैत्र, 1935	11.4.2013	गुरुवार
9.	डॉ. अम्बेडकर जयन्ती	24 चैत्र, 1935	14.04.2013	रविवार
10.	रामनवमी	29 चैत्र, 1935	19.04.2013	शुक्रवार
11.	महावीर जयन्ती	3 वैशाख,1935	23.04.2013	मंगलवार
12.	प्रताप जयन्ती	21ज्येष्ठ, 1935	11.06.2013	मंगलवार
13.	ईदुलफितर	18श्रावण,1935	09.08.2013	शुक्रवार

क्र. सं.	अवकाश का नाम	राष्ट्रीय कलैण्डर	ग्रेगोरियन दिनांक	दिन का नाम
14.	स्वतंत्रता दिवस	24श्रावण,1935	15.08.2013	गुरुवार
15.	रक्षाबंधन	29श्रावण,1935	20.08.2013	मंगलवार
16.	जन्माष्टमी	6 भाद्रपद,1935	28.08.2013	बुधवार
17.	रामदेव जयन्ती व तेजा दशमी	23भाद्रपद,1935	14.09.2013	शनिवार
18.	महात्मा गाँधी जयन्ती	10 आश्विन, 1935	02.10.2013	बुधवार
19.	नवरात्र स्थापना	13 आश्विन, 1935	05.10.2013	शनिवार
20.	दुर्गाष्टमी	20 आश्विन, 1935	12.10.2013	शनिवार
21.	विजयदशमी	21 आश्विन, 1935	13.10.2013	रविवार
22.	ईदुलजुहा	24 आश्विन, 1935	16.10.2013	बुधवार
23.	दीपावली	12 कार्तिक, 1935	03.11.2013	रविवार
24.	गोवर्धन पूजा	13 कार्तिक, 1935	04.11.2013	सोमवार
25.	भैया दोज	14 कार्तिक, 1935	05.11.2013	मंगलवार
26.	मोहर्रम (ताजिया)	24 कार्तिक, 1935	15.11.2013	शुक्रवार
27.	गुरुनानक जयन्ती	26 कार्तिक, 1935	17.11.2013	रविवार
28.	क्रिसमस डे	4 पौष, 1935	25.12.2013	बुधवार

ऐच्छिक अवकाश

क्र. सं.	अवकाश का नाम	राष्ट्रीय कलैण्डर	ग्रेगोरियन दिनांक	दिन का नाम
1.	क्रिश्चियन नव वर्ष दिवस	11 पौष,1934	01.01.2013	मंगलवार
2.	पार्श्वनाथ जयन्ती	17 पौष, 1934	07.01.2013	सोमवार
3.	देवनारायण जयन्ती	28 माघ,1934	17.02.2013	रविवार
4.	विश्वकर्मा जयन्ती	4 फाल्गुन,1934	23.02.2013	शनिवार
5.	स्वामी रामचरण जयन्ती	5 फाल्गुन,1934	24.02.2013	रविवार
6.	गुरु रविदास जयन्ती	6 फाल्गुन,1934	25.02.2013	सोमवार
7.	गाडगे महाराज जयन्ती	9 फाल्गुन,1934	28.02.2013	गुरुवार
8.	महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती	16फाल्गुन,1934	07.03.2013	गुरुवार
9.	बैशाखी	23 चैत्र, 1935	13.04.2013	शनिवार
10.	सैन जयन्ती	16बैशाख,1935	06.05.2013	सोमवार
11.	परशुराम जयन्ती	22बैशाख,1935	12.05.2013	रविवार
12.	बुद्ध पूर्णिमा	4 ज्येष्ठ, 1935	25.05.2013	शनिवार
13.	शब-ए-बारात	3 आषाढ,1935	24.06.2013	सोमवार
14.	गुरु पूर्णिमा	31आषाढ,1935	22.07.2013	सोमवार
15.	जुमातुलविदा	11श्रावण,1935	02.08.2013	शुक्रवार
16.	थदडी	5 भाद्र, 1935	27.08.2013	मंगलवार
17.	गणेश चतुर्थी	18 भाद्र, 1935	09.09.2013	सोमवार
18.	संवत्सरी	19 भाद्र, 1935	10.09.2013	मंगलवार
19.	अनन्त चतुर्दशी	27 भाद्र, 1935	18.09.2013	बुधवार
20.	महानवमी	21आश्विन,1935	13.10.2013	रविवार
21.	करवा चौथ	30 आश्विन, 1935	22.10.2013	मंगलवार
22.	पार्श्वनाथ जयन्ती	6 पौष, 1935	27.12.2013	शुक्रवार

नोट : 1. वर्ष में समस्त शनिवार व रविवार का सामान्य सार्वजनिक अवकाश रहेगा। 2. निगोशिएबल इन्स्ट्रूमेंट एक्ट 1881 की धाराओं के अन्तर्गत बैंक कर्मचारियों के लिए सार्वजनिक अवकाश वित्त (मार्गोपाय) विभाग द्वारा पृथक से प्रकाशित किया जाता है। 3. स्थानीय मेला/त्यौहार आदि के उपलक्ष्य में प्रत्येक जिले में सम्बन्धित जिला कलेक्टर एवं दिल्ली स्थित राजकीय कार्यालयों में प्रमुख निवासीय/निवासीय आयुक्त कार्यालय, नई दिल्ली दो स्थानीय अवकाश घोषित करेंगे। यदि बाद में इन तिथियों के दिन राज्य सरकार के द्वारा कोई राजपत्रित अवकाश घोषित किया जाता है तो भी यह अपरिवर्तनीय रहेगा। स्थानीय अवकाश घोषित कर, आदेश की प्रति सम्बन्धित जिला कलेक्टर इस विभाग को तुरन्त भिजवाएँगे। 4. कोटा जिले में जन्माष्टमी के बाद आने वाला दिन स्वतः जन्माष्टमी के स्थान पर अवकाश के रूप में माना जावेगा। 5. ऐच्छिक अवकाश की सूची में से कोई भी दो अवकाश प्रत्येक कर्मचारी को चुनकर उपभोग करने की अनुज्ञा प्रदान की जावेगी। 6. मुस्लिम अवकाश चन्द्रमा दिखाई देने पर निर्भर करेंगे। 7. यह आदेश केवल राजकीय कार्यालयों पर लागू होंगे। • **ह., चन्द्र मोहन मीणा, प्रमुख शासन सचिव।**

शिविरा पंचांग माह जनवरी, 2013

कार्य दिवस 24 • रविवार 04 • अवकाश 03 • उत्सव 05 • 4 जनवरी– जिला मुख्यालय पर लुई ब्रेल जयंती का आयोजन। **8 जनवरी**– बालिका शिक्षा (नवाचारी) प्रारम्भिक शिक्षा के अन्तर्गत ''अध्यापिका मंच'' की तृतीय बैठक का आयोजन। **12 जनवरी**– स्वामी विवेकानन्द जयन्ती (राष्ट्रीय युवा दिवस उत्सव), केरियर डे का आयोजन (माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालय), मीना मंच के अन्तर्गत ''तृतीय मौहल्ला बैठक'' एवं ''दादी–नानी दिवस'' का आयोजन। **14 जनवरी**– मकर सक्रांन्ति (उत्सव)। **14–31 जनवरी**– जीवजन्तु संरक्षण पखवाड़े का आयोजन। **18 जनवरी**– गुरु गोविन्द सिंह जयंती (अवकाश–उत्सव)। **19 जनवरी**– महाराणा प्रताप पुण्य तिथि, अभिभावकों एवं शिक्षकों की संयुक्त बैठक आयोजित कर अर्द्धवार्षिक परीक्षा परिणाम के प्रगति पत्रों का वितरण एवं शैक्षिक प्रगति हेतु विचार–विमर्श, शिक्षा शनिवार आयोजन एवं विद्यालय प्रबन्धन समिति की बैठक। **20–22 जनवरी**– विद्यार्थियों की द्वितीय स्वास्थ्य जांच एवं अभिलेख संधारण। **23 जनवरी**– सुभाष चन्द्र बोस जयन्ती, देश प्रेम दिवस (उत्सव)। **24 जनवरी**– बालिका दिवस। **25 जनवरी**– बारावफात (अवकाश चन्द्रदर्शनानुसार)। **26 जनवरी**– गणतंत्र दिवस (अवकाश–उत्सव अनिवार्य), एनपीईजीईएल अन्तर्गत श्रेष्ठ विद्यालय/शिक्षक को पुरस्कार, डाइस स्कूल रिपोर्ट कार्ड का जनवाचन। **30 जनवरी**– शहीद दिवस (प्रातः 11.00 बजे दो मिनट का मौन), संस्था प्रधान द्वारा स्टाफ की बैठक लेकर परीक्षा परिणाम उन्नयन की कार्य योजना बनाना। **नोट :–** 1. कम्प्यूटर, राज्य व जिला स्तरीय प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण। 2. प्रत्येक पाठ पढ़ाने के पश्चात कार्य पुस्तिकाओं में अभ्यास कार्य कराना।

विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम

माह : जनवरी, 2013 **प्रसारण समय : दोपहर 2.40 से 3.10 तक**

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठ्यपुस्तक का नाम	पाठ का नाम
1.01.2013	मंगलवार	जयपुर	10	परीक्षामाला	सामाजिक विज्ञान	
2.01.2013	बुधवार	जोधपुर	10	परीक्षामाला	फाउण्डेशन ऑफ इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी	
3.01.2013	गुरुवार	उदयपुर	10	परीक्षामाला	शारीरिक एवं स्वास्थ्य शिक्षा	
4.01.2013	शुक्रवार	बीकानेर		गैरपाठ्यक्रम		लुईब्रेल जयन्ती
5.01.2013	शनिवार	जयपुर	12	परीक्षामाला	अर्थशास्त्र	
7.01.2013	सोमवार	जोधपुर	12	परीक्षामाला	अंग्रेजी साहित्य	
8.01.2013	मंगलवार	उदयपुर	12	परीक्षामाला	अनिवार्य अंग्रेजी	
9.01.2013	बुधवार	बीकानेर	10	परीक्षामाला	राजस्थान अध्ययन	
10.01.2013	गुरुवार	जयपुर	12	परीक्षामाला	गृह विज्ञान	
11.01.2013	शुक्रवार	जोधपुर	12	परीक्षामाला	उर्दू साहित्य	
12.01.2013	शनिवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम		स्वामी विवेकानन्द जयन्ती, राष्ट्रीय युवा दिवस
14.01.2013	सोमवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम		मकर संक्रान्ति
15.01.2013	मंगलवार	बीकानेर	10	परीक्षामाला	1. समाजोपयोगी उत्पादक कार्य एवं समाज सेवा 2. कला शिक्षा	
16.01.2013	बुधवार	जोधपुर	12	परीक्षामाला	व्यवसाय अध्ययन	
17.01.2013	गुरुवार	उदयपुर	12	परीक्षामाला	संस्कृत साहित्य	
19.01.2013	शनिवार	बीकानेर		गैरपाठ्यक्रम		महाराणा प्रताप पुण्यतिथि
21.01.2013	सोमवार	जयपुर	12	परीक्षामाला	कृषि	
22.01.2013	मंगलवार	जोधपुर	12	परीक्षामाला	राजस्थान अध्ययन	
23.01.2013	बुधवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम		सुभाषचन्द्र बोस जयन्ती, देशप्रेम दिवस
24.01.2013	गुरुवार	बीकानेर	12	परीक्षामाला	अनिवार्य हिन्दी	
28.01.2013	सोमवार	जयपुर	12	परीक्षामाला	गणित	
29.01.2013	मंगलवार	जोधपुर	12	परीक्षामाला	रसायन विज्ञान	
30.01.2013	बुधवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम		शहीद दिवस
31.01.2013	गुरुवार	बीकानेर	12	परीक्षामाला	कम्प्यूटर विज्ञान	

नवीनता, नवाचार - शिक्षक के आधार

(शिक्षक रामलाल की व्यथा कथा)

❑ शिवरतन थानवी

कौन शिक्षक नहीं चाहता कि उसका समाज में, स्कूल में और सबसे अधिक उसकी अपनी कक्षा में प्रभाव हो? प्रभावकारी बनने के लिए कुछ न कुछ नवीनता या विशेषता होनी जरूरी है।

रामलाल बहुत सोचा करता था। कक्षा में और स्कूल में ही नहीं, समाज में भी कोई न कोई नया काम करने के बारे में प्रतिदिन कुछ न कुछ सोचता ही था। वह जो भी नया काम सोचता उसे पूरी ईमानदारी और निष्ठा से गम्भीरतापूर्वक करता था। लेकिन जैसा कि आप इस पुस्तक (रामलाल की व्यथा-कथा, अरुण ओझा : इंदू गोस्वामी, अरावली प्रकाशन, सी-37, बर्फखाना, राजापार्क, जयपुर-302004, मूल्य 200 रुपए।) में देखेंगे, उसे या तो हास्यास्पदता हाथ लगी या हाथ लगी गहरी उदासी। तभी तो लेखकद्वय श्री अरुण ओझा और श्री इंदू गोस्वामी को उसकी इन साहसी गतिविधियों का रूप-अरूप आपके समक्ष रखना पड़ा। श्रीलाल शुक्ल के 'राग दरबारी' के बाद अब एक और यह सम्पूर्ण व्यंग्यात्मक कथा आई है। गांवों के शिक्षा-संसार की खबर लेने वाला यह एक बड़ा सशक्त व्यंग्य है। इस व्यंग्य-कथा में कुल 15 अध्याय हैं। हर अध्याय में कोई न कोई नवाचार है– कोई नई योजना, कोई नया प्रस्ताव, कोई नई प्रायोजना। कुछ नमूने देखिए।

रामलाल है तो गांव की स्कूल का अध्यापक लेकिन उसका सोच बहुत व्यापक व रचनात्मक है। कई बातें सोचता है, कई काम करता है। निष्क्रिय कभी नहीं बैठता। स्कूल, गांव - कहीं नहीं।

एक दिन सोचा ग्रामीण महिलाओं का उत्थान कैसे किया जाए? शहरी-महिलाओं के समकक्ष उन्हें कैसे लाया जाए? महिलाओं को इकट्ठा किया, बात की, फैसला किया कि 'किटी पार्टी' की तरह 'मेलजोल कार्यक्रम' आयोजित हो महिलाओं का जहाँ युवा व प्रौढ़ महिलाएँ आपसी सुख-दुःख की चर्चा करें, बिना घूँघट के और गोठ के रूप में खान-पान भी हो। दूसरी गतिविधि हो 'महिला मनोरंजन केन्द्र' की, शहर के लेडीज क्लब की तरह ताश-पत्ती, टेबिल-टेनिस आदि खेलों का प्रबंध हो तथा फैशन के कपड़े, गहने व सौन्दर्य प्रसाधनों के नवीन आइटम्स के साथ नारी व समाज उत्थान की चर्चा भी हो। सोचा, सरपंच के कान में डाल दें, अनुमति ले लें। बात की उनसे तो उन्होंने हाँ भरी और कहा, ''काले सूँ ई शुरू कर देसूँ।'' और कल खबर आई अखबार में कि सरपंच की अभिशंसा पर मास्टरजी का दूसरे गांव स्थानान्तरण कर दिया गया।

नए गांव की बस धक्कामार। गड्ढे, कंकड़, धूल पर हिचकोले खाती बस। मास्टरजी का ज्ञान-कोश अखबारों को पढ़-पढ़कर भारी भरकम। नई टेक्नोलॉजी वाली सड़कें, दो-लेन, चार-लेन व आठ लेन तक की सड़कें, स्वर्णिम चतुर्भुज सड़क योजना, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना आदि का सब ज्ञान उनको। अकाल राहत कार्य से गांव की सड़क को सुधरवाने की अर्जी लिखी और सरपंच से हस्ताक्षर कराके गए कलेक्टर के पास। 'टीचर' नाम सुनते ही कलेक्टर भड़क गए। बोले, ''बच्चों को पढ़ाने की जगह गांव की पंचायती करते हो? वहाँ के लोगों में राजनीति कराते हो? सस्पेंड कर दूँगा।'' मास्टर जी मुँह लटका कर बैक टु पवेलियन।

रामलाल पाँचवीं कक्षा को सामाजिक अध्ययन भी पढ़ाता है। जानता है कि सभी समाजशास्त्री, बुद्धिजीवी, राजनीतिज्ञ अनेक सामाजिक कुरीतियों-विकारों का मूल कारण 'अशिक्षा' को ही मानते हैं। दहेज सबसे बड़ा विकार है। इसे दूर करने को समाज की शिक्षा करनी होगी। सामाजिक सोच में बदलाव लाना होगा। भीखी दादी का सहयोग मिला। हरजस गाने वाली सत्संग में चर्चा द्वारा 'महिला मंडली' की स्थापना हुई। बीच में असरदार और महिला आ गई। उसका नाम दाखां। भीखी दादी और दाखां में 36 का आंकड़ा। भीखी को दाखां फूटी आंखों भी नहीं सुहाती थी। सरपंच जी सहमत, लेकिन दाखां से मिल गए उप सरपंच। हो गया संग्राम। सामाजिक सुधार का मुद्दा आपसी सिर फुटौवल की तरफ ले जाने वाले विग्रह में बदल गया। रामलाल को चुप रह जाना पड़ा।

समाज न सही स्कूल में लाएँ सुधार का नवाचार, सोचा मास्टर रामलाल ने। आधुनिक हवा बहा दें उधर भी। फैशन परेड़ का प्रोग्राम बनाया छात्र-छात्राओं का। फिल्मी गाने बजाए– काँटा लगा, तू चीज बड़ी है मस्त मस्त, धूम मचा दे धूम। इनकी धुन पर कैटवॉक कराई। कैटवॉक हो तो कैटकॉल भी जरूरी होती है। कहा– चीखो, चिल्लाओ, जैसे माइकेल जैक्शन के गानों पर लोग चीखते चिल्लाते हैं। किसने देखा था माइकेल जैक्सन और किसने सुना था खुशी-नाखुशी का व चीखना चिल्लाना। मास्टर जी खुद ही पाँव-पटक हाथ उठा-उठा चीखे। रैम्प टूट गया गुरुजी और उनके मॉडल्स धड़ाम से गिरे। रैम्प के फट्टे दीमक खाए हुए बहुत पुराने सड़े-गले थे। गुरुजी सोचते रहे– ''गाँव के लोग मॉडर्न होना क्यों नहीं चाहते?''

अजीब-अजीब चिन्ताएँ सतातीं रामलाल को। उन्होंने तय किया कि छात्रों को वी.आई.पी. बनने का शिक्षण करेंगे। उन्हें जाति-समाज का स्वाभिमान याद दिलाया। ऊँचे उठो। समाज-शिरोमणि बनो। शिक्षक साथियों से, ग्राम सेवक

जी से, सब्जी वाले से बात की। किसी को रुचि नहीं थी। रामलाल सोचा करते कि अपने नामों को अंग्रेजी रूप दो जैसे जयकिशन सराफ का 'जैकी श्रॉफ' हुआ, सत्यनारायण गंगाराम पित्रोदा का 'सैम पिट्रोडा' हुआ वैसे ही अपने-अपने नामों को अंग्रेजी रूप देकर मॉडर्न बनो। नमूने के लिए एक छात्र सुण्डाराम कुम्हार का नाम चुना। कहा सुण्डा का करो 'एस' और राम का करो 'रम' (रम नाम अंग्रेजी है, हो भले शराब का नाम ही, जबकि राम नाम देसी है, मॉडर्न नहीं, अंग्रेजी भी नहीं) तथा कुम्हार से करो 'पॉटर'। कहो– 'एस.रम. पॉटर'। हो गई नवीनता, हो गए मॉडर्न।

कोई इसे छिछोरपन समझे तो समझे। रामलाल निष्ठापूर्वक गंभीर थे। यह भाषा का फण्डा यों आजमाया कि इंग्लिश एक इंटरनेशनल लैंग्वेज है। गांव की स्कूल के छात्र फूहड़ों जैसी भाषा का प्रयोग क्यों करें? इंग्लिश के बल पर ही हम प्रोग्रेस कर सकते हैं। इसी में उनको सामाजिक क्रांति की संभावना नजर आई। जॉन सैंट, ग्लोबल, इंटरनेशनल और पब्लिक हुए बिना और हैलोऽऽऽ, हाऊ आर यू, वाऽऽऽ व तथा ओ.के. आदि किए बिना उद्धार नहीं। उनका वश चलता तो वे स्कूल का जो नाम रखते वह नाम प्रायः ब्लैकबोर्ड पर लिख भी दिया करते थे– (आर.एल. माने रामलाल) ''आर.एल. ग्लोबल इंटरनेशनल पब्लिक स्कूल'' और सोचते कि ऐसा किए बिना हमारे ग्रामवासी बैकवर्ड रह जाएँगे।

देशी खेल खेलना भी गँवारपन की निशानी मानते थे। प्रस्ताव किया हैडमास्टर जी से कि रबर की बॉल ही सही, क्रिकेट, टेनिस, स्क्वैश खिलाएँ। नहीं मानी गई उनकी बात। तो सुझाव दिया (नया सुझाव उनके दिमाग में हरदम हाजिर रहता था, इतना उपजाऊ था उनका दिमाग), स्कूल को हाउसेज में बाँट दें और उनके नाम एकदम मॉडर्न रखें जैसे– स्टेलियन, टाइगर्स, लायन्स तथा लैपर्ड्स। हैडमास्टर ने यह प्रस्ताव भी नहीं माना और नाम रखे– टैगोर हाउस, गाँधी हाउस, नेहरू हाउस तथा तिलक हाउस। नहीं चली रामलाल की। गांव गांव ही रहा, शहर नहीं बन सका। शहर और गांव की दूरी रामलाल नहीं मिटा सके।

गांव के एक भाग से मुख्य अतिथि किसी को बनाते हैं तो गांव के दूसरे भाग वाले नाराज हो जाते हैं, यह रामलाल समझे ही नहीं। एक दिन एक फंक्शन में जब ऐसी ही भूल उन्होंने की तो गांव के दूसरे भाग के लोग दो जीपों में भरकर आए और धमकाया– ''तुम गांव में राजनीति करते हो?'' बेचारे आयोजक शिक्षक की सारी मेहनत बेकार गई सो अलग, लेने के देने पड़ गए। जे.ई.एन. हो चाहे सरपंच या तहसीलदार, किसी को भी बुलाने पर गांव में कैसी कुलबुलाहट होती है इसका बहुत बारीकी से यहाँ वर्णन किया गया है।

शिक्षक दिवस पर शिक्षक सम्मानित होते हैं। रामलाल को विचार आया– क्या शहरी अभिजात्य वर्ग के लिए ही हैं ये पुरस्कार? क्यों न ग्रामीण क्षेत्र की प्रतिभाएँ भी प्रोत्साहित हों? सरपंचजी की अनुमति ले गांव में समितियों, उप समितियों का गठन किया दुकानदारों, पटवारी, ग्रामसेवक आदि उपयुक्त और प्रभावी लोगों से बात करके। आमसभा भी बुलाई प्रस्तावों पर विचार के लिए। पंद्रह अगस्त को लोकगीत, संगीत, खेलकूद आदि की प्रतियोगिताएँ कराई। प्रथम आने वालों को पुरस्कार दिलवाए। विवाद उपजा कि सरपंच ग्रुप वाले पुरस्कार ले गए। उप सरपंच खेमे के लोग नाराज हुए। रामलाल के खिलाफ गांव में राजनीति करने की शिकायत हुई। जाँच हुई। जि.शि.अ. दफ्तर के बाबुओं को राजी करने में एड़ी-चोटी का जोर लगा। भविष्य में ऐसा करने से तौबा की।

और क्या-क्या गिनाएँ? क्या-क्या नहीं किया मास्टर रामलाल ने? ज्यों-ज्यों रामलाल गांव में या स्कूल में जागृति लाने की बात करता, बात उल्टी ही पड़ती। मैंने आपको मात्र ढाँचा बताया, एक खाका खींचा है। पूरी पुस्तक पढ़े बगैर इस खाके में रंग नहीं भरे जा सकते। इसलिए पूरी तो जरूर पढ़नी होगी। चित्र पूरा तभी बनेगा रामलाल की व्यथा-कथा का।

–मोची स्ट्रीट, फलौदी-342301 जोधपुर (राज.)

सकारात्मक सोच

❑ विष्णुदयाल शर्मा

कर्मणा मनसा वाचा यदभीक्ष्ण निषेवति।
तदेवापहरत्येंन तस्मात् कल्याणमाचरेत्॥

महात्मा विदुर ने कहा, व्यक्ति मन से, कर्म से जिस कार्य का चिन्तन करता है, वह कार्य उस पुरुष को अपनी ओर खींच लेता है। इसलिए सदा कल्याणकारी कार्यों को ही करें एवं चिन्तन भी उसी का करें।

मनुष्य जिस प्रकार का चिन्तन दिन रात करता है, वही चिन्तन उसको अपनी ओर खींच लेता है अतः मन, वचन एवं कर्म से व्यक्ति को सकारात्मक व कल्याणकारी कार्यों का चिन्तन करना चाहिए। जीवन में बहुत सी चीजें व परिस्थितियाँ जिसका हम कुछ भी नहीं कर सकते हैं, उसके लिए परेशान व उत्तेजित होना आसान है। नकारात्मक सोच असफलता का कारण बनता है। अगर हम सावधान नहीं हैं तो यह हमारे जीवन के सभी कोनों में चोरी से फैल सकती है। हम अपने आप को बहुत सी चीजों और अपनी विडम्बनाओं के बारे में शिकायत करते हुए पाते हैं। अगर हम अपने दिमाग का सामना कर सकते हैं तो रचनात्मक कार्यों में लगा सकते हैं एवं दिमाग का सही उपयोग कर सकते हैं। छोटी समस्याएँ चाहे वह प्रासंगिक या महत्वपूर्ण हो या नहीं को हम अतिशयोक्ति कर देते हैं। सबसे बढ़कर नकारात्मक सोच ईर्ष्या है जो कि हमारे एवं दूसरों के लिए बहुत ही घातक है। दूसरों की सफलता पर अंगुली उठाने से अच्छा है कि हम अपनी काबलियत को बढ़ाएँ और सफल बनें ईर्ष्यालु एवं उपहासजनक भाव को अपने से हमेशा दूर रखें।

सकारात्मक भाव– सकारात्मक भाव हमेशा अच्छे गुणों पर केन्द्रित एवं आशावादी होते हैं। व्यक्ति की कल्पना सकारात्मक विचारों एवं भावों को प्रोत्साहन का मार्ग एवं प्रसन्नता देती है। • लक्ष्य तय करें। • मैं इस काम को कैसे बेहतर ढंग से कर सकता हूँ। • दूसरों की प्रशंसा करनी आनी चाहिए। • दूसरों में अच्छाई ढूँढ़ें एवं नकारात्मक भावों से दूर रहें।

नकारात्मक भाव– अवगुणों की पृष्ठभूमि में नकारात्मक विचार होते हैं, जिससे असफलता मिलती है व आत्मविश्वास कमजोर होता है। • सफलता के बारे में सोच एवं उपलब्धियों को याद रखें। • सकारात्मक सोच व याद रखें। • सकारात्मक विचारों वाले व्यक्ति के साथ मेलजोल बढ़ाएँ। • बाधाओं से परेशान ना हो एवं नकारात्मक विचारों से दूर रहें। जीवन में सकारात्मक सोच ही सफलता का मूल मंत्र है।

–अध्यापक
रा.प्रा.वि., चांदावतों की ढाणी, गाजू,
पं.स. मूण्डवा (नागौर)

बच्चों में सृजनशीलता का विकास

❑ रामजीलाल घोड़ेला

सृजनशीलता क्या है? : सृजनशीलता के बारे में विभिन्न विद्वानों के मत अलग-अलग हैं। वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाला एक मनोवैज्ञानिक यह समझता है कि केवल प्रयोगशालाओं में कार्य करने वाला ही सृजनशील व्यक्ति है, क्योंकि वही प्रकृति को नये दृष्टिकोण से समझकर उसकी मौलिक विवेचना करता है। एक इंजीनियर समझता है कि वही सृजनशील है क्योंकि प्रकृति के स्रोतों का वही मौलिक रूपों में उपयोग कर सकता है। एक डॉक्टर समझता है कि वही मौलिक है क्योंकि वह प्राकृतिक रोगों से छुटकारा दिलाता है। किसान सृजनशील है क्योंकि वह प्रकृति से उपज प्राप्त करने का मौलिक कार्य करता है। इसी प्रकार शिक्षक सृजनशील है जो प्रकृति प्रदत्त मूल प्रवृत्ति, जन्म व्यवहारों को परिमार्जित कर उन्हें सामाजिक रूप प्रदान करता है। एक विद्यार्थी भी अपने को सृजनशील समझता है। इस प्रकार सृजनशीलता के सम्बन्ध में अलग-अलग लोगों के विभिन्न दृष्टिकोण है। इसके अतिरिक्त कुछ इसे कल्पना की दृष्टि से देखते हैं। कुछ चिन्तन की दृष्टि से, कुछ उत्पादन की दृष्टि से, कुछ मौलिकता की दृष्टि से तथा कुछ कार्य की दृष्टि से सृजनशीलता की व्याख्या करते हैं।

स्टेगनर एवं कार्वोस्की ने सृजनात्मकता के बारे में कहा है कि– ''किसी नई वस्तु का पूर्ण या आंशिक उत्पादन-सृजनात्मकता है।'' स्किनर ने कहा कि ''सृजनात्मक चिन्तन का अर्थ है कि व्यक्ति की भविष्यवाणियाँ या निष्कर्ष, नवीन, मौलिक अन्वेषणात्मक तथा असाधारण हो।'' सृजनात्मक चिन्तक वह है जो नये क्षेत्र की खोज करता है, नए निरीक्षण करता है, नई भविष्यवाणियाँ करता है और नये निष्कर्ष निकालता है। अतः हम यह कह सकते हैं कि सृजनात्मकता व्यक्ति की वह योग्यता है जिसके द्वारा किसी नए विचार या नई वस्तु का निर्माण करता है। इसके अन्तर्गत व्यक्ति की वह योग्यता भी सम्मिलित है जिसके द्वारा वह पूर्व प्राप्त ज्ञान का पुनर्गठन करता है।

सृजनशील बालक की पहचान की आवश्यकता : सृजनशील बालक राष्ट्र की अमूल्य सम्पत्ति होती है। अतः उनकी ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है। सृजनशील बालकों की ओर विशेष ध्यान देने के लिए यह आवश्यक है कि हम उनका सर्वप्रथम पता लगायें। (1) सृजनशील बालकों का पता लगाने से उनके व्यवहार, व्यक्तित्व तथा मानसिक योग्यताओं से सम्बन्धित हमारा ज्ञान व्यापक होगा। (2) सृजनशील बालकों का पता लगाने से ही उन्हें व्यक्तिगत शिक्षण प्रदान किया जा सकता है। (3) जब तक हम सृजनशील बालकों का पता नहीं लगाते, तब तक उन्हें समुचित मात्रा में शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन प्रदान नहीं कर सकते। (4) बालकों के सही मूल्यांकन के लिए सृजनशील बालकों का पता लगाना आवश्यक है। (5) कक्षा में अनेक दैनिक समस्याएँ इसलिए उत्पन्न होती है, क्योंकि हम बालकों की शैक्षिक व मानसिक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाते हैं। सृजनशील बालकों का पता लगाकर ही उनकी शैक्षिक व मानसिक पूर्ति की जा सकती है। (6) जब तक सृजनशील बालकों का पता नहीं लगा लिया जाता, तब तक उनकी सृजनात्मकता के विकास के लिए आवश्यक प्रयास भी नहीं किये जा सकते हैं।

सृजनशील बालकों की विशेषताएँ : 1. सृजनशील बालकों में मौलिकता एवं नवीनता का अद्भुत गुण होता है। 2. सृजनशील बालकों में बुद्धिलब्धि उच्च होती है। 3. इनमें सन्देह की मात्रा अधिक होती है, जिसके कारण वे प्रत्येक बहुप्रचलित धारणा की भी नये सिरे से जाँच करना चाहते हैं। 4. उनके व्यक्तित्व में जटिलता की मात्रा अधिक होती है। अतः अध्यापक के लिए उस बालक को समझना कठिन हो जाता है। 5. सृजनशील बालक में जिज्ञासा की मात्रा अधिक होती है, जिसके कारण वे प्रत्येक प्रश्न, धारणा, कार्य का पूरा-पूरा उत्तर चाहते हैं। 6. वे उन अस्पष्ट विचारों की ओर भी ध्यान देते हैं, जिन्हें सामान्य बालक लापरवाही के कारण छोड़ देते हैं। उनमें सामान्य बातों पर भी ध्यान केन्द्रित करने की शक्ति अधिक होती है। 7. इनमें साहस की मात्रा अधिक होती है। साहस के कारण वे ऐसे कार्यों को भी हाथ डाल लेते हैं, जिन्हें करने में सामान्य बालक डरते हैं। 8. इनमें संवेदनशीलता अधिक होती है, इसीलिए वे प्रत्येक कार्य को गंभीरता से लेते हैं। 9. उनके विचारों में व्यावहारिकता, वास्तविकता होती है। 10. ये बालक काफी लगनशील तथा परिश्रमी होते हैं।

बच्चों में सृजनशीलता का विकास : सृजनात्मकता को पल्लवित एवं पोषित करने के लिए उचित वातावरण एवं देखरेख की आवश्यकता होती है। यदि इन्हें उचित प्रशिक्षण, शिक्षा तथा अभिव्यक्ति के पर्याप्त अवसर प्रदान न किये जाएँ तो वह व्यर्थ चली जाती है। इसके अतिरिक्त जैसा कि हमें ज्ञात है कि सृजनात्मकता सार्वभौमिक होती है। इस पर कुछ व्यक्तियों का एकाधिकार नहीं होता है। हममें से प्रत्येक व्यक्ति कुछ न कुछ मात्रा में सृजनात्मक योग्यताएँ रखता है। अतः अध्यापकों एवं माता-पिताओं के लिए यह आवश्यक है कि वे बच्चों में सृजनात्मक योग्यता के विकास के लिए उचित वातावरण तथा स्थितियाँ पैदा करें। यह समस्या कठिन अवश्य है, परन्तु इसका समाधान भी है। उचित अभिप्रेरणा तथा परिस्थितियों द्वारा सृजनात्मक योग्यताओं का विकास किया जा सकता है। मौलिकता, लचीलापन, प्रवाहात्मक विचारधारा, विविध चिन्तन, आत्मविश्वास, सतत् परिश्रम, संवेदनशीलता, सम्बन्धों को देखने तथा बनाने की योग्यता आदि कुछ ऐसी योग्यताएँ हैं, जिनका विकास सृजनात्मकता के विकास में सहायक सिद्ध हो सकती है। इन योग्यताओं का विकास करने के लिए बताए जा रहे सुझाव

सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

1. प्रायः देखा जाता है कि अध्यापक और माता-पिता अपने बच्चों से पुराने, पिटे-पिटाए उत्तर की आशा रखते हैं। इससे बच्चों में सृजनात्मकता विकसित नहीं होती। अतः हमें बच्चों को उत्तर देने के लिए पर्याप्त स्वतंत्रता प्रदान करनी चाहिए। उन्हें समस्या के समाधान के लिए अधिक से अधिक विचारों का चिन्तन करने के लिए उत्साहित करना चाहिए।

2. 'यह मेरी रचना है', 'मैंने इसे हल किया है'– यह भावना बच्चों में अत्यधिक सन्तुष्टि प्रदान करती है। वास्तव में वे तभी सृजनात्मक कार्यों में जुटते हैं, जब उनमें उनका अहं निहित हो। अर्थात जब वे अनुभव करें कि उन्हीं के प्रयासों से ही अमुक सृजनात्मक कार्य सम्पन्न हुआ है। अतः हमें बच्चों को ऐसे अवसर प्रदान करने चाहिए जिनसे 'उन्हें' अनुभव हो कि यह सृजन उनके द्वारा ही सम्पन्न हुआ है।

3. बच्चों में किसी भी रूप में विद्यमान मौलिकता को प्रोत्साहित करना चाहिए। तथ्यों का अन्धाधुंध अनुसरण करना, जैसे की तैसी नकल कर देना, निष्क्रिय भाव से ज्ञान प्राप्त करना, आदि सृजनात्मक अभिव्यक्ति में बाधक तत्व हैं। किसी समस्या का समाधान करते समय या किसी काम को सीखते समय यदि वे अपनी विधियों को परिवर्तित करना चाहते हैं तो उनको प्रोत्साहन मिलना चाहिए।

4. कई बार डर या हीन भावना से मिश्रित झिझक सृजनात्मक अभिव्यक्ति में बाधा डालती है। कई बार हमने लोगों को यह कहते हुए सुना है, 'मैं जानता हूँ कि मेरा मतलब क्या है?' लेकिन मैं दूसरों के सामने लिख या बोल नहीं सकता' इस प्रकार डर या झिझक के कारणों का यथा सम्भव पता लगाया जाना चाहिए तथा अध्यापकों तथा माता-पिताओं को चाहिए कि वे इस प्रकार के बच्चों को कुछ कहने या लिखने की प्रेरणा दें।

5. बच्चों में सृजनात्मकता को बढ़ावा देने के लिए स्वस्थ एवं उचित वातावरण की व्यवस्था करना अत्यन्त आवश्यक है। सीखने और प्रयोग करने, ज्ञान की निष्क्रिय प्राप्ति से या निजी प्रयत्नों द्वारा प्राप्त करके निश्चित स्थिरता तथा जोखिम में पर्याप्त सन्तुलन स्थापित किया जाना चाहिए। सृजनशील अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करने के लिए हम पाठ्य-सहपाठी क्रियाओं, सामाजिक उत्सवों, धार्मिक मेलों, प्रदर्शनों आदि का प्रयोग कर सकते हैं। नियमित कक्षा कार्य को भी इस प्रकार व्यवस्थित किया जा सकता है। जिससे बच्चों में सृजनात्मक चिन्तन का विकास हो।

6. श्रमशीलता, आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास आदि कुछ ऐसे गुण हैं जो सृजनात्मकता में सहायक होते हैं। बच्चों में इन गुणों का विकास करना चाहिए। इसके अतिरिक्त उन्हें अपनी सृजनात्मक अभिव्यक्ति के विरुद्ध हो रही आलोचना के विरुद्ध खड़े रहने का भी प्रशिक्षण देना चाहिए। उन्हें यह बात अनुभव करनी चाहिए कि जो कुछ उन्होंने रचा है, वह अनुपम है।

7. बच्चों को सृजनात्मक कला केन्द्रों तथा वैज्ञानिक एवं औद्योगिक निर्माण केन्द्रों की यात्रा करानी चाहिए। इससे उन्हें सृजनात्मक कार्य करने की प्रेरणा मिलेगी। कभी-कभी कलाकारों, वैज्ञानिकों तथा अन्य सृजनशील व्यक्तियों को भी स्कूलों में आमंत्रित करना चाहिए। इस प्रकार बच्चों के ज्ञान विस्तार में सहायता मिल सकती है। बच्चों में सृजनशीलता को बढ़ाया जा सकता है।

8. यह कथन सत्य है कि ''अपना उदाहरण सिद्धान्तों से अच्छा होता है।'' बच्चे हमेशा अनुकरण करते हैं। जो अध्यापक और माता-पिता पिटे-पिटाए रास्ते पर चलते हैं, जीवन में खतरे मोल न लेकर मौलिकता नहीं दिखाते, कोई नया अनुभव नहीं करते या कोई नया काम नहीं करते, वे अपने बच्चों में सृजनात्मकता का विकास नहीं कर सकते। अतः उन्हें परिवर्तन, नवीनता व मौलिकता में विश्वास करना चाहिए। उनके शिक्षण तथा व्यवहार के सृजन-प्रियता की झलक मिलनी चाहिए। तभी वे बच्चों में सृजनात्मकता का विकास कर सकते हैं।

अतः सृजनात्मकता के सम्बन्ध में हम कह सकते हैं कि यदि बालक में जिस भी प्रकार की रचनात्मक सृजनशीलता दिखाई दे, उसको प्रोत्साहित करना चाहिए, जिससे कि वह अपनी अनुपम प्रतिभा सृजनात्मक कार्यों में विकसित कर सके।

–राज क्लॉथ स्टोर, लूनकरनसर-334603, बीकानेर

मानव जीवन की सार्थकता

❑ **अचलचन्द जैन**

वास्तव में मनुष्य जीवन बड़ा दुर्लभ है। यह जीवन बार-बार नहीं मिलता। अतः मनुष्य यदि जीवन में परोपकार के कार्य करे तो उसका जीवन सार्थक एवं धन्य हो सकता है। कहा भी है कि– ''अपने लिए जीये तो क्या जीये, औरों के लिए जीना ही जीना है।''

अर्थात् हमें दूसरों के हित के कार्य कर अपने जीवन को सार्थक बनाना चाहिए। मनुष्य के शरीर के विभिन्न अंगों की सार्थकता इस प्रकार हैं–

1. हाथ की सार्थकता– दुर्लभता से प्राप्त मानव जीवन में हाथों की सार्थकता सुपात्र दान देने में है। दान हाथ का शृंगार है, अलंकार है, शोभा है। हाथ तो बन्दरों को भी मिले हैं, परन्तु वे हाथों का उपयोग केवल खाना खाने एवं छीना झपटी में करते हैं। जबकि मनुष्य के हाथ की सार्थकता दूसरों को सहारा अथवा सहायता देने में है।

2. मुख की सार्थकता– मानव मुख की सार्थकता अथवा सफलता स्वादिष्ट भोजन करने में नहीं है, किन्तु सत्यवचन बोलने में है। मुँह से प्रिय, सत्य, मधुर और हितकारी वचन बोलने चाहिए, जो दूसरों को प्रिय लगे। जुबान से अपशब्द बोलने से जिह्वा एवं मुख गन्दे होते हैं। अतः अपशब्द जिससे दूसरों का दिल दुखे कभी नहीं बोलने चाहिए। गाँधीजी ने कहा कि– बुरा मत देखो, बुरा मत बोलो, बुरा मत सुनो।

3. कान की सार्थकता– पुण्योदय से प्राप्त कानों की सार्थकता जिन वचनों के श्रवण में है। जो वाणी हमको सन्मार्ग की ओर ले जाती हैं। जिन कानों ने प्रभुवाणी का श्रवण नहीं किया वे कान निरर्थक हैं। दूसरों की बुराई और व्यर्थ की बातें हमें नहीं सुनना चाहिए।

4. मन की सार्थकता– मन की सार्थकता सद्विचारों में अर्थात् शुभ भावों में हैं। कहा भी है कि– भावे भावना भाविये, भावे दीजे दान, भावे जिनवर पूजिये भावे केवल ज्ञान॥

किसी का बुरा सोचने से शायद उसका बुरा हो या न हो, परन्तु बुरा सोचने वाले का तो बुरा हो ही जाता है। किसी के हित का विचार करने से अपना ही हित होता है और किसी का बुरा सोचने से अपना बुरा होता है। इसलिए लोग कहते हैं कि– ''कर भला तो हो भला, कर बुरा तो हो बुरा।''

अतः मन से कभी भी किसी का बुरा नहीं सोचना चाहिए। अतः सभी अंगों से अच्छे कार्य कर मानव जीवन को सार्थक बनाना चाहिए।

–गाँधी मुहतों का बास, सायला, जालोर

बच्चों के शारीरिक विकास में सहायक खेल

❑ जगदीश चन्द्र सेन

खेल बालकों के सर्वांगीण विकास में सहायक होते हैं; प्राचीन समय में परम्परागत खेल ही मनोरंजन के साधन थे लेकिन समय के साथ-साथ खेलों के स्वरूप में भी बदलाव आया है। बालकों के जीवन में खेलों का महत्व सर्वकालिक रहा है। मानसिक एवं शारीरिक विकास के साथ-साथ भ्रातृत्व एवं नेतृत्व भावना के विकास में भी खेलों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है।

बदलते परिवेश में परम्परागत खेलों का अस्तित्व कमजोर होता जा रहा है जबकि परम्परागत खेल ही आधुनिक खेलों की रीढ़ की हड्डी है। खेल हमारे लोक जीवन के आवश्यक अंग रहे हैं।

बहुत से प्राचीन एवं परम्परागत खेलों का उद्देश्य-खेल ही खेल में बच्चों का शारीरिक विकास करना निश्चित रूप से रहा होगा। बहुत से परम्परागत खेल जैसे कि सितौलिया, गिल्ली-डण्डा, रुमाल-झपट्टा, मलखम्भ, रस्सा-कस्सी, आईस-पाईस, गुलाम लकड़ी, खो-खो, कबड्डी, भारतीय-कुश्ती इत्यादि खेलों के माध्यम से शारीरिक कौशल को जाँचा एवं परखा जाता रहा है।

आज का युग प्रतिस्पर्धा का युग है, इस युग में बालकों के शारीरिक विकास के साथ-साथ बालकों का व्यक्तित्व बहुमुखी होना आवश्यक है अतः खेल स्वस्थ मनोरंजन, उत्तम स्वास्थ्य एवं ज्ञान वृद्धि के साथ-साथ बालकों के सर्वांगीण विकास में सहायक होते हैं। खेलने से शरीर के रक्त परिसंचरण तंत्र पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। खेल एवं व्यायाम से उत्सर्जन तंत्र की प्रक्रियाएँ नियमित हो जाती हैं। खेल से तंत्रिका तंत्र के स्नायु एवं तंत्रिकाएँ सुदृढ़ बनती हैं तथा मस्तिष्क की कार्य क्षमता बढ़ती है; हारमोन्स के संतुलित रहने से शारीरिक वृद्धि उचित ढंग से होती हैं।

बच्चे किसी भी परिवार समाज और राष्ट्र की धुरी होते हैं, इसलिए उनके व्यक्तित्व एवं शारीरिक विकास महत्वपूर्ण पहलू हैं, अतः निश्चित रूप से बालकों के शारीरिक विकास में खेलों का योगदान रहता है।

बच्चों को महज किताबें पढ़ाना, निश्चित कोर्स पूरा कराना अथवा महज एक ही स्थान पर एक निश्चित समय तक बिठाये रखकर निश्चित किताबें पढ़ाना, इन सब बातों से बच्चे ऊबने लगते हैं ऐसे में उन्हें तरोताजा रखने के लिए खेल ही एक माध्यम है जिससे बालकों में नई ताजगी और उमंग भर देती है अतः निश्चित समय पश्चात उन्हें खेल मैदान में ले जाने अथवा उनके साथ पार्क में, जंगल में घुमाना और कई मनोरंजनात्मक खेल के माध्यम से नई ऊर्जा का संचार होता है जिससे निश्चित रूप से ये खेल बालकों के मानसिक विकास के साथ-साथ शारीरिक विकास में सहायक होते हैं।

खेलकूद के महत्व से कोई अनभिज्ञ नहीं है। खेलकूद से शरीर में स्फूर्ति आती है, माँसपेशियाँ बलवान बनती हैं, मनोरंजन होता है, मस्तिष्क की थकान मिटती है केवल थ्यौरी ज्ञान से न तो तैरना सीख सकता है और न ही कोई साईकल चलाना सीख सकता है, यही नहीं खेलकूद से शारीरिक विकास के साथ-साथ नेतृत्व क्षमता, अनुशासनशीलता, सच्चे खिलाड़ी की भावना का विकास, अन्य साथियों के प्रति सद्भाव, पराजय को हँसते हुए सहना, मर्यादा में रहना, साथी का विश्वास, सहयोग, निष्पक्षता साहस-दृढ़ता और नियमों का पालन करने की आदत का भी विकास होता है।

आज के तनावपूर्ण वातावरण एवं भागमभाग की व्यस्त दिनचर्या में प्रत्येक व्यक्ति खेलों से जुड़कर अपने आपको चुस्त व सहज महसूस कर सकेगा अतः यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं कि खेल के बिना बच्चों में शारीरिक विकास अपूर्ण हैं।

शिक्षा के चार स्तम्भ माने गये हैं– (1) शारीरिक विकास, (2) मानसिक विकास, (3) सामाजिक एवं नैतिक विकास, (4) संवेगात्मक एवं भावात्मक समायोजन। अतः बच्चों के सम्पूर्ण विकास में इन चारों स्तम्भों का मजबूत होना आवश्यक माना गया है। खेलकूद, नृत्य, संगीत इत्यादि बालकों की सहगामी प्रवृत्तियाँ रही हैं। बच्चों के विकास में कहीं न कहीं इन सभी बच्चों का समावेश रहता है।

'पहला सुख निरोगी काया' (Health is Welth)

'स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है।' ये सभी कहावतें जब चरितार्थ होंगी, जब हम अपने आपको स्वस्थ रख पायेंगे। स्वास्थ्य के अभाव में सब सुख व्यर्थ है। शरीर की रक्षा करना मानव का प्रथम धर्म है अतः ऐसी स्थिति में बालकों द्वारा नियमित खेल अभ्यास के माध्यम से ही शारीरिक विकास हो पायेगा। परन्तु आज टी.वी., कम्प्यूटर गेम व वीडियो अपसंस्कृति ने बच्चों को निष्क्रिय और असंवेदनशील बना दिया है। क्या पश्चिमी शैली के स्पाइडरमेन, सुपरमेन, ही-मेन की छवि बालकों के बालमन को गहरे तक प्रभावित कर रही है? आज की युवा पीढ़ी में कम्प्यूटर के प्रति बढ़ता क्रेज और लेपटॉप रखना एक फैशन बनता जा रहा है, जहाँ बालक पहले सुबह-शाम खेल मैदानों में फुटबॉल, कबड्डी, वालीबाल व हॉकी खेलते नजर आते थे। वहीं आज वीडियो गेम, चेटींग, ई-मेल व एस.एम.एस. आदि माध्यम तक इनका दायरा सीमित रह गया है ऐसे में कैसे होगा बालकों का शारीरिक विकास?

प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक कार्लग्रुस का मानना है कि खेल और खिलौनों द्वारा बालक के भावी जीवन का आभास होता है। खेल भावी जीवन की तैयारी है जो सपने बालक अपने लिए देखता

है, और बुनता है उसकी अभिव्यक्ति वह खेल द्वारा ही करता है। अतः निश्चित ही बच्चों के शारीरिक विकास में खेल सहायक हैं।

बाल मनोवैज्ञानिक जे.डी. चतुर्वेदी का कहना है कि खेल और खिलौने बच्चों की मानसिक व शारीरिक विकास की दिशाएँ तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

'बच्चे मुल्क की शानदार इमारत की ईंटे हैं। मजबूत मुल्क के लिए इन्हें अच्छी तरह पकाओ।' यह कथन है स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख सेनानी, विश्व जन नेता और भारतीय गणतंत्र के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू के। वे यह भी कहा करते थे– लोग भविष्य देखने के लिए सितारों (ग्रह नक्षत्रों) की तरफ देखते हैं, किन्तु मुझे मेरा भविष्य देखना होता है तो मैं बच्चों की आँखों में झाँकता हूँ और मुझे देश का भविष्य चमकता दिखाई देता है।

हमें पंडित जी के इन वाक्यों को चरितार्थ करने के लिए बच्चों का शारीरिक विकास करना होगा और इस विकास के लिए सहायक है विभिन्न खेल। खेल के माध्यम से ही बच्चों का शारीरिक विकास सम्भव है। खेल केवल शारीरिक विकास तक ही सीमित नहीं है अपितु खेल का सम्बन्ध सीधे मस्तिष्क से होता है अर्थात् खेल से शारीरिक एवं मानसिक विकास तो होता ही है साथ ही व्यक्तित्व विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। खेल केवल बच्चों के लिए ही नहीं वरन् मानव की सभी अवस्थाओं अर्थात् शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था, युवावस्था एवं प्रौढ़ावस्था में भी शरीर का संतुलन बनाये रखने में खेल अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है अतः हम यह कह सकते हैं कि खेल जीवन का अभिन्न अंग है लेकिन बच्चों के शारीरिक विकास में खेल एक आधार है। बच्चों का वास्तविक विकास उसके बाल्यावस्था में ही होता है। जिस तरह पर्यावरण को बनाये रखने के लिए पौधे लगाना महत्वपूर्ण है, उसी प्रकार जीवन के आधार में खेल की भूमिका महत्वपूर्ण है।

स्वस्थ बालक वही होता है जो शारीरिक एवं मानसिक रूप से प्रत्येक कार्य को करने हेतु तत्पर रहता हो, शारीरिक एवं मानसिक विकास के लिए बच्चों में नियमित खेल आवश्यक हैं।

युवा पीढ़ी, जो राष्ट्र की धरोहर है और बालक राष्ट्र निर्माता इन्हें सुरक्षित एवं स्वस्थ रखने हेतु इनका ध्यान मैदानी खेलों की ओर आकर्षित करना आवश्यक हो गया है ताकि बालकों का सम्पूर्ण शारीरिक विकास हो सके।

खेल कोई भी हो यदि आप उनमें तन्मयता से भाग लें, तथा उसको असली उत्साह से खेलें, आप पायेंगे कि खेल को खेलकर शारीरिक विकास के साथ-साथ मानसिक तथा आत्मिक शक्ति प्राप्त होगी।

–शारीरिक शिक्षक
मु.पो.- धून्धला, सोजत रोड, पाली (राज.)

अभिनव राष्ट्रीय ध्वज मानचित्र पाठ्यक्रम

❑ अमरसिंह पाण्डेय

एक नया 'राष्ट्रीय ध्वज' कार्यक्रम अब पाठ्यक्रम का अंग बनकर छात्रों तथा शिक्षकों का उन्मेषण करेगा कि राष्ट्रध्वज को फहराते समय किन-किन मर्यादाओं का पालन करना चाहिए। अभी तक तो सब कुछ एक अननुपक्रम की तरह चल रहा था, अब समाचार है कि राष्ट्रीय ध्वज और भारत का मानचित्र पाठ्यक्रम का अंग बनने जा रहा है। राष्ट्रध्वज को फहराने और अनुरक्षण के लिए कोई व्यवस्थित निर्देश के अभाव में बहुत देखा-देखी और अपनी-अपनी समझ के अनुसार या परम्परागत रूप से ही चल रहा था। इस संदर्भ में इन पंक्तियों के लेखक का विचार है कि प्रार्थना स्थल पर भी भारत का एक सुंदर और विशाल मानचित्र या उभरा हुआ लगभग यथा रूप विशाल चित्र लगाया जाए और जब राष्ट्रगीत गाया जाए तो छात्रों और दर्शकों का देश-बोध तथा 'पंजाब सिंधु गुजरात मराठा द्राविड़ .....' आदि रूप नित्य प्रति चाक्षुष होता रहे। 'चमके' और 'दमके' का बोध भी प्रयत्न-साध्य होना एक वांछनीयता कल्पना का विषय हो सके, ऐसा।

राज्य के विद्यार्थियों को राष्ट्रीय ध्वज और भारत के मानचित्र की संहिता को शिक्षा-विभाग तथा लोक सेवा आयोग के पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने की कवायद सरकार ने आरम्भ की है। इस व्यवस्था से राष्ट्र, राज्य और राष्ट्रगान के सम्मान की संकल्पना की सिद्धि होगी। देश को इंडिया की बजाय 'भारत' कहने की भी परम्परा विकसित होगी। राज्य सरकार के सामान्य प्रशासन विभाग ने ठीक ही शिक्षा विभाग तथा राज्य के लिए प्रशासक सही रूप में मार्गस्थ करने के लिए राजस्थान लोक सेवा आयोग को अपने-अपने सही व्यक्ति तैयार करने की दृष्टि से 'फ्लेग कोड आव इंडिया' (भारतीय ध्वज संहिता) भारत के सम्पूर्ण मानचित्र को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने के लिए सरकार को लिखा है। सुझाव के रूप में।

कई बार अनेक छोटे-बड़े मानचित्रों और नक्शों में अंडमान-निकोबार द्वीपों व लक्ष द्वीप तक उपेक्षा का शिकार होते हैं किन्तु सत्य यह है दूरी की दृष्टि से 'काला पानी' ये द्वीप समूह हमारी स्वतंत्रता की लड़ाई के जीवित स्वरूप हैं। और अनजाने में राष्ट्र ध्वज भी कई बार उपेक्षा अवमानना के शिकार हो जाते हैं। राजस्थान प्रशासन के पत्रानुसार अब स्थिति बदल जाएगी। ध्यातव्य है कि श्री अरविन्द सोसायटी के सुझाव पर राष्ट्रीय प्रशासनिक प्रशिक्षण अकादमी ने इन बातों को पाठ्यक्रम में शामिल कर लिया है।

–भुसावर, भरतपुर

वीडियो खेलों के चक्रव्यूह में फँसा बचपन

❑ तरुण कुमार दाधीच

वर्तमान परिवेश में वीडियो खेलों के कारण नई पीढ़ी का भविष्य अंधकारमय होता चला जा रहा है। कुछ वर्ष पूर्व वीडियो खेल नगरों तक ही सीमित थे किन्तु आज गाँवों और कस्बों में भी इनका प्रचलन बहुतायत में हो रहा है। सही अर्थों में देखा जाय तो वीडियो खेल उस चक्रव्यूह के समान हैं जिसमें प्रवेश करना तो आसान है परन्तु निकलना मुश्किल। दूसरी-तीसरी में पढ़ने वाले छात्रों से लेकर कॉलेज में पढ़ने वाले छात्रों में वीडियो खेलों का प्रचलन दिन-प्रतिदिन बढ़ता चला जा रहा है।

वीडियो खेलों का प्रचलन व्यापक रूप से उच्च वर्ग में तो है ही, मध्य वर्ग में ज्यादा है। सम्पन्न होने के कारण उच्च वर्ग में बच्चों को उनके माता-पिता और अभिभावक मनपसन्द वीडियो खेल खरीद कर उपलब्ध करा देते हैं। समस्या आती है मध्य वर्ग के समक्ष, क्योंकि निम्न वर्ग से उठा हुआ और उच्च वर्ग में पहुँचने की आकांक्षा रखने वाला यह वर्ग अनेकानेक कुंठाओं से ग्रसित होता है। इसका प्रमुख कारण है मध्यवर्गीय परिवारों के बालक अपनी पाकेट-मनी में से पैसे बचाकर वीडियो पार्लर पर पहुँच जाते हैं और उनका अधिकांश समय वीडियो खेल खेलने और देखने में बीतता है।

वीडियो खेल के कई दुष्परिणाम भी सामने आते हैं। चिकित्सकों की राय में ज्यादा वीडियो खेलों से आँखें खराब होती है और मस्तिष्क पर भी विपरीत प्रभाव पड़ता है। प्रायः देखा-सुना जाता है कि अधिक वीडियो खेल देखने व खेलने से आँखों में पानी आने लगता है। यह क्रम जब लम्बे समय तक चलता है तो बच्चों के असमय चश्में लग जाते हैं। पर्यावरण-प्रदूषण एवं खान-पान की अशुद्धता के कारण बच्चों का विकास वैसे भी पूर्णरूप से नहीं हो पाता, इस पर यदि वीडियो खेल बच्चों के मस्तिष्क में रच-बस जाएँ तो भावी-पीढ़ी के विकास की कल्पना कैसे की जा सकती है?

भावी-पीढ़ी के बालकों को वीडियो खेलों से बचाने में माता-पिता और अभिभावकों की भूमिका ही महत्त्वपूर्ण हो सकती है। अभिभावकों को चाहिए कि वे अपने बच्चों पर वीडियो खेल खेलने पर अंकुश लगाएँ और उनका ध्यान इस शौक से हटाएँ। वीडियो खेलों के कारण बच्चे यथार्थ से दूर रहकर हवाई उड़ानों में खोये रहते हैं। इसका दुष्प्रभाव यह होता है कि उनका ध्यान पढ़ाई से हटकर विकेन्द्रित हो जाता है। बच्चों में एकाकीपन आने लगता है। इस दुष्प्रभाव से बच्चों को उबारने के लिए माता-पिता एवं अभिभावकों को ही सार्थक पहल करनी आवश्यक है।

जापान, चीन आदि देशों से आयात किए जाने वाले इन वीडियो खेलों को मध्यवर्गीय परिवारों तक पहुँचाने में वीडियो पार्लरों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है। इस कारण वीडियो खेल आज महानगरों तक सीमित न रहकर कस्बों और छोटे शहरों तक पहुँच गए हैं। इन वीडियो पार्लरों में सर्कस, क्रोंदा, जंगल, स्टारवार, मारयो, कुंग-फू, कार रेस, जिप्सी रेस आदि तरह-तरह के वीडियो खेल खेले जाते हैं। अलग-अलग खेलों की अलग-अलग वीडियो कैसेट होती है। वीडियो खेल शुरू होते ही पाश्चात्य धुनों पर आधारित आकर्षक संगीतमय वातावरण बन जाता है और कंट्रोल बॉक्स पर लगे बटनों की सहायता से इन्हें खोला जाता है।

शुरू-शुरू में बच्चों को वीडियो खेल खेलने में असुविधा होती है किन्तु खेलने के तौर तरीके समझ में आ जाने के बाद बच्चों की दिलचस्पी लगातार बढ़ती रहती है। यह रुचि इस कदर बढ़ जाती है कि बच्चों को समय का पता भी नहीं चलता और घंटों बीत जाते हैं या यों कहें कि बरबाद हो जाते हैं। एक कैसेट में कई खेल होते हैं। इन सभी खेलों को खेलते रहने से इनका अभ्यास हो जाता है और अच्छा अभ्यास होने से बच्चे जीतते चले जाते हैं। **वीडियो खेलों की यही जीत बच्चों की पढ़ाई की दृष्टि से सबसे बड़ी पराजय होती है।**

वीडियो खेलों के भ्रम और जीवन के यथार्थ में काफी अन्तर होता है। हिम्मत और हौंसले से चुनौतियों का मुकाबला करने की जो प्रेरणा बच्चों को बचपन में अपने माता-पिता, अभिभावकों एवं गुरुजन से मिलती है। वह वीडियो खेलों में दबकर रह जाती है। वीडियो खेल की कार दौड़ और वास्तविक जीवन की कार दौड़ में काफी अन्तर होता है। इस प्रकार वीडियो खेल बच्चों को वास्तविक जिन्दगी से हटाकर कल्पना जगत में विचरण कराने में महती भूमिका निभाते हैं।

आजकल बाजार में चौकोर, ट्रॉजिस्टरनुमा कई वीडियो खेल अर्थात् गेम उपलब्ध हैं। इन्हें ड्राई सेल द्वारा चलाया जाता है। इन वीडियो खेलों में सैंकड़ों खेल होते हैं। बच्चों को एक बार इसका चस्का लग जाता है तो आसानी से नहीं छूटता है। माता-पिता यह समझते हैं कि बच्चा होम-वर्क करने के बाद मनोरंजन के लिए वीडियो गेम खेल रहा है परन्तु उन्हें यह नहीं मालूम कि होम-वर्क और पढ़ाई चौपट हो रही है और बच्चों का अधिकांश समय बरबाद हो रहा है। अपनी पढ़ाई से दूर होकर भावी-पीढ़ी के बच्चे उन्नति के मार्ग पर बढ़ने की अपेक्षा दिशाहीन हो रहे हैं।

जिस प्रकार अच्छे साहित्य से बच्चों में जीवन मूल्यों का विकास होता है वैसा वीडियो खेलों से कदापि नहीं हो सकता। कॉमिक्स जिस तरह बच्चों की प्रगति में सहायक नहीं हैं उसी प्रकार वीडियो खेलों को भी बच्चों की प्रगति में बाधक ही माना जा सकता है। आधुनिकीकरण एवं पाश्चात्य प्रभाव के कारण मनोरंजन के नाम पर जो नीला जहर भावी-पीढ़ी देख रही है, उससे उनकी उन्नति की कल्पना नहीं की जा सकती है। इसके लिए आवश्यकता इस बात की है कि बच्चों को वीडियो खेलों के चक्रव्यूह से बचाया जाए।

–प्राध्यापक, हिन्दी
राजकीय फतह उ.मा.वि., उदयपुर (राज.)

गणित के विकास की कहानी

❑ डॉ. राधा माथुर

रोम एक दिन में नहीं बना था। जी हाँ, दुनिया की कोई भी चीज़ एक दिन में विकसित नहीं हो जाती, बल्कि वह उसके बुनियादी रूप में धीरे धीरे आवश्यकता के अनुसार सुधार तथा हिट एन्ड ट्रायल पद्धति से ही उन्नति करते करते उसका वर्तमान रूप पाती है। ठीक इसी प्रकार 'गणित' का विकास भी एक दिन या किसी व्यक्ति विशेष द्वारा नहीं हुआ था। आइये इसके क्रमिक विकास पर एक नज़र डालें।

वर्ष 3000 बी.सी. से 2500 बी.सी. के मध्य तक का लिखा हुआ सर्वप्रथम 'गणित' हमें 'सुमेरियन' जिन्होंने प्रथम मैसोपोटामिया (पुराना ईराक) की सभ्यता बसाई थी, उनसे प्राप्त होता है। उन्होंने मैट्रोलौजी का पेचीदा तरीका विकसित किया था। 'सुमेरियन' ने गुणा करने का तरीका 'मिट्टी की गोलियों' पर लिखा था। उन्होंने रेखागणित और भाग की समस्याओं का निदान भी किया था।

सर्वाधिक 'मिट्टी की गोलियां' जो 1800 से 1600 BC के बीच पाई गई थीं, उन पर भिन्न, बीजगणित, द्विघातीय और त्रिघातीय समीकरण आदि का उल्लेख मिलता है।

मशहूर बैबीलौन गोलियों (YBC 7289) ने $\sqrt{2}$ का करीबन पाँच दशमलव स्थान तक सही हल किया। बैबीलौन गणित साठ अंकन पद्धति (sexagesimal numeral system) को आधार मान कर लिखा गया था। इसी पद्धति पर आज का 60 सैकिन्ड का एक मिनट और 60 मिनट का एक घन्टा और एक वृत में 360 (60x6) डिग्री का होना इसी विधि से सिद्ध किया गया था, तथा सैकिन्ड और मिनट चाप का उपयोग डिग्री के भाग को प्रदर्शित करने में किया गया है परन्तु इस पद्धति में दशमलव बिन्दु नही था अतः एक प्रतीक की प्लेस वैल्यू का तर्क संगत अनुमान प्रसंग से लगाया जाता था।

मिश्र में गणित का विकास : 'रिन्द पैपीरस' (Rhind Papyrus) जो कि उसके लिखने वाले के नाम पर रखा गया था, 2000–1800 बी.सी. के बीच लिखा गया था जिसमें सूत्रों, गणना, भाग, को भिन्न के साथ संयुक्त किया गया था। इसमें गणित के दूसरे ज्ञान जैसे कम्पोज़िट तथा प्राइम संख्या, गणितीय ज्यॉमिती और हरात्मक माध्य आदि को वर्णित किया गया था। इसके अलावा प्रथम घात और प्रथम कोटि के समीकरणों को हल करना भी बताया था।

हाईपैटिया एलेक्सज़ेन्ड्रिया (350 से 415 ए.डी.) को प्रथम महिला गणितज्ञ होने का श्रेय जाता है। वह एलेक्सज़ेन्ड्रिया के थियान की पुत्री थी जो मिश्र में गणित के अध्यापक थे।

हाईपैटिया ने गणित, खगोल विद्या, ज्योतिष विद्या और सितारों की चाल के विषयों पर लिखा था। उनके बारे में जितना भी पता है उसके अनुसार उन्होंने यूनान के सायनैसिस के साथ मिल कर भाग किये हुए (graduated) पीतल के हाईड्रोमीटर और हाईड्रोस्कोप का आविष्कार किया था।

चीन में गणित का विकास : पूरी दुनियां में स्वयं विकसित आड़े तिरछे डंडों से प्रदर्शित चीनी गणित को सबसे भिन्न होने का श्रेय प्राप्त है। चीन का सबसे पुराना गणित चू पी सुआन चिग है, जिसका विकास 1200 तथा 100 बी.सी. के करीब (लगभग 300 बी.सी. में) में हुआ था।

यूनान में गणित का विकास : यूनान में गणित का विकास थेल्स द्वारा किया गया था। थेल्स ने रेखागणित का उपयोग पिरामिडों की ऊँचाई मापने और समुद्र तट से जहाज़ की दूरी मापने के लिये किया था। उन्होंने प्रथम बार रेखागणित को तार्किक तरीके से निगमित किया था। यही कारण है कि उन्हें प्रथम गणितज्ञ के रूप में माना जाता है।

सर्वप्रथम पाइथागौरस ने ही गणित शब्द का प्रयोग किया था। महत्वपूर्ण पाइथागौरस प्रमेय इन्हीं के नाम पर है।

आर्किमिडीज़ ने पाइ (π) का काफ़ी हद तक सही मान निकाला था।

भारत में गणित का विकास : भारत की प्रथम सभ्यता इन्दस घाटी की सभ्यता, इन्दस नदी के किनारे विकसित हुई थी, यह सभ्यता 2600 B.C. तथा 1900 B.C. के मध्य अपने शीर्ष पर थी, उनके नगर ज्यामितियी रचना के कारण प्रसिद्ध हैं। इस सम्बन्ध में गणितीय विकास का लिखित दस्तावेज प्राप्त नहीं है।

भारत का सबसे प्राचीन लिखित गणित दस्तावेज़ 'सुलभ–सूत्र है। जिसका विकास लगभग आठवीं शताब्दी बी.सी. में होना आरम्भ हुआ था।

यह संलेख धार्मिक पुस्तक के मूल अंश के परिशिष्ट है जिसमें भिन्न आकृतियों ('वर्गाकार, आयातकार, चतुर्भुजाकार आदि) की हवन की वेदियों को बनाने के साधारण नियम बताए हैं। इन सूत्रों में एक वृत जिसका क्षेत्रफल एक वर्ग के लगभग समान है, की रचना करना भी बताया गया है। इसमें $\sqrt{2}$ को दशमलव के कई स्थान तक हल किया गया है। इसमें 'पाइथागोरस प्रमेय' का भी कथन बताया गया है। यही सारे परिणाम हमें 'बेबीलॉन की गणित जिसमें मैसोपोटामिया का प्रभाव दर्शाया गया है, में दिये गये हैं। यह कोई नहीं जानता कि किस सीमा तक 'सुलभ–सूत्रों नें भारतीय वर्तमान गणित को प्रभावित किया है। भारतीय संस्कृति में वैदिक गणित का महत्वपूर्ण स्थान है जो कि सुलभ सूत्रों का अतुलनीय संग्रह है।

मुस्लिम काल में दशमलव, त्रिकोणमिती, बीजगणित, रेखागणित आदि का विकास हुआ। उस काल में अल–किन्दी

ने क्रिपटाऐनालिसिस तथा फ्रीक्अऐसी ऐनालिसिस में बहुत योगदान दिया था।

आधुनिक गणित (19वीं शताब्दी): उन्नीसवीं शताब्दी में 'एबस्ट्रेक्ट' (abstract) गणित का तेज़ी से विकास हुआ। फ्रेडरिच गाउस ने विज्ञान और गणित के श्रेत्र में बहुत योगदान दिया। उन्होंने सम्मिश्र चर, ज्यामिती, श्रेणी की कन्वरजैंस (convergences), बीज गणित की मूल प्रमेय आदि को विकसित किया।

इस शताब्दी में 'नॉन यूक्लिडियन ज्यामिती' के दो रूपों को विकसित किया था।

आधुनिक गणित (20 शताब्दी) : बीसवीं शताब्दी में गणित एक मुख्य रोज़गार का साधन बन गया था। हर साल हज़ारों विद्यार्थी पीएच.डी. की उपाधि से मानिद किये जाने लगे। अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठी डेविड हिलबर्ट ने 23 अनसुलझे सवालों की सूची तैयार की, जिससे गणित के बहुत सारे क्षेत्रों का विकास होने में सहायता मिली। आज उनमें से 10 पूरी तरह से, 7 आंशिक रूप से हल हो गये हैं, और 4 के बारे में सही उत्तर की जानकारी नहीं है। अवकलन ज्यामिति की शुरुआत होने लगी तब आइन्सटीन ने इसे सापेक्षिकता के सिद्धान्त में प्रयोग में लिया।

आधुनिक गणित (21वीं शताब्दी) : इक्कीसवीं शताब्दी में गणित की मुख्य पत्रिकाएं, किताबों, जरनल्स से गणित का विकास और भी तेज़ी से होने लगा है।

गणित का भविष्य : यदि हम आज और भविष्य के परिप्रेक्ष्य में गणित को देखें तो हम पायेंगे कि इस विषय का विकास बहुत तेज़ी से हो रहा है। यह प्रत्येक विषय का मूलभूत आधार है के अभाव में गणना के किसी भी विषय को समझना असंभव है, फिर चाहे वह जीव विज्ञान, भूविज्ञान, ज्योतिष विज्ञान, इतिहास, व्यापार, अर्थ शास्त्र आदि ही क्यों ना हो। कम्प्यूटर्स भी गणित के ज्ञान के बिना अधूरे हैं। आज की उन्नति का सबसे बड़ा आधार कम्प्यूटर्स हैं, जो गणित के बुनियादी सिद्धान्तों की ही देन है। अतः आने वाले समय में गणित का विकास और भी तेज़ी से होगा। वर्ष 2012 को दुनिया में 'गणित वर्ष' के रूप में मनाया जाना इस बात का द्योतक है कि गणित सभी विषयों को समझने की अदभुत क्षमता विकसित करता है और अपनी व्यापकता की ओर इंगित करता है।

–सहायक आचार्य (गणित विभाग)
राजकीय अभियान्त्रिकी महाविद्यालय, बीकानेर (राज.)

भारत में गणित के विकास की कालानुसार तालिका

1. 2700 ईसवी : हड़प्पा पूर्व संस्कृति, कृषि में हल का प्रयोग, पत्थर व ताँबे के औजार, लेखन का आरंभ।

2. 2350 ईसवी : लिपि और अंक-संकेतों का प्रचलन, पकाई गई निश्चित माप की ईंटों का उपयोग। माप पट्टी, तराजू और निश्चित तौल के बाटों का इस्तेमाल। क्षेत्रमिति के ज्ञान का नगर-निर्माण और भवन-निर्माण में उपयोग।

3. 1750 ईसवी : हड़प्पा संस्कृति का अवसान। भारत में आर्यभाषियों का आगमन।

4. 1500 ईसवी (लगभग) : वैदिक साहित्य का आरम्भ। ऋग्वेद में सबसे बड़ी इकाई अयुत (10,000) का उल्लेख। अंक-पद्धति दशाधारी। यजुर्वेद में परार्ध (10^{12}) तक की दशगुणोत्तर संख्या-संज्ञाओं का उल्लेख।

5. 800 ईसवी (लगभग) : महात्मा लगध का वेदांग ज्योतिष (ऋक् और यजुष्) : पाँच वर्ष का युग, नक्षत्र-सूची, त्रैराशिक का नियम। बोधायन द्वारा प्रथम शुल्वसूत्र।

6. 700 ईसवी (लगभग) : ब्राह्मी लिपि का सृजन।

7. 600 ईसवी (लगभग) : बोधायन, आपस्तंब आदि के शुल्वसूत्र, जिनमें वेदियों की रचना के लिए ज्यामितीय नियम दिए गए हैं। शुल्वसूत्रों में तथाकथित 'पाइथागोरस का प्रमेय' भी है। द्विकरणी ($\sqrt{2}$) का मान 1.4142156... है।

8. 540 ईसवी (लगभग) : पाइथागोरस, ज्यामिति, अंकगणित, संख्या सिद्धांत।

9. 450 ईसवी (लगभग) : जैनों की गति से सम्बन्धित पहेलियाँ। पाणिनि की 'अष्टाध्यायी'। तक्षशिला के गुरुकुल।

10. 305 ईसवी (लगभग) : चंद्रगुप्त मौर्य का शासन। यूनानी दूत मेगास्थनीज का पाटलिपुत्र में निवास। पंचमार्क सिक्कों का प्रचलन।

11. 250 ईसवी (लगभग) : अशोक का शासन : ब्राह्मी लिपि के स्तंभलेख-शिलालेख, खरोष्ठी लेख। अभिलेखों में ब्राह्मी अंकों में संख्या 256 (पुरानी पद्धति में)।

12. 175 ईसवी (लगभग) : आचार्य पिंगल के छंदःसूत्र में मेरु प्रस्तार (पास्कल का त्रिभुज) और 'शून्य' का प्रयोग।

13. 78 ईसवी (लगभग) : शक संवत् का प्रारंभ। पंजाब में कुषाण वंश के शासन का आरम्भ। ईसा की प्रथम शताब्दी, शून्य युक्त दाशमिक स्थानमान अंक पद्धति की खोज, आविष्कारक अज्ञात।

14. 200 ईसवी (लगभग) : ज्योतिष के प्राचीन पाँच सिद्धांत, सौर, पैतामह, वासिष्ठ, रोमक और पोलिश, जिनकी जानकारी बाद में वराहमिहिर ने अपनी कृतित 'पंचसिद्धांतिका' में दी।

15. 499 ईसवी (लगभग) : आर्यभट (जन्म 476 ई.पू.) द्वारा 23 वर्ष की आयु में 'आर्यभटीय' की रचना। वर्णांक पद्धति, π = 3.1416 ज्या सारणी, प्रथम घात का अनिर्धार्य समीकरण, क्षेत्रफल, भू-भ्रमण का सिद्धांत, ग्रहणों की सही व्याख्या।

16. 510 ईसवी (लगभग) : वराहमिहिर, पंचसिद्धांतिका (505 ई.पू.), बृहत्संहिता, वृहज्जातक आदि।

17. 594 ईसवी (लगभग) : एक गुर्जर राजा के ताम्रपत्र में पहली बार दाशमिक स्थान-मान अंक-पद्धति का अभिलेख-प्रमाण

(कलचुरि, संवत् 346)।

18. 600 ईसवी (लगभग) : भास्कर (प्रथम) की कृतियाँ, महाभास्करीय, लघु भास्करीय, आर्यभटीय टीका।

19. 628 ईसवी (लगभग) : ब्रह्मगुप्त (जन्म : 598 ई.पू.) द्वारा 30 वर्ष की आयु में 'ब्राह्मस्फुट सिद्धांत' की रचना अनिर्धार्य वर्ग-समीकरण के हल के लिए प्रमिकाएँ, चक्रीय चतुर्भुज का क्षेत्रफल, वेधकर्ता, करण ग्रंथ, खंडखाद्य।

20. 850 ईसवी (लगभग) : महावीराचार्य, जैन गणितज्ञ, ग्रंथ, गणितसार संग्रह-अंकगणित, बीजगणित (कुट्टाकार) और क्षेत्र-व्यवहार का पाठ्य-ग्रंथ।

21. 900 ईसवी (लगभग) : वाक्षाली हस्तलिपि, एक अधिक प्राचीन मूल लिपि की प्रतिलिपि, कुल 70 खंडित भोजपत्र, शारदा लिपि, अशुद्ध संस्कृत, विषय, अंकगणित, बीजगणित, शून्य-युक्त दाशमिक स्थान-मान पद्धति के अंक-संकेतों का प्रयोग।

22. 991 ईसवी (लगभग) : श्रीधराचार्य की कृतियाँ–पाटीगणित और त्रिशतिका, गुणन की कपाट-संधि विधि, वर्ग-समीकरण के हल की नई विधि। श्रीपति (लगभग 100 ई.पू.) की कृति 'गणित तिलक'।

23. 1150 ईसवी (लगभग) : भास्कराचार्य (जन्म 1114 ई.) द्वारा 36 वर्ष की आयु में 'सिद्धांत-शिरोमणि' की रचना। द्वितीय घात के अनिर्धार्य समीकरण के हल की चक्रवाल विधि। शून्य और अनंत की व्याख्या। तात्कालिक गति की धारणा में आधुनिक अवकल गणित का बीजारोपण। 'करण-कौतूहल' की रचना।

24. 1350 ईसवी (लगभग) : नारायण पंडित की कृतियाँ, गणित कौमुदी और बीजगणितावतंस।

25. 1500 ईसवी (लगभग) : केरलीय गणित-ग्रंथ, करण पद्धति, गणित युक्तिभाषा, सद्रत्नमाला और तंत्र-संग्रह (लेखक नीलकंठ सोमसुत्वा), जिनमें पहली बार त्रिकोणमितीय ज्या, कोटिज्या, स्पर्शज्या तथा π श्रेणियों का विवेचन है और इनके नियम दिए गए हैं।

26. 1525 ईसवी (लगभग) : गणेश देवज्ञः, ज्योतिष ग्रंथ ग्रह लाघव और लीलावती पर 'बुद्धिविलास' नामक टीका। सूर्यदेव गणितामृत-कूपिका (लीलावती पर टीका), भास्कर के बीजगणित पर भी टीका।

27. 1650 ईसवी (लगभग) : ज्योतिषी रंगनाथ के पुत्र मुनीश्वर (जन्म 1603 ई.), 'लीलावती' पर 'निसृष्टार्थदूती' नामक टीका, अंकगणित की स्वरचित पुस्तक 'पाटीसार'। कमलाकर (जन्म 1608 ई.) 'सिद्धांत तत्त्व विवेक' (1658 ई.) इसलामी गणित-ज्योतिष से परिचित।

28. 1723-27 ईसवी (लगभग) : सवाई जयसिंह द्वितीय (1686-1743 ई.) द्वारा जयपुर, दिल्ली, मथुरा, वाराणसी तथा उज्जैन में वेधशालाओं का निर्माण। जयसिंह के दरबार के गणितज्ञ-ज्योतिषी जगन्नाथ (जन्म 1652 ई.) ने टॉलेमी के अलमजिस्ती का 'सम्राट-सिद्धांत' नाम से और यूक्लिड के मूलतत्त्व का 'रेखागणित' के नाम से अरबी से संस्कृत में अनुवाद किया।

29. 1800 ईसवी (लगभग) : त्रिकोणमितीय सर्वेक्षण विभाग (मद्रास) की स्थापना।

30. 1837 ईसवी (लगभग) : ब्राह्मी लिपि का उद्भव।

31. 1891 ईसवी (लगभग) : पं. सुधाकर द्विवेदी (1860-1922 ई.) गणक-तरंगिणी, गणित ज्योतिषी के भारतीय ग्रंथों का संपादन।

32. 1917 ईसवी (लगभग) : हार्डी और रामानुजन (जन्म 1887) वैश्लेषिक संख्या सिद्धांत।

33. 1924-28 ईसवी (लगभग) : क्वांटम यांत्रिकी का विकास। रमण प्रभाव (1928 ई.)।

34. 1938 ईसवी (लगभग) : सुब्रह्मण्यम चंद्रशेखर : तारों की संरचना, 'चंद्रशेखर सीमा', नोबेल पुरस्कार (1983 ई.)।

प्रमुख भारतीय गणितज्ञ एवं उनकी कृतियाँ/ग्रंथ

गणितज्ञ	रचनाएँ/ग्रंथ
1. याज्ञवल्क्य	शतपथ ब्राह्मण
2. महात्मा लगध	वेदांग ज्योतिष
3. बोधायन	शुल्वसूत्र
4. मानव	शुल्वसूत्र
5. आपस्तंब	शुल्वसूत्र
6. पाणिनि	अष्टाध्यायी
7. पिंगल	छंदःसूत्र
8. आर्यभट	आर्यभटीय
9. वराहमिहिर	पंचसिद्धांतिका
10. ब्रह्मगुप्त	ब्राह्मस्फुट-सिद्धांत, खंडखाद्य
11. भास्कर-1	महाभास्करीय, लघु भास्करीय, आर्यभटीय टीका
12. महावीराचार्य	गणित सार-संग्रह
13. श्रीधर	पाटीगणित, त्रिशतिका
14. श्रीपति	गणित-तिलक
15. नारायण पंडित	गणित कौमुदी, बीजगणितावतंस
16. भास्कराचार्य	सिद्धांत शिरोमणि, करण-कौतूहल
17. नीलकंठ	सद्रत्नमाला, तंत्र संग्रह
18. गणेश देवज्ञ	ग्रहलाघव, बुद्धिविलास ('लीलावती' पर टीका)
19. सूर्यदेव	गणिताभ्रत कूपिका ('लीलावती पर टीका)
20. मुनीश्वर	निसृष्टार्थदूती ('लीलावती' पर टीका) पाटीसार
21. कमलाकर	सिद्धांततत्त्वविवेक
22. जगन्नाथ	सम्राट-सिद्धांत, रेखागणित
23. पं. सुधाकर द्विवेदी	गणक-तरंगिणी।

खेल-खेल में क्रमागत संख्याओं का योग ज्ञात करना

❑ गायत्री शर्मा

यह तो हम सभी जानते हैं कि गणित एक जटिल विषय है जिसमें बच्चों की बचपन से ही रुचि बहुत कम होती है, लेकिन यदि बाल्यावस्था से ही गणित विषय के प्रति रुचि उत्पन्न की जाए तो गणित जटिल विषय के बजाय एक सरल एवं रुचिकर विषय बन जाएगा।

यदि प्राथमिक कक्षाओं में गणित विषय के अध्ययन में सरल एवं रुचिकर पद्धतियों को अपनाया जाये तो बाल्यावस्था से ही छात्र-छात्राओं में गणित विषय के प्रति रुचि एवं आकर्षण उत्पन्न किया जा सकता है। छात्र-छात्राएँ खेल-खेल में ही जटिल से जटिल गणनाओं को शीघ्रता से कर देते हैं। इस लेख में भी कुछ ऐसे ही अनुभवों एवं उदाहरणों की सहायता से गणित विषय को रोचक बनाए जाने का प्रयास किया जा रहा है, जिसे मैंने अपने विद्यालय के छात्र-छात्राओं में गणित विषय के प्रति रुचि एवं आकर्षण उत्पन्न करने में प्रयोग किया।

यदि आपसे कोई 1 से 35 तक की क्रमागत संख्याओं का योग ज्ञात करने के लिए कहें तो आपको यह कार्य बहुत कठिन एवं अरुचिकर लगेगा, क्योंकि इन संख्याओं को जोड़ने के लिए एक लम्बी प्रक्रिया को अपनाना पड़ेगा, जैसे– 1+2+3+4+5+6+7+8+9+10+11+12+13+14+15+16+17+18+19+20+21+22+23+24+25+26+27+28+29+30+31+32+33+34+35 = **630**

इस प्रकार 1 से 35 तक की संख्याओं को जोड़ने से इतना समय लगता है कि आपकी गणित विषय के प्रति अरुचि उत्पन्न हो जाएगी। लेकिन इन क्रमागत संख्याओं के योग को ज्ञात करने के लिए यदि कोई सरल विधि को अपनाया जाए तो छात्र-छात्राओं में गणित के प्रति रुचि को उत्पन्न किया जा सकता है। इस प्रकार क्रमागत संख्याओं का योग ज्ञात करने के लिए निम्न सूत्र का प्रयोग किया जाना चाहिए–

$$(\text{प्रथम संख्या}+\text{अन्तिम संख्या})\times\frac{\text{अन्तिम संख्या}}{2}$$

= क्रमागत संख्याओं का योग

$$1+35\times\frac{35}{2}=\frac{36\times35}{2}=18\times35=630$$

जहाँ परम्परागत तरीके से क्रमागत संख्याओं का योग ज्ञात करना कठिन है वहीं ऊपर बताये सूत्र की सहायता से क्रमागत संख्याओं का योग ज्ञात करना रुचिकर है। इस प्रकार गणित विषय में रुचिकर विधियों को अपनाकर इसको छात्र-छात्राओं के लिए रुचिकर विषय बनाया जा सकता है।

इसी प्रकार यदि हमें 1 से 101 तक की क्रमागत संख्याओं का योग परम्परागत तरीके से ज्ञात करना हो तो 1 से 101 तक की संख्याओं को जोड़ना पड़ेगा जो काफी कठिन एवं श्रम का काम है, जिसके परिणामस्वरूप छात्र छात्राओं की गणित विषय के प्रति रुचि नहीं बन पायेगी। लेकिन यदि ऊपर बताये गये सूत्र की सहायता से क्रमागत संख्याओं का योग ज्ञात किया जाएगा तो छात्र-छात्राओं की गणित विषय के प्रति रुचि बढ़ेगी तथा उनका प्रिय विषय बन जाएगा। इन संख्याओं के योग को निम्न प्रकार ज्ञात किया जा सकता है–

परम्परागत तरीका : 1+2+3+4+5+6+7+8+9+10+11+12+13+14+15+16+17+18+19+20+21+22+23+24+25+26+27+28+29+30+31+32+33+34+35+36+37+38+39+40+41+42+43+44+45+46+47+48+49+50+51+52+53+54+55+56+57+58+59+60+61+62+63+64+65+66+67+68+69+70+71+72+73+74+75+76+77+78+79+80+81+82+83+84+85+86+87+88+89+90+91+92+93+94+95+96+97+98+99+100+101 = **5151**

रुचिकर विधि :

$$1+101\times\frac{101}{2}=\frac{102\times101}{2}=51\times101=5151$$

इस प्रकार गणित विषय को परम्परागत तरीकों के बजाय यदि रुचिकर तरीकों से विद्यालयों में पढ़ाया जाये तो इस विषय को रुचिकर बनाया जा सकता है।

–अध्यापिका,
राजकीय प्राथमिक विद्यालय, बड़ी की ढाणी,
मुहाना, पं.स. सांगानेर, जयपुर

जय जय हे भगवति सुर भारती

जय जय हे भगवति सुर भारती
तव चरणौ प्रणमामः।
नाद ब्रह्ममयि जय वागेश्वरि
शरणं ते गच्छामः।
त्वमसि शरण्या त्रिभुवन धन्या,
सुर मुनि वन्दित चरणा।
नवरस मधुरा कविता मुखरा,
स्मित रचि रचिरा भरणा।
आसीना तव मानस हंसे,
कुंद तुहिन शशि धवले
हर जड़तां कुरु बोधि विकासं
स्मित पंकज तनु विमले॥
ललित कलामयि ज्ञान विभामयि,
वीणा पुस्तक धारिणी
मष्तिरास्तान् मो तव पद कमले
अदि कुण्ठाविष हारिणी।

***

जयति जय-जय माँ सरस्वती

जयति जय-जय माँ सरस्वती
जयति वीणा धारणी।
जयति पद्मासना माता,
जयति शुभ वर दायिनी।
जगत का कल्याण कर माँ,
तुम हो विघ्न विनाशनी।
जयति वीणा धारणी, जयति.....
कमल आसन छोड़ दे माँ
देख जग की दुर्दशा।
शान्ति की सरिता बहा दे,
फिर से जग में जानिनी।
जयति वीणा धारणी, जयति.....

यों जगाएं गणित में रुचि

❑ दयाराम कुम्हार

विज्ञान एवं तकनीकी के इस युग में गणित शिक्षा का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। स्कूली शिक्षा में वर्तमान हालात में विद्यार्थियों के गणित के स्तर को देखते हुए गणित शिक्षण में काफी सुधार की आवश्यकता है। अधिकांश विद्यार्थियों एवं अभिभावकों की राय गणित विषय के प्रति सकारात्मक नहीं है। कुछ इसे नीरस और कठिन विषय मानते हैं, तो कुछ की नजरों में गणित विषय को समझने के लिए तीव्र बुद्धि का होना आवश्यक है। गणित विषय के प्रति विद्यार्थियों एवं अभिभावकों की उपर्युक्त धारणा को एक योग्य गणित अध्यापक काफी हद तक दूर कर सकता है। एक गणित अध्यापक को सर्वप्रथम उन कारणों को खोजने का प्रयास करना चाहिए जिनकी वजह से विद्यार्थियों को गणित नीरस लगता है। यदि बच्चों के लिए गणित एक कठिन एवं नीरस विषय ही बना रहा तो उनका गणित सम्बन्धी ज्ञान अधूरा ही रहेगा।

गणित को कैसे रोचक बनाया जाये, यह गणित शिक्षकों के लिए बहुत ही महत्त्व का विषय है। इस प्रश्न के दो महत्त्वपूर्ण पहलू हैं, पहला यह कि बच्चों को गणित के अध्ययन के प्रति कैसे आकर्षित किया जाए और दूसरा यह है कि एक बार गणित के अध्ययन के प्रति रुचि तथा उत्साह जागृत होने पर उसे किस प्रकार बनाए रखा जाए? कुछ बिन्दु इस सम्बन्ध में लाभकारी हो सकते हैं।

एक गणित अध्यापक को चाहिए कि गणित विषय के प्रति बच्चों एवं समाज में बनी कठिन विषय की अवधारणा को दूर करने का हर सम्भव प्रयास करे। गणित अध्यापक विद्यालयों में गणित विषय के अध्यापन की शैक्षिक योग्यता को रखते हैं लेकिन पाठ्यक्रम की विषयवस्तु को रोचक तरीके से नहीं समझा पाने के कारण विद्यार्थियों के लिए गणित विषय अरुचिकर बन जाता है। छोटी कक्षाओं के बच्चे तो गणित विषय से जी चुराने लगते हैं। अध्ययन-अध्यापन संस्थितियों में विद्यार्थियों की भूमिका प्रमुख है यदि गणित अध्यापक छात्रों की इस मानसिकता से अवगत हो जाए कि छात्र एक अच्छे गणित अध्यापक के कक्षागत व्यवहारों में कौन-कौन सी विशेषताएँ देखता है ताकि उनके अनुसार स्वयं को ढाल सके तो इसका प्रभावी असर विद्यार्थियों के गणित शिक्षण पर पड़ेगा।

गणित विषय का अध्यापन करवाते समय एक गणित अध्यापक को निम्न बातों पर विशेष ध्यान रखना चाहिए–

1. गणित में स्मरण शक्ति, शीघ्रता तथा शुद्धता का विशेष महत्व है। इसलिए विद्यार्थियों को दैनिक जीवन से सम्बन्धित उदाहरणों द्वारा अधिक से अधिक अभ्यास करवाना चाहिए।

2. गणित के तथ्यों एवं सिद्धान्तों को समझाने के लिए क्रियात्मक कार्य को अधिक महत्व देना चाहिए ऐसा करके गणित विषय को रुचिकर बनाया जा सकता है।

3. प्राथमिक स्तर के कक्षा के विद्यार्थियों को गणित विषय का आधारभूत ज्ञान करवाते समय मूर्त वस्तुओं एवं गणितीय उपकरणों का उपयोग करना चाहिए। ऐसा करने से बच्चों में गणित के प्रति रुचि जागृत होगी।

4. गणित विषय में अभ्यास कार्य अत्यावश्यक है परन्तु बिना समझ के मात्र अभ्यास करवाने से पूर्ण उपलब्धि प्राप्त नहीं हो सकती। इसलिए गणित में विद्यार्थियों को विषयवस्तु की जानकारी देने के पश्चात् अधिक से अधिक अभ्यास अनिवार्य है। गणित में रटन पद्धति का कोई महत्व नहीं है। विद्यार्थियों की इस प्रकार की आदतों पर रोक लगाने का प्रयास करना चाहिए।

5. प्रत्येक कक्षा में भिन्न-भिन्न मानसिक स्तर वाले विद्यार्थी होते हैं और ऐसी शिक्षण विधि अपनाना कठिन है जो सबके लिए पूर्णतया उपयुक्त हो अध्यापक को चाहिए कि वह एक से अधिक विधियों के उचित समन्वय द्वारा अध्यापन करवाए ताकि सभी विद्यार्थी समस्या को हल कर सकें।

6. कई बार ऐसा देखने में आता है कि गणित अध्यापक किसी भी समस्या का समाधान स्वयं करते जाते हैं। विद्यार्थियों का इसमें कोई सहयोग नहीं लिया जाता है। विद्यार्थी केवल मूक श्रोता बनकर बैठा रहता है। गणित अध्यापक को विद्यार्थियों से आवश्यकतानुसार प्रश्न पूछ कर तथा सक्रिय सहायता लेकर समस्या का हल करना चाहिए ताकि कक्षा का वातावरण पूरी तरह सक्रिय एवं सजग बना रहे।

7. गणित शिक्षण में श्यामपट्ट का प्रयोग अत्यावश्यक है। श्यामपट्ट का उचित तरीके से प्रयोग करना भी एक गणित अध्यापक के लिए कला है और इसका विद्यार्थियों पर सीधा प्रभाव पड़ता है। अतः श्यामपट्ट का संतुलित व उपयुक्त प्रयोग आवश्यक है।

8. गणित का नियमित अध्यापन व अभ्यास के माध्यम से निर्धारित पाठ्यक्रम समय पर पूरा किया जाना चाहिए।

9. शिक्षण व अध्यापन प्रक्रिया का ऐसा स्वरूप प्रदान करना जिसमें छात्र सक्रियता व सहयोग को विशेष महत्व दिया जाए।

10. गणित के कलात्मक और सौन्दर्यात्मक पक्ष से परिचित कराकर गणित के अध्ययन को रुचिकर बनाया जा सकता है। मन को प्रसन्न करने वाली सभी कलाओं तथा सौन्दर्यात्मक दृश्यों में गणित के सिद्धान्त किस तरह कार्य करते हैं यह जानकर छात्रों में गणित के प्रति सहज आकर्षण पैदा हो सकता है। गणित एक नीरस विषय नहीं है। इसमें मनोरंजन और खेलकूद का भी स्थान है, विषय के प्रति इस प्रकार की भावना उत्पन्न करने का प्रयत्न किया जाना चाहिए। छात्रों को गणित सम्बन्धी विभिन्न खेलों को खेलने के लिए प्रेरित करना चाहिए तथा गणित सम्बन्धी विभिन्न सहायक साधनों का प्रयोग करके गणित को रोचक बनाने का प्रयत्न करना चाहिए।

11. बच्चे स्वभाव से ही क्रियाशील होते हैं। अतः उनकी गणित के अध्ययन की रुचि जागृत करने तथा अधिक समय तक बनाये रखने के लिए यह आवश्यक है कि गणित की सैद्धान्तिक पढ़ाई के साथ-साथ उनके क्रियात्मक पक्ष पर भी बल दिया जाए। इस तरह से छात्रों का वास्तविक क्रियात्मक सहयोग लेकर गणित की शुष्क पढ़ाई आसानी से सरसता में परिणित हो सकती है।

उपर्युक्त बातों को मद्देनजर रखकर अगर एक गणित अध्यापक शिक्षण करवाता है तो निश्चित रूप से गणित विषय के प्रति विद्यार्थियों की रुचि बढ़ेगी।

–वरिष्ठ अध्यापक
राजकीय माध्यमिक विद्यालय, सानवाड़ा (सिरोही)

हासिल की उलझन

❑ डॉ. जमनालाल बायती

आजकल प्राथमिक कक्षाओं में प्रायः गिनती या अंक ज्ञान 1 से आरम्भ करके 100 तक पढ़ाते हैं। इस अध्यापन में 1 से लेकर 10 तक की या 11 से लेकर 20 तक की संख्या एक ही पहाड़े में आती है। 1 से लेकर 9 तक तो कोई हासिल नहीं लगता पर 9 के बाद 10वीं संख्या उसी पहाड़े में आते ही 1 हासिल लगता है। इस भाँति अगले पहाड़े में 11 से 19 तक 1 तथा उसी पहाड़े में दसवीं संख्या 20 आते ही हासिल के 2 तथा इसी भाँति 21 से 29 तक भी दो तथा उसी पहाड़े के दसवीं संख्या 30 आते ही हासिल के तीन हो जाते हैं। इसी क्रम में 91 से 99 तक तो हासिल के 9 तथा इसी पहाड़े की दसवीं संख्या 100 आते ही हासिल के दस हो जाते हैं।

शायद इस शिक्षण में बालक की कोई कठिनाई हो क्योंकि प्रथम पहाड़े में 1 से 9 तक की संख्या पर तो कोई हासिल नहीं तथा उसी पहाड़े में अगली दसवीं संख्या आते ही हासिल शुरू, 11 से 19 तक नौ संख्याओं का हासिल 1 तथा उसी पहाड़े में अगली दसवीं संख्या आते ही हासिल दो। अर्थात् प्रत्येक पहाड़े में दस संख्याएँ होती हैं। प्रथम पहाड़े में प्रथम 9 संख्याओं के लिए कोई हासिल नहीं तथा दसवीं संख्या के लिए एक, इसी भाँति अगले 11 से 20 तक की गिनती वाले पहाड़े की 10 संख्याओं में से प्रथम 9 के लिए 1 तथा अगली दसवीं संख्या के 20 के लिए हासिल दो बन जाते हैं। आगे भी यही क्रम जारी रहता है।

इन पंक्तियों का लेखक गणित का विद्यार्थी नहीं है। पर इस हासिल की दुविधा से बालक को बचाने के लिए तरीका यों सुझाया जा सकता है–

एक से दस तक की संख्याओं का एक पहाड़ा माना जाता है। प्रथम पहाड़े की 1 से 9 तक की प्रत्येक संख्याओं में एक-एक अंक है तथा दसवीं संख्या में दो अंक हैं। अब यदि प्रथम पहाड़े को 1 के अंक से आरम्भ न करके शून्य से आरम्भ करें तथा दसवीं संख्या को अगले पहाड़े में मिला दी जाए तो इससे पहाड़ों का क्रम इस प्रकार हो जाएगा–

0 से 9, 10 से 19, 20 से 29, 30 से 39, 90 से 99 संख्या प्रत्येक पहाड़े में दस ही रखनी है।

0	10	20	30	40	50	60	70	80	90
1	11	21	31	41	51	61	71	81	91
2	12	22	32	42	52	62	72	82	92
3	13	23	33	43	53	63	73	83	93
4	14	24	34	44	54	64	74	84	94
5	15	25	35	45	55	65	75	85	95
6	16	26	36	46	56	66	76	86	96
7	17	27	37	47	57	67	77	87	97
8	18	28	38	48	58	68	78	88	98
9	19	29	39	49	59	69	79	89	99

इस नवीन क्रम से एक और सुविधा प्राप्त होगी कि 0 से 9 तक की दस संख्याओं पर कोई हासिल नहीं होगा। पहले भी प्रथम 9 संख्याओं तक तो कोई हासिल नहीं था पर दसवीं संख्या 10 आते ही हासिल बन गया। अन्य पहाड़ों में भी 19 तक 1, 29 तक 2, 39 तक 3 पर क्रमशः उन्हीं पहाड़ों में दसवीं संख्या जुड़ते ही 2, 3 तथा 4 हासिल बन जाते हैं। इस नई व्यवस्था से हर दस संख्या के लिए एक ही हासिल रहेगा तथा 0 से 9 के लिए शून्य, 10 से 19 तक की दस संख्याओं के लिए 1, 20 से 29 तक दस संख्याओं के लिए 2 तथा 30 से 39 तक की दस संख्या के लिए आगे भी जारी रहेगा। 10 से 99 तक के पहाड़ों में हर 10 संख्या का पहाड़ा बनने के बाद ही हासिल बदलेगा इससे पूर्व नहीं। प्रथम पहाड़े में पूर्व से प्रचलित पद्धति के अनुसार दसवीं संख्या में दो अंक भी नहीं होंगे, इस पहाड़े का सभी संख्याएँ 0 से आरम्भ होकर 9 तक एक-एक अंक का ही होगा, 10 से 99 तक के पहाड़ों में प्रत्येक संख्या में दो-दो अंक होंगे। पूर्व के समान 91 से 100 तक पहाड़े में अंतिम संख्या के तीन अंकों का सम्प्रत्यय भी सम्मिलित नहीं होगा जिसके पहाड़े में दसवें स्थान पर आते ही हासिल के दस भी दो अंक वाली संख्या बन जाती है। जबकि 10 से 99 तक की संख्याओं का हासिल भी एक अंक वाला ही रहता है।

इस प्रकार की अध्यापन व्यवस्था में साथी अध्यापकों को शून्य तथा 100 संख्या का ज्ञान प्रथम से कराना होगा। पर बच्चों को किसी भी पहाड़े में दसवीं संख्या आते ही हासिल बदलने की दुविधा से बचाया जा सकता है। इस क्रम में पढ़ाने पर और किस प्रकार की अड़चन या दुविधा आ सकती है, गणित के विद्यार्थी इस बारे में और लेखनी उठा सकें तो विचारों में और स्पष्टता आवेगी।

–बी-186, आर.के. नगर, भीलवाड़ा-311001

माला फेरत जुग गया, गया न मन का फेर।
कर का मनका डार दे, मन का मनका फेर॥

***

साँई इतना दीजिये, जामें कुटुम्ब समाय।
मैं भी भूखा ना रहूँ, साधु न भूखा जाय॥

शिविरा विचार मंच

*गणित विशेषांक हेतु सुधि पाठक शिक्षकों/गणित प्रेमियों से उनके अनुभवजन्य विचार शिविरा विचार मंच के अन्तर्गत प्रकाशित करने के लिए आमंत्रित किए गए थे। विषय था– **बालकों के लिए गणित शिक्षण रोचक और आनन्ददायी कैसे हो? मेरे अनुभव।** बड़ी संख्या में वैचारिक अवदान अपने सम्माननीय पाठकों की ओर से शिविरा को मिला। इस अंक में भी उक्त विषय पर विचार मंच के अन्तर्गत प्राप्त विचारों को प्रकाशित किया जा रहा है। –व.सं.*

नीरस, कठिन विषय नहीं है गणित

सामान्यतः शिक्षक एवं विद्यार्थी गणित को एक नीरस एवं कठिन विषय मानते हैं। क्योंकि प्राथमिक स्तर से ही शिक्षक गणित की प्रकृति को समझे बिना गणित को तानाशाही पूर्वक कलन विधि से पढ़ाते हैं। अध्यापक का उद्देश्य परीक्षा पास कराना होता है। जिसमें शिक्षक सीधे तौर पर आगमन विधि की उपेक्षा कर निगमन विधि के द्वारा बच्चों को सूत्र-नियम रटाकर उन्हें समस्या समाधान कराते हैं। जिससे मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों के प्रतिकूल अधिकतर छात्र गणित में पिछड़ जाते हैं।

जबकि वास्तव में गणित के आधारभूत नियमों, सूत्रों को मूर्त उदाहरणों से आगमन विधि द्वारा प्रतिपादित किया जावे। तत्पश्चात् उनका उपयोग एवं अभ्यास पर्याप्त मात्रा में होना चाहिए। साथ ही गणित की प्रकृति के अनुरूप गणित को समझने की सूझ एवं तर्कशक्ति विकसित की जावे। निरन्तर अभ्यास से विद्यार्थी को गणित की समस्याओं से खेलना कष्टप्रद न होकर आनंद प्रदान करेगा। समस्याओं के समझने तथा उनके समाधान ढूँढ़ने पर विद्यार्थी आगे बढ़ने की प्रेरणा एवं अपार प्रसन्नता का अनुभव करेगा। जिज्ञासु बनकर वह गणितीय दृष्टिकोण से संसार के रहस्यों को जानने का प्रयास करेगा। जिससे बौद्धिक एवं तार्किक शक्ति के द्वारा बच्चों में सामाजिक एवं व्यावहारिक गुणों का विकास होगा।

ऐतिहासिक दृष्टि से देखें तो भारत गणित की दृष्टि से विश्व में अग्रणी रहा है। प्राचीन भारत के गणितज्ञों आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त ने दाशमिक पद्धति, π का मान एवं शून्य की अवधारणा, मध्ययुगीन एवं आधुनिक भारत के गणितज्ञों भास्कराचार्य, रामानुजन, स्वामी भारती कृष्णतीर्थ के द्वारा अनन्त की कल्पना, संख्या सिद्धान्त, वैदिक गणित पूरे विश्व को प्रदान किया।

विडम्बना है कि वर्तमान में प्राथमिक स्तर से ही गणित विषय को भय वातावरण में पढ़ाया जा रहा है। इसके समाधान में शिक्षक शिक्षण के समय बच्चों के स्तर के अनुरूप रोचकता लाने हेतु गणितीय गीत, कविताएँ, कहानी, चुटकले, मानसिक पहेलियों एवं अनोखे प्रश्न, गणितीय जादू, तीलियों के खेल, मायावर्ग एवं मायाकृतियों एवं खेलों को अपने शिक्षण में अनिवार्यतः शामिल करें। यद्यपि विगत वर्षों में शिक्षाकर्मी परियोजना, न्यूनतम अधिगम स्तर कार्यक्रम (MLL), गुरुमित्र योजना, लोकजुम्बिश परियोजना, डीपीईपी, सर्वशिक्षा अभियान एवं राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान, डाइट एवं उच्च अध्ययन संस्थानों द्वारा शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया जा चुका है/दिया जा रहा है। परन्तु उसका अपेक्षित प्रतिफल प्राप्त नहीं हो रहा है। आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षक उन नवाचारों को कक्षा में बच्चों के बीच ले जाकर पक्का-पक्का सीखने की प्रक्रिया को गति दे। तभी प्रशिक्षण की सार्थकता है।

भारत सरकार द्वारा वर्ष 2012 को अन्तर्राष्ट्रीय गणित वर्ष एवं प्रतिवर्ष 22 दिसम्बर को राष्ट्रीय गणित दिवस मनाया जाना सुखद पहल है।

कुछ गणितीय रोचक गतिविधियाँ/खेल/पहेलियाँ प्रस्तुत की जा रही हैं– (1) सभी बच्चे गोल घेरे में रहकर 'मामाजी ने लड्डू बाँटे - बच्चे खायें झूम के - कितने भाई कितने-आप चाहो जितने' गतिविधि द्वारा जोड़, बाकी, गुणा, भाग के अभ्यास करवाए जावें।

(2) गोल घेरे में बच्चों को बिठाकर संख्या खेल जैसे 1, 2, 3, ... बोलकर संख्या की 7 से विभाजित होने या इकाई का अंक 7 होने पर 'चुप' या 'ओम' बोलने का खेल खिलाया जावे।

(3) 'पचपन पाँच उन्यासी नौ' कर दो पूरे बीगे सौ।

(4) 'छप्पन छियासठ बाईस नौ' रुपये आवै पूरे सौ।

(5) सेर मिठाई, बावन नाई कितनी-कितनी आई।

(6) 1 किग्रा. चीनी 500 ग्राम के बाँट से एक बार में 750 ग्राम कैसे तौलेंगे।

(7) राम के पास 5 रोटी एवं मोहन के पास 3 रोटी हैं। जबकि सोहन के पास रोटी नहीं है। तीनों बराबर-बराबर रोटियाँ खाते हैं। यदि सोहन 8 रु. दे तो राम और मोहन को कितने-कितने रुपये मिलेंगे।

(8) 9 डिब्बों में 10-10 ग्राम के 10 सिक्के तथा 1 डिब्बा में 9-9 ग्राम के 10 सिक्के हैं। सभी 10 डिब्बों में से कम वजन का डिब्बा एक बार में तराजू से तौलकर कैसे पता लगाएँगे। जबकि सभी डिब्बे देखने में, स्पर्श करने में समान दिखते हैं।

(9) 100 कि.ग्रा. भार के पत्थर के अलग-अलग भार के 7 टुकड़े करें। जिनसे 1 कि.ग्रा. से लेकर 100 कि.ग्रा. तक तौला जा सके।

(10) वह छोटी से छोटी संख्या बताएँ। जिसे दो संख्याओं के घनों के योग के रूप में दो भिन्न प्रकार से लिखा जा सकता है।

यदि फिर भी सफलता संदिग्ध नजर आती है तो शिक्षाविद बेकन के शब्दों में 'असफलता केवल यह सिद्ध करती है कि सफलता का प्रयत्न पूरे मनोयोग से नहीं किया गया है।'

–महेश कुमार मंगल, प्रधानाचार्य
रा.उ.मा.वि., बाड़ी, धौलपुर (राज.)

रोचक गणित शिक्षण

वर्ष 2012 'गणित वर्ष' के रूप में मनाया जा रहा है, यह हर्ष का विषय है। शिविरा पत्रिका ने विचार मंच के जरिये उक्त विषय पर पाठकों के विचार आमंत्रित किये हैं, निश्चय ही खुशी की बात है, प्रासंगिक विषय है।

गणित को अत्यन्त कठिन व उबाऊ विषय के रूप में मान्यता मिली हुई है, विशेषकर छात्राएँ इससे दूर भागती हैं और इसका प्रभाव यह है कि बी.एससी. करने वाली बहुत कम छात्राएँ होती हैं जिनका विषय गणित होता है, अधिकांश जीव विज्ञान का चयन करती हैं।

यह सर्वथा भ्रामक धारणा हमारे मस्तिष्क में बैठी हुई है, यदि गणित विषय को बचपन से ही बच्चों को रोचक तरीके से समझाये जावें तो इसके प्रति जिज्ञासा व रुझान उत्पन्न किया जा सकता है। इस विषय को उनकी निजी जिन्दगी से जोड़कर खेल-खेल में समझाया जा सकता है। कई ऐसे उदाहरण हैं कि गणित से घबराने वाले व्यक्ति आगे चलकर महान वैज्ञानिक बने हैं। इसी भ्रामक धारणा के शिकार 'आइन्सटीन' भी थे किन्तु उन्हीं के कथनानुसार चाचाजी ने इस धारणा को दूर किया और वे एक महानतम, विख्यात वैज्ञानिक बने जिन्होंने दुनिया को 'सापेक्षता' का सिद्धान्त दिया।

प्राथमिक कक्षाओं में ही गणित विषय के प्रति विद्यार्थी में रुचिजाग्रत करना अतिआवश्यक है ताकि वे आनन्द की अनुभूति के साथ सहज रूप से गणितीय समस्याओं को हल कर दैनिक जीवन में परिस्थितियों के अनुरूप अर्जित ज्ञान का प्रभावी उपयोग करने योग्य बन सकें। इस स्तर में बच्चे जल्दी सीखते हैं, मसलन गणित की छोटी-छोटी बातें 'जोड़-गुणा-बाकी-भाग' को दैनिक जीवन के उदाहरणों से सम्बन्ध कर आसानी से समझाया जा सकता है।

शिक्षक के साथ-साथ अभिभावकों की भूमिका अधिक महत्व रखती है। बाजार से सामग्री खरीदते समय या खाना-पीना आदि वस्तुएँ का वितरण करते समय उसे गणित से सम्बन्धित कर समझाया जा सकता है। कक्षा में उपस्थित वस्तुओं को आधार बनाकर बच्चों को सिखाया जा सकता है क्योंकि बच्चे प्रत्यक्ष रूप से देखकर तीव्र गति से सीखते हैं। इस प्रकार प्राप्त ज्ञान स्थायी होता है।

इस प्रकार निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं सवाल रुचि, अभिरुचि व रुझान पैदा करने का है, और यह कुशलतया शिक्षक ही कर सकता है। बचपन से ही किया जाये तभी गणित के प्रति रुचि उच्च कक्षाओं, महाविद्यालय व विश्वविद्यालय तक रह सकती है।

–डॉ. अन्जना शर्मा,
शर्मा सदन, मुनी आश्रम के पास, झुंझुनूं

गृहकार्य जाँच एवं गुणवत्ता

❑ मांगीलाल आर्य

गृह कार्य की जाँच एक नियमित प्रक्रिया है जिसको अपनाकर संस्था-प्रधान अपने शिक्षकों की कार्य-कुशलता से सुपरिचित हो सकता है एवं उनके विकास के लिए मार्गदर्शन दे सकता है। यह विद्यार्थियों के शैक्षिक स्तर के उन्नयन के लिए महत्वपूर्ण कारक है।

गृहकार्य जाँच के निम्नांकित उद्देश्य हैं– 1. विद्यार्थियों की गृहकार्य के प्रति रुचि बढ़ाना। 2. इनकी वर्तनी सम्बन्धी सुधार करना। 3. उनमें अपना कार्य समय पर करने की आदत का विकास करना। 4. इससे विद्यार्थियों में लिखित अभिव्यक्ति के कौशल का विकास करना। 5. शिक्षकों के कार्य सम्पादन तथा उनकी उपलब्धियों का विश्वसनीय मूल्यांकन करना। 6. शिक्षकों का गृह-कार्य के दायित्व वहन करने में रुचि जाग्रत करना। 7. संस्था प्रधान द्वारा नियमित मार्गदर्शन देते हुए उनकी कार्य-क्षमता में वृद्धि करना।

संस्थाप्रधान के लिए निर्देश– 1. प्रत्येक कक्षा के लिए विषयवार गृह कार्य जाँच की वार्षिक योजना सत्रारम्भ में तैयार करें। 2. गृह कार्य जाँच-प्रतिवेदन का एक प्रपत्र तैयार करें और उसी के अनुरूप सुझाव दें। 3. गृह कार्य उत्तर-पुस्तिकाओं पर अपने लघु हस्ताक्षर करके मोहर लगावें ताकि छात्रों का मनोबल बढ़ सके। 4. गृह कार्य जाँच की समेकित रिपोर्ट रखने के लिए एक निर्धारित रजिस्टर का संधारण करें। 5. गृह कार्य जाँच की योजना का एक प्रारूप तैयार करें जो जुलाई से अप्रैल तक का हो जिसमें कक्षा, विषय और दिनांक का उल्लेख हो।

शिक्षकों के लिए निर्देश– 1. सत्रारम्भ में प्रत्येक शिक्षक अपने विषय की गृहकार्य की वार्षिक योजना तैयार करके संस्थाप्रधान से अनुमोदन करावे। 2. गृह कार्य विद्यार्थियों को नियमित रूप से उचित मात्रा में देवें। 3. दिए गए गृह कार्य की जाँच की जाए एवं सकारात्मक सुझाव देवें। 4. यदि विशिष्ट कार्य हो तो कक्षा में उस छात्र को प्रोत्साहित किया जाए ताकि अन्य छात्र भी अनुकरण कर सकें। 5. गृह कार्य परीक्षोपयोगी हो ताकि परीक्षा में छात्रों को अच्छी सफलता मिल सके।

गृह कार्य की गुणवत्ता के सार्थक प्रयास– 1. कक्षा कार्य के समानार्थ प्रश्न गृह कार्य के रूप में दिए जाएँ। 2. गृह कार्य देने का एक समय-विभाग चक्र तैयार करें। 3. गृह कार्य के प्रश्नों की संख्या सीमित रखी जाए जिसमें सभी कौशल समाहित किये जा सकें। 4. गृह कार्य की नियमित जाँच के लिए प्रति कक्षा चार-पाँच मेधावी छात्रों को मॉनीटर नियुक्त किए जाएँ। पूर्व में इन मॉनीटरों की उत्तर-पुस्तिकाएँ जाँच कर उचित निर्देश दे देवें। 5. गृह कार्य देते समय निम्नांकित बिन्दुओं की पालना करना आवश्यक है– (अ) क्या पाठ/इकाई/उप इकाई की संख्या/नाम लिखा गया है? (ब) क्या प्रश्न/उत्तर सही ढंग से लिखे गये हैं? (स) क्या प्रत्येक पृष्ठ पर क्रम संख्या अंकित हैं? (द) क्या छात्रों द्वारा निर्देशों की पालना की जाती है? (य) क्या समय पर कार्य किया जाता है? (र) क्या लिखित कार्य की गुणवत्ता पर ध्यान दिया गया? (ल) क्या उत्तर-पुस्तिका में जाँच विवरण के लिए इन्डेक्स है?

गृह कार्य की जाँच सूचित एवं असूचित भी की जाए। कभी-कभी यह जाँच शिक्षक समूह से भी की जाए तो इसके सार्थक परिणाम निकलेंगे।

–प्रधानाचार्य, रा.उ.मा.वि., जसनगर (नागौर)

प्रेरणा-स्रोत बनें, न कि यश के भागी

❑ मुरारी लाल कटारिया

हम अध्यापकगण परीक्षाफल घोषित होने पर वाह-वाही लूटने को लालायित रहते हैं। यह स्थिति विद्यालय स्तर की हो, या महाविद्यालय स्तर की अथवा कोचिंग संस्थानों की हो, सभी अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनने से नहीं चूकते। अपने विषय, अपने विद्यालय, अपनी कोचिंग संस्था के गुणगान करने में मीडिया का सहारा लेते हुए सफलता की ऊँचाइयों को छू लेने की बात करते हैं। सच तो यह होता है कि पाँच से दस प्रतिशत प्रवेश-परीक्षा उत्तीर्ण छात्र-छात्राएँ उस संस्था के चमकते सितारे बन जाते हैं, शेष विद्यार्थी अंधकार के गर्त में डूब जाते हैं। केवल अच्छे प्राप्तांक अभ्यर्थी पर हम इतरायें, तो कम प्राप्तांक अथवा अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों को दुःखद स्थिति से कौन उबारेगा? इतने छात्रों ने प्रथम श्रेणी, इतने विद्यार्थियों में विशेष योग्यता प्राप्त की। उनकी सफलता के यश के भागी बनने की लालसा पर पानी फिर जाएगा, जब हम असफल छात्रों पर दृष्टि डालेंगे। भूलकर भी यश के भागी न बनें। हम असफल अथवा कम प्राप्तांक विद्यार्थियों का अवलोकन करें, तो हम अपने आपको दोषी पाएँगे। या तो हमने उनकी उपेक्षा की अथवा पूर्व से तीव्रबुद्धि वालों पर विशेष ध्यान दिया। यदि इस प्रकार के परिवेश को उत्पन्न किया था, तो हमसे बड़ा दोषी कोई नहीं। सफलता अथवा अच्छे प्राप्तांक हमारे अध्यापन की कसौटी नहीं हैं। कम प्राप्तांक विद्यार्थियों को और अधिक परिश्रम करने के लिए प्रेरित करना हमारा प्रमुख लक्ष्य होना चाहिए। कुशाग्र-बुद्धि वाले विद्यार्थियों को अपने साथ दो-तीन सामान्य विद्यार्थियों के साथ अध्ययन करने को प्रेरित करने से न केवल कुशाग्र-बुद्धि वाला विद्यार्थी अपनी योग्यता में अभिवृद्धि करेगा, बल्कि वह सामान्य बुद्धि वाले विद्यार्थी को भी अग्रणी बनने में सहायता कर पाएगा। हम अध्यापकगण सकारात्मक सोच रखकर सभी विद्यार्थियों को आगे बढ़ने की प्रेरणा देते रहें। उपेक्षा, तिरस्कार, नकारात्मक सोच विद्यार्थी में हीन भावना उत्पन्न करती है। यह माना कि शत-प्रतिशत बुद्धि को बढ़ा नहीं पाएँगे, परन्तु उचित मार्गदर्शन देकर विद्यार्थी की अभिरुचि जानकर उसे लक्ष्य प्राप्ति को प्रेरित करेंगे, तो वह अपनी मंजिल पा लेने में सफल हो जाएगा। हमारे द्वारा प्रदर्शित उपेक्षा उसके लिए पूर्णतः घातक सिद्ध होगी। और वह अपने आपको परिवार, समाज, राष्ट्र के लिए बोझ समझेगा।

प्रेरणा पाकर वह अपने अन्दर छिपी प्रतिभा को उजागर कर पाएगा। कोई भी अध्यापक घोटकर विद्या की घुट्टी नहीं पिला सकता। परन्तु उसकी अभिरुचि को ध्यान में रखकर, उचित मार्गदर्शन देकर प्रेरित करेगा तो वह पूर्णतः सफलता पाएगा। हमारा उद्देश्य प्रेरणा देने तक सीमित न हो, बल्कि उसे सही मार्ग चुनने में सहायता करने का भरसक प्रयत्न करना चाहिए।

सफलता उनके चरण चूमती है जो कर्मठता और विनम्रता अपनाते हैं। हम अपनी छाप विद्यार्थियों पर तभी छोड़ सकते हैं जब करनी में विश्वास रखेंगे। अध्यापक की कथनी-करनी एक होनी चाहिए। वह एकरूपता, एकरसता, एक-मंतव्य प्रकट करने वाला होना चाहिए। दक्षता, सहनशीलता, संवेदनशीलता, ममत्व उसमें कूट-कूटकर भरी होनी चाहिए।

अध्यापन कार्य अपनाने का; विद्यार्थियों को कुछ नया देने का; मानस बनाया है, तो निश्चित रूप से उनके उत्थान का बीड़ा उठाया है। अध्यापक स्वयं स्वाध्यायी बनकर विद्यार्थियों को भी स्वाध्यायी बनने की प्रेरणा प्रदान कर सकता है। जब अभिरुचि अनुसार शिष्य स्वाध्यायी बनकर लक्ष्य-प्राप्ति में जुट जाता है, तो गुरु का उस पर गौरवान्वित होना अर्थमय लगता है। तब भी यश प्राप्ति की दौड़ से दूर रहकर उसकी निरन्तर उन्नति प्राप्तार्थ जुटे रहना ही उसका पावन धर्म होना चाहिए।

मनोस्थिति को परखकर शिष्य को सन्मार्ग दिखाना ही उसका प्रमुख लक्ष्य होना चाहिए। प्रेरणा से प्रेरित शिष्य कठिनाइयों, परेशानियों, परिस्थितियों से जूझना सीख जाता है। जीवन वही है जो मार्ग की बाधाओं को पार कर सरसता बनाये रखने की सामर्थ्य प्रदान करे। मंथर परन्तु निरंतरता से लक्ष्य प्राप्ति उसके जीवन को सँवारती है। अतः विद्यार्थियों को प्रेरित कर उन्हें अपनी सफलता के लिए उद्वेलित करना ही अध्यापक का उद्देश्य होना चाहिए, न कि वाह-वाही लूटने वाला या यश का भागी बनने वाला !

–से.नि. व्याख्याता
554, शास्त्री नगर, दादाबाड़ी, कोटा-324009

हर देश में तू हर वेश में तू

हर देश में तू हर वेश में तू
तेरे नाम अनेक तू एक ही है
तेरी जन्मभूमि यह विश्व धरा
हर खेल में मेल में तू ही तू है
सागर से उठा बादल बन के
बादल से गिरा जल हो कर के
कहीं नहर बनी नदियाँ गहरी
तेरे भिन्न प्रकार तू एक ही है
हर देश में.....

माटी से अणु परमाणु बना
इस दिव्य जगत का रूप लिया
कहीं पर्वत वृक्ष विशाल बना
सौन्दर्य तेरा तू एक ही है।
हर देश में.....

***

अन्तिम सत्याग्रही; *डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर; अरू पब्लिकेशन्स प्रा.लि., 9 दरियागंज, टेलीफोन ऑफिस के पास, नई दिल्ली-2; संस्करण : 2008; पृष्ठ संख्या : 126; मूल्य : 70.00 रुपये।*

भारत की स्वतंत्रता के पुरोधा पुरुष महात्मा गाँधी ने अपना पहला सत्याग्रह सन् 1907 में किया था। गाँधीजी के इस प्रथम सत्याग्रह के सौ वर्ष व्यतीत हो जाने, सत्याग्रह शताब्दी वर्ष पर डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर द्वारा लिखा उपन्यास 'अन्तिम सत्याग्रही' डांडी यात्रा सत्याग्रह पर आधारित है। इस उपन्यास का प्रकाशन देश के यशस्वी प्रकाशक सरस्वती हाउस समूह के अरू पब्लिकेशन्स प्रा.लि. द्वारा किया गया है, जिसका मुद्रण, साजसज्जा एवं शुद्धता सराहनीय है।

डांडी यात्रा यानी नमक आन्दोलन सन् 1930 में हुआ था। हम जानते हैं कि महात्मा गाँधी आन्दोलन व विरोध जैसे शब्दों से परहेज रखते थे। वे सत् के लिए आग्रह करते थे। अतः गाँधी का आन्दोलन दिखने वाला कार्य वस्तुतः और अन्ततः सत्याग्रह ही होता था। गाँधी के अध्येता इस बात को जानते हैं कि भारत आने से पहले उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में ऐसे प्रयोग किये थे लेकिन तब उनका नाम सत्याग्रह नहीं पड़ा था। पैसिव रेजिस्टेन्स का उस दौर में चलन था। गाँधी जी ने इण्डियन ओपीनियन के पाठकों में एक प्रतियोगिता करवाई थी जिसमें मगनलाल गाँधी ने सत्+आग्रह = सत्याग्रह नाम सुझाया था और तभी से सत्याग्रह अवधारणा देश के समक्ष आई।

साहित्य की एक अद्भुत विशेषता यह है कि कभी-कभी सामान्य चरित्रों में भी महाकाव्यत्व की झलक मिल जाती है और सामान्य असामान्य होकर स्वतः प्रकट होने लगता है। ऐसे क्षणों में जब अनुन्माद और अरेखांकित सत्य प्रकट होने लगता है, तब कथा महाकथा-उपन्यास महाउपन्यास बनता नजर आता है और समग्र संचेतन रोमांचकारी होकर अननुभूत दिव्यता की अनुभूति कराने लगता है लेकिन इसके लिए शब्द की सतत साधना करनी पड़ती है। डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर ऐसे ही दिव्य शब्द सृजक हैं उपन्यास अन्तिम सत्याग्रही डांडी यात्रा के क्षणों का ऐसा ही यथार्थपरक भावानुवाद है जो पाठक पर गहरा प्रभाव छोड़ता है।

समीक्ष्य उपन्यास के प्रमुख पात्र नगारा एवं उसकी पत्नी धतूरी है। नगारा की अवस्था एक सौ वर्ष से ज्यादा हो चुकी है। सौ के आसपास ही धतूरी होगी। इस प्रकार वे दोनों सत्याग्रह के शताब्दी वर्ष की भावना के अनुकूल शतायु पात्र बनकर उपन्यास को और जीवन्त बना देते हैं। नगारा की चाय एवं धतूरी की बीड़ी की आदत पाठक को हँसाती रहती है।

नगारा और धतूरी को पात्र बनाकर लिखे गए इस उपन्यास में डांडी यात्रा का अद्भुत विवेचन किया गया है। नगारा गाँधी के साथ इस आन्दोलन का सहभागी बनना चाहता है लेकिन धतूरी भयभीत है; वह सोचती है कि डांडी यात्रा में जाने पर वह गोरों की कोपदृष्टि का शिकार बन जाएगा। तरह-तरह की प्रताड़नाएँ मिलेंगी और हो सकता है कि उसको मार ही दिया जाए। मगर नगारा डांडी यात्रा से सकुशल लौट आता है। डांडी यात्रा के लिए अपना सब कुछ लुटाने को उतावले हो रहे सत्याग्रहियों का उत्साह देखने वाला था। उपन्यास की चंद लाइनें नजर हैं– 'नगारा ने साबरमती में स्नान किया और प्रार्थना की। प्रातः पाँच बजे वह मुख्य स्थान पर पहुँच गया, जहाँ 78 सत्याग्रही प्रसन्नमुद्रा में अपना सर्वस्व न्यौछावर करने के लिए खड़े थे। वे दो-दो की कतार में थे। उसमें भारत के प्रत्येक प्रान्त का प्रतिनिधित्व था– मुसलमान भी थे, ईसाई भी, गरीब भी थे और अमीर भी, अनपढ़ भी थे और पढ़े-लिखे भी।

नमक तोड़ो कानून शुरू करने से पूर्व गाँधी ने जो पत्र वाइसराय लार्ड इरविन को भेजा। उस पत्र का कथ्य एवं प्रस्तुति रोमांचक है। गाँधी ने क्या गज़ब लिखा है, उस पत्र में। उसे तो पढ़कर ही जाना जा सकता है। समीक्षा की लक्ष्मण रेखा होती है। फिर भी किंचित बात तो कहनी ही है। गाँधी ने न केवल भारत अपितु ब्रिटेन के दृष्टान्त को बड़ी भावुकता के साथ इस पत्र में पेश किया। उन्होंने लिखा था, 'यद्यपि मैं भारत में अंग्रेजी शासन को शाप समझता हूँ तथापि मेरी इच्छा किसी भी अंग्रेज को हानि पहुँचाने की नहीं है। .... हमें राजनीतिक रूप से खरीदे हुए गुलाम बना दिया है और हमारी संस्कृति को हिलाकर रख दिया है।'

उपन्यास अन्तिम सत्याग्रही क्रमशः नगारा और धतूरी को पात्र बनाकर इतनी सहजता से आगे बढ़ता है कि पाठक को समय का पता ही नहीं चलता। नगारा का जीवन्त चरित्र गहरे तक प्रभावित करता है। यहाँ तक कि अन्त में उसकी मृत्यु भी दुःख और क्षोभ के समान्तर।

उपन्यास अन्तिम सत्याग्रही अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिलब्ध महान उपन्यासकार, शिक्षाविद् व साहित्य मनीषी डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर की अन्य प्रतिष्ठित कृतियों के समान उनकी कठोर साधना, गहन ज्ञान, कल्पनाशीलता एवं अनुभव को एक साथ प्रमाणित करता है। प्रकाशक अरू पब्लिकेशन्स ने मुद्रण व प्रस्तुति का कार्य बेहतरीन ढंग से किया है। कागज उत्तम गुणवत्तायुक्त, मुद्रण साफ सुथरा तथा त्रुटिमुक्त है। सवा सौ पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य 70.00 रुपये उपयुक्त है।

–ओमप्रकाश सारस्वत
वरिष्ठ संपादक (शिविरा)

संजीवणी (राजस्थानी कविता संग्रह); *कुमार अजय; साहित्य अकादमी, नई दिल्ली; संस्करण : 2010; पृष्ठ संख्या : 106; मूल्य : 50 रुपये।*

नई पीढ़ी के राजस्थानी कवियों में कुमार अजय पुख्तगी के साथ उपस्थित हुए हैं और अपनी अग्रज रचनाकार पीढ़ी तथा पाठकों का भरोसा पाने में कामयाब रहे हैं। कुमार अजय के लिए कविता विरोध है, प्रतिरोध है, गुस्से का इजहार है, मन के विचलन का प्रतिकार है। जब स्थितियाँ-परिस्थितियाँ और हालात हमारे काबू में नहीं रहते या नियंत्रण के बाहर हो जाते हैं और इनका प्रतिफलन हमारी चाहत के विपरीत परिणाम रूप में सामने आता है, तब कविता जन्म लेती है– 'जद कीं हाथ नीं लागै/अर हाथ मसळतै मिनख नै/आपबीती सारू नीं मिलै सबद/तद/झाळ खायोड़ो मिलख/मांड काढै है कविता...!' परन्तु पूरी कृति के रचनाकर्म में कवि अपनी इस अभिव्यक्ति और बात पर कायम नहीं रहता। कविता-दर-कविता उनकी कविता का आधार-फलक बदलता रहता है। कविता को

गुस्से का इजहार करार देने वाला कुमार अजय का कवि मन 'मां' कविता में अपने ही रचे के विपरीत प्रेम, आस्था, संवेदना और रागात्मकता को समर्पित होता दिखता है– '...बाकी सगळा/ अेक न्यारा ई हिसाब सूं चालै/पण थूं है/अेकदम अळगी/बीं जोड़-बाकी/अर गुणा भाग सूं/म्हारी मां !' इस प्रकार कविता को असहमतियों से उपजे गुस्से का इजहार करार देकर एक व्यापक बहस को निमंत्रित करने की जोखिम से कवि स्वयं को अलग कर लेता है। प्रथम कृति होने के बावजूद यह कहने में कतई शक नहीं है कि कुमार अजय को कविता की समझ है, कविता की तासीर का आस्वाद है और यही कारण है कि उनकी कविताओं में कविता के बीज देखने को मिलते हैं। इन्हीं काव्य-बीजों के उपकरणों की मदद से कवि मनुष्य की भीतरी व्यवस्थागत सहमतियों-असहमतियों को सुलझाने हेतु जद्दोजहद करता दिखता है।

'संजीवणी' की कविताएँ अपने अलग-अलग रंगों से पाठकों का ध्यान आकृष्ट करती है। तमाम विपरीत परिस्थितियों के बावजूद कवि आस्था व विश्वास का दामन नहीं छोड़ता। समय का विद्रूप पूरी शिद्दत से रचकर भी वह आशावान बना रहता है और बदलाव का सपना संजोये हुए है। 'चिड़कली' कविता की ये पंक्तियाँ दृष्टव्य है– 'चिड़कली नीं जांणै/मिनख री भांत/कियां उजाड्या जावै आळा?/और तो और/वा आ ई नीं जाणै/कै कियां कर्‌यो जावै/ मातम उजड़ण रो/अर किण कनै सूं/मांग्यो जावै मुवावजौ?/वा जाणै तो फगत/पाछो अेक-अेक तिणकलो चुगणो/अर आलणो बणावणो/ लगौलग/अणथक...!' सबूतों और गवाहों की न्यायिक प्रक्रिया की व्यवस्था पर व्यंग्य करते हुए कवि कहता है कि– 'ओ इज तो'/थारो ई कसूर है/कै खुद रै/बेकसूर हुवणै रो/कीं सबूत/ नीं दिरीज्यो थां सूं!' इस संग्रह में 'मांयलो जिनावर' 'अभिमन्यु रो अपघात' का 'छळ' अंवेरा गया है तो 'खालीपणो' से उपजे 'भै' के 'मौसम' में 'दुभांत' और 'कसूर' के 'मिरचीबड़ो' का आस्वाद भी पाठक को मिलता है। 'सिरजण रो धरम' की 'गूंथळी' रूपी 'संजीवणी' लिए 'छोरी' 'कलेंडर' की 'आरसी' देखते-देखते 'डोकरी' बन खुद के 'हुवणो नीं हुवणो' का अर्थ तलाशती नजर आती है, वहीं 'प्रीत पानड़ी' के हवाले 'कदै-कदै' 'दुनिया' 'अमीरी' की 'सगती' का 'नूंवो भूगोल' रचकर 'अमरता' प्राप्त कर लेने के लिए प्रयास करती दिखती है। कुल मिलाकर पाठक को पाठकीय 'समर्पण' के बदले 'नेड़ै-आंतरै' का फर्क समझ आ जाता है।

इस प्रकार सामाजिक सरोकारों व विचलनों का संदर्भ इस पूरे काव्य कर्म को पाठकीय जुड़ाव प्रदान करता है और कवि को लोक से जोड़ता है। कुछ कविताओं में कवि मुखर होकर सामने आ जाता है या यूं कहें कि वहाँ कुमार अजय का कवि उपदेशक के रूप में वाचाल हो जाता है, जिसके कारण कविताओं का आंतरिक सौंदर्य और गांभीर्य प्रभावित हुए बगैर नहीं रहता। 'निजर', 'गूंचली' और 'जमानो' ऐसी ही कविताएँ हैं। कुछ अन्य कमजोर कविताएँ भी हैं, बावजूद इसके प्रथम कृति के दृष्टिगत यह कहा जा सकता है कि कुमार अजय के पास कविता की समझ है और काव्य-सृजन के उपकरण हैं और राजस्थानी जगत में उनमें भविष्य के एक समर्थ कवि का अहसास कर सकता है।

–रवि पुरोहित
79, सिविल लाइन्स, गाँधी पार्क के सामने,
बीकानेर-334001 (राज.)

अच्छे कार्यों से ही व्यक्ति सफल बनता है

❑ नरोत्तम देवी

हमारी जीवन यात्रा में मुख्यतः तीन प्रकार के लोग होते हैं। पहले वे जो भरसक प्रयत्न करने पर भी अपनी इच्छाओं की पूर्ति नहीं कर पाते हिम्मत हारकर भगवान, वातावरण व परिस्थितियों को दोष देते हैं। दूसरे प्रकार के वे लोग हैं, जिनके जीवन में इच्छाओं की पूर्ति कभी हो जाती है, कभी नहीं। ऐसे लोग अपने जीवन के इन उतार-चढ़ाव से अवसादग्रस्त होते हैं। तीसरे प्रकार के वे लोग होते हैं जिन्हें साधन, सुविधा हर प्रकार से सम्पन्न वातावरण मिला है और थोड़े से परिश्रम से अपनी मनचाही इच्छापूर्ति करते हैं, परन्तु फिर भी अपनी सम्पत्ति की रक्षा एवं वृद्धि हेतु प्रयासरत रहते हुए, अत्यधिक तनाव से अवसाद के शिकार हो जाते हैं। इस प्रकार संसार के प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में अवसाद के क्षण आते हैं जिनसे निपटना नितान्त आवश्यक है।

इच्छाएँ प्रत्येक मनुष्य के जीवन के साथ जुड़ी है। चाहे छात्र हो, शिक्षक हो। इन्हीं इच्छाओं की पूर्ति हेतु सभी आयु, लिंग, वर्ग के लोग जीवनपर्यन्त प्रयत्नशील रहते हैं। खराब कार्यों के कारण किसी व्यक्ति को वर्तमान में बहुत परिश्रम करने पर भी कठिनाई से सफलता मिलती है और पूर्व के अच्छे कार्य उसे सफल बनाते हैं। इस बात को समझकर प्रत्येक व्यक्ति को लगातार शुभ कर्मों को करने के लिए प्रेरित होना चाहिए और असफल होने पर ईश्वर, परिस्थिति, वातावरण व अन्य पर दोषारोपण करने की अपेक्षा ईश्वर से सत्य पर चलने और ईश्वर के सान्निध्य की प्रार्थना करनी चाहिए ताकि जीवन के अवसाद के क्षणों में सम्बल मिलता रहे, और व्यक्ति सामान्य जीवन जी सके। अवसाद और मानसिक तनाव को दूर करने का सर्वोत्तम उपाय कार्य-कारण होता है प्रत्येक कार्य से पूर्व उस कार्य का कारण उपस्थित रहता है। बिना कारण कोई कार्य नहीं हो सकता। इस तरह इच्छाओं की पूर्ति हेतु व्यक्ति जो भी प्रयत्न व पुरुषार्थ करता है, उसके साथ उसका कारण ही परिणाम का आधार बनता है। सामान्य तौर पर हम केवल उन कारणों का अवलोकन करते हैं। जो उपस्थित हैं, जबकि अप्रत्यक्ष कारणों को न हम देख पाते हैं, न समझ पाते हैं। जैसे व्यक्ति चोरी से, धोखे से या गलत तरीके से अपनी स्वार्थपूर्ति करता है, वह देखने में सफल व्यक्ति दिखता है परन्तु सफल होने के लिए जिन तरीकों को अपनाया है, उसका फल उसे भविष्य में जरूर मिलेगा।

–अध्यापिका
रा.प्रा.वि., ढाणी माणकचन्द मेवाराम रसीदपुरा,
पंचायत समिति धोद, सीकर

नई दवा से कम होगा दमा के दौरे का खतरा

लंदन। अस्थमा की बीमारी से जूझने वालों के लिए अच्छी खबर है। शोधकर्ताओं ने ऐसी नई दवा ईजाद करने में सफलता हासिल की है जो अस्थमा के अटैक का खतरा 20 फीसदी तक कम कर देगी।

इस खोज को लंबे समय से अस्थमा की परेशानी से जूझ रहे लोगों के लिए फायदेमंद माना जा रहा है। दुनिया भर में ही अस्थमा को गंभीर बीमारियों में शामिल किया जाता है। केवल ब्रिटेन में ही अस्थमा के मरीजों की संख्या पचास लाख से ज्यादा है। इनमें से ढाई लाख तो गंभीर रूप से अस्थमा की चपेट में हैं। जबकि, ब्रिटेन में औसतन हर रोज तीन लोगों की मौत अस्थमा के दौरे के चलते हो जाती है।

अस्थमा के उपचार के तौर पर आमतौर पर स्टेरॉयड के इंहेलर या टेबलेट का प्रयोग किया जाता है। इससे मरीज को वक्ती तौर पर राहत मिलती है। लेकिन, अस्थमा के ज्यादा कारगर उपचार की तलाश लगातार ही की जाती रही है। इसी क्रम में शोधकर्ताओं ने धूम्रपान के चलते होने वाली क्रोनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज के उपचार में दी जाने वाली दवा का परीक्षण अस्थमा के मरीजों पर किया। लगातार किए गए परीक्षणों में पाया गया कि इस दवा के प्रयोग से अस्थमा के अटैक का खतरा 21 फीसदी तक कम हो जाता है। टायोट्रोपियम नाम की इस दवा को इंहेलर के जरिए लेने पर फेफड़े बेहतर तरीके से काम करने लगते हैं। यहाँ तक कि जो लोग अस्थमा की घातक अवस्था के शिकार हैं उन्हें भी इस दवा के इस्तेमाल से फायदा होता है।

बिना बिजली के घर को रख सकेंगे ठंडा-गरम

बिजनौर। बहादुरी हो या शिक्षा का क्षेत्र बच्चे हर मोर्चे पर झंडे गाड़ रहे हैं। मॉडर्न ऐरा स्कूल के बच्चों ने बिना बिजली के मकान को गर्मी में ठंडा और सर्दी में गर्म रखने का तरीका खोजा है। इन बच्चों के मॉडल 'सेटअप ऑफ एनर्जी एर्फीसियेंट बिल्डिंग इन बिजनौर सिटी' ने प्रदेश स्तर पर धूम मचाई और नेशनल स्तर के लिए चयनित हुआ है। पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम ने खड़े होकर मॉडल की जमकर सराहना की।

माडर्न ऐरा पब्लिक स्कूल के बच्चों ने 'सेटअप ऑफ एनर्जी एर्फीसियेंट बिल्डिंग इन बिजनौर सिटी' पर काम किया। बच्चों ने यह मॉडल एचओडी बायो होमसाइंस शिक्षिका नेहा त्यागी की देखरेख में बनाया।

यह मॉडल बाराबंकी में 22, 23 और 24 नवम्बर को प्रदर्शित किया गया। यहाँ लगभग 70 जिलों से 301 मॉडल प्रस्तुत किए गए। जहाँ पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम और साइंटिस्ट यशपाल ने 42 मॉडल नेशनल के लिए चयनित किए। इसमें मॉडर्न ऐरा पब्लिक स्कूल का मॉडल भी चुना गया। स्कूल के सीनियर वर्ग के चयनिका चौहान, मोहम्मद जैद, कार्तिक कुमार, शैली चौधरी, अपूर्वा मलिक ने मिलजुल दो माह में मेहनत कर मॉडल बनाया।

बच्चों ने बताया कि अगर मकान बनाते समय कुछ चीजों का ध्यान रखें तो बिना बिजली के गर्मी में घर को ठंडा और सर्दी में गर्म रखा जा सकता है। बच्चों ने बताया कि मकान बनाते समय गैस एक्सचेंजर, छत के ऊपर उल्टे घड़े रखकर बीच की जगह में सीमेंट भरकर जगह को समतल कर दें। घर का मेन गेट पूरब और उत्तर दिशा में होना चाहिए।

जीन थेरेपी से गंभीर बीमारियों का उपचार

वियना। मानव को कई गंभीर बीमारियों से मुक्ति दिलाने में जीन थेरेपी कारगर साबित हो सकती है।

यहाँ तक कि रक्त के रंग को लगभग सफेद कर देने वाली दुर्लभ बीमारी लाइपोप्रोटीन लाइपेज डेफिशियंसी का इलाज भी जीन थेरेपी से संभव है।

लाइपो प्रोटीन लाइपेज डेफिशियंसी एक ऐसी आनुवांशिक बीमारी है जो दस लाख लोगों में से एक या दो को होती है। इससे पीड़ित व्यक्ति साधारण भोजन में मौजूद वसा को पचा नहीं पाता। सामान्य भोजन करने के बाद भी पेट में तेज दर्द और जलन शुरू हो जाती है। यह दर्द इतना असहनीय होता है कि व्यक्ति को अस्पताल में भर्ती कराना पड़ता है। कई बार यह अवस्था जानलेवा साबित होती है।

इस बीमारी का इलाज अब जीन थेरेपी से संभव हो सकेगा। पश्चिमी देशों में जीन थेरेपी को मंजूरी देने वाला प्रस्ताव यूरोप मेडिकल एजेंसी ने यूरोपीय आयोग को भेजा है।

आयोग की मंजूरी मिलने से इस बीमारी का उपचार करने में मदद मिलेगी। एम्सटरडम की दवा कंपनी ने उपचार के लिए इलाझेरा नामक इंजेक्शन तैयार किया गया है।

कंपनी के मुताबिक जीन थेरेपी में पीड़ित व्यक्ति के डी ऑक्सी राइबोन्यूक्लिक एसिड यानी डीएनए में परिवर्तन किया जाता है और पीड़ित के आनुवांशिक कोड के जिस भाग में दिक्कत होती है, उस भाग को हटा दिया जाता है। हालांकि, जीन थेरेपी के परीक्षण के दौरान एक युवक की मौत हो चुकी है जबकि एक अन्य को ल्यूकोमिया की शिकायत हो गई।

एचआईवी का इलाज इंजेक्शन से संभव

वाशिंगटन। एचआईवी पीड़ितों के उपचार में चिकित्सा विज्ञान जल्द ही एक बड़ा कदम भरने जा रहा है। शोधकर्ता बीमारी की रोकथाम के लिए इंजेक्शन बनाने के करीब पहुँच चुके हैं।

इस इंजेक्शन से रोज दवा खाने की जरूरत खत्म हो जाएगी। इंजेक्शन नए संक्रमणों से भी मरीजों को छुटकारा दिलाएगा। वहीं, इस दवा के साइड इफेक्ट भी बेहद कम होंगे। शोध के नतीजों को जर्नल ऑफ इंफेक्शस डिजीज में प्रकाशित किया गया है।

एचआईवी एड्स एक ऐसी बीमारी है जिसका उपचार खोजने में दुनिया भर के ही चिकित्सा विज्ञानी लगे हुए हैं। हाल ही में अमेरिका में बीमारी के उपचार की दिशा में कुछ महत्वपूर्ण खोजें सामने आई हैं। इनमें लार के जरिए एचआईवी संक्रमण की जाँच के लिए घरेलू किट का बाजार में आना व संक्रमण से बचाव के लिए टेबलेट को मंजूरी मिलना शामिल है। इस सिलसिले में यूनिवर्सिटी ऑफ निब्रास्का मेडिकल सेंटर के शोधकर्ता भी एक नई कड़ी जोड़ने के करीब पहुँच गए हैं। शोधकर्ता ऐसे इंजेक्टेबल एंटी रेट्रोवायरल थेरेपी को जल्द ही विकसित करने का दावा कर रहे हैं जिसे मरीज को सप्ताह या पखवाड़े में सिर्फ एक बार देने की जरूरत पड़ेगी। एचआईवी एड्स से पीड़ित मरीजों को फिलहाल लगातार दवा लेने की जरूरत पड़ती है।

उपचार का यह तरीका काफी लंबा और ज्यादा ध्यान देने वाला माना जाता है। शोधकर्ताओं के अगुवा हावर्डजेंडल मैन के मुताबिक इंजेक्शन के जरिए उपचार का प्रयोग एचआईवी पीड़ित चूहों पर किया जा चुका है। दवा के असर से चूहे नए संक्रमणों से बच गए।

अब इस दवा का प्रयोग मनुष्यों में किया जाना है। इसके बाद ही नतीजों की पूरी तरह से घोषणा की जा सकेगी।

सर्जरी नहीं, क्रीम कर देगी चेहरे की झुर्रियों की छुट्टी

लंदन। चेहरे की त्वचा को जवां बनाए रखने के लिए सर्जरी करवाने की जरूरत नहीं पड़ेगी। ब्रिटेन की एक कॉस्मेटिक कंपनी ने ऐसी एंटी रिंकल क्रीम बनाई है जो सात दिनों में झुर्रियाँ घटाने का दावा करती है। क्रीम की कीमत 2,660 रुपये है। महिलाओं में इसकी कितनी माँग है इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि 60,000 महिलाओं ने क्रीम को पाने के लिए ऑर्डर बुक कर रखा है। क्रीम बनाने वाली कंपनी ने बताया कि इसमें 'ए-एफ33' नामक सामग्री का प्रयोग किया गया है जो प्रोटीन की मौजूदगी को बढ़ाता है।

शरीर के अंदर घुल जाएंगे ये उपकरण

लंदन। वैज्ञानिकों ने एक बेहद पतला इलेक्ट्रॉनिक्स बनाया है जो अपना काम पूरा करने के बाद आसानी से शरीर में घुल सकता है। इस नई खोज को कई तरह के चिकित्सकीय कार्यों में इस्तेमाल किया जा सकता है।

वैज्ञानिकों ने बताया कि यह तकनीक पहले से घावों को गर्म रखने में इस्तेमाल होती रही है ताकि उन्हें संक्रमण से दूर रखा जा सके। लेकिन पहले बनाए गए इलेक्ट्रॉनिक्स लम्बे समय तक शरीर में टिक कर रहते हैं। लेकिन यह नया इलेक्ट्रॉनिक्स बेहद कम समय में अपना काम पूरा कर आसानी से शरीर में ही घुल जाता है। इसे नैनोमेंबरेन नामक सिलिकॉन की पतली चादर और मैगनीशियम ऑक्साइड की मदद से बनाया गया है। साथ ही इसके ऊपर सिल्क की परत चढ़ाकर रखी जाती है। जिस कार्य के मकसद से यह शरीर में लगाया जाता है, उसे पूरा करने के कुछ दिनों के अंदर ही यह घुल जाता है।

जल्द तैयार होगी फ्लू की वैश्विक वैक्सीन

वॉशिंगटन। फ्लू के लिए वैश्विक वैक्सीन जल्दी ही बाजार में उपलब्ध होगी। वैज्ञानिक इसके वाइरस में ही मौजूद अणुओं की मदद से इसे तैयार कर रहे हैं। यह वैक्सीन न केवल बड़ों के लिए बल्कि पाँच वर्ष से छोटे बच्चों के लिए भी मददगार साबित होगी। फ्लू वाइरस का हमला शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली में मौजूद एक खास पेपटाइड पर होता है। जिससे प्रणाली में मौजूद प्रोटीन नष्ट होने लगता है। इस वैक्सीन के जरिए प्रणाली में इस पेप्टाइड की मात्रा को बरकरार रखा जाएगा। जिससे प्रोटीन को नुकसान नहीं पहुँचेगा। जिससे फ्लू होने की आशंका लगभग खत्म हो जाएगी।

सिरदर्द में राहत देने के साथ कैंसर का भी पता लगाएगा यंत्र

न्यूयॉर्क। वैज्ञानिकों ने सिरदर्द से छुटकारा दिलाने की तैयारी कर ली है। बादाम के आकार का एक ऐसा यंत्र तैयार किया गया है जो सिरदर्द में राहत देने के साथ-साथ त्वचा के कैंसर का भी पता लगा सकेगा। क्लीवलैंड क्लीनिक्स में इस यंत्र को तैयार किया गया है। इस यंत्र को माइग्रेन और तेज सिर दर्द के शिकार लोगों के ऊपरी मसूड़े में लगा दिया जाएगा। यह डिवाइस इस बात की जानकारी दे देगा कि किस नस में दर्द हो रहा है। इसके अलावा यह यंत्र त्वचा के कैंसर के सबसे जानलेवा रूप 'मेलानोमा' का पता लगाने में भी सक्षम है। यह अगले एक साल में बाजार में आ जाएगा।

जूते में लगा सेंसर बताएगा हड्डियों का हाल

नई दिल्ली। जल्दी ही जूते पहनने के साथ-साथ हड्डियों से जुड़ी बीमारियों के बारे में भी जानकारी मिलेगी। आईआईटी दिल्ली के डिपार्टमेंट ऑफ सिविल इंजीनियरिंग ने जूतों के लिए खास तरह के सेंसर तैयार किए हैं। 'पिजो बेस्ट फुट प्रेशर सिस्टम' नामक यह सेंसर जूते के तले में आसानी से लगाए जा सकते हैं। यह हड्डियों से पड़ने वाले प्रेशर की निगरानी करने में सक्षम हैं। इस तरह भविष्य में होने वाली किसी समस्या का पता पहले ही लगाया जा सकता है। इस पर दबाव डालने पर यह उस दबाव को इलेक्ट्रिक एनर्जी में बदल देता है। इससे हड्डियों की मजबूती में होने वाली कमी का भी पता लगाया जा सकेगा।

स्टेम सेल से होगा डायबिटीज का इलाज

चंडीगढ़। स्टेम सेल थेरेपी के द्वारा अब तक हृदय रोग व कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों का इलाज किया जाता रहा है, लेकिन अब वैज्ञानिकों ने इसकी मदद से टाइप 2 डायबिटीज का भी इलाज करने में कामयाबी हासिल की है। चंडीगढ़ स्थित पीजी आईएमईआर (पोस्ट ग्रेजुएट इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल एजुकेशन एंड रिसर्च) जल्द ही इस थेरेपी से मरीजों का इलाज करेगा।

पीजी आईएमईआर स्थित डिपार्टमेंट ऑफ एंडोक्राइनोलॉजी के विशेषज्ञों का कहना है कि स्टेम सेल थेरेपी की क्षमता हमारी सोच से कहीं ज्यादा है। उन्होंने बताया कि अगर टाइप 2 डायबिटीज के मरीजों को स्टेम सेल का टीका दिया जाए तो इंसुलिन पर उनकी निर्भरता 50 फीसदी तक कम की जा सकती है। डीआरडीओ की ओर से प्रायोजित अध्ययन में ऐसे मरीजों को शामिल किया जो या तो टाइप 2 डायबिटीज के मरीज थे या फिर चयापचय प्रक्रिया में गड़बड़ी के चलते उनके खून में ग्लूकोज की मात्रा बढ़ गई थी।

कीटनाशक का काम करेगा रोबोट

कभी पानी की कमी, कभी बाढ़ और तो कभी कीटनाशक। फसल उगाने से पहले किसानों को कई समस्याओं से जूझना पड़ता है। लेकिन जर्मनी के वैज्ञानिक ऐसा रोबोट बना रहे हैं जो खरपतवार को लेजर से समाप्त कर देगा।

कीटनाशकों की जगह पर वैज्ञानिक ऐसा विकल्प खोजने में लगे हैं जो रोबोट ड्रोन और लेजर किरणों की मदद से खरपतवार को खत्म कर देगा। चिकवीड, डैंडिलियोन और शेफर्ड पर्स ऐसी खरपतवार हैं जो खेती के विकास के समय से ही मध्य यूरोप के किसानों को परेशान कर रही हैं। परम्परागत रूप से इन्हें कीटनाशक डाल कर खत्म किया जाता है जो जहरीला होता है। इसके जमीन और पानी में फैलने की आशंका होती है। इसीलिए वैज्ञानिक इसका विकल्प तलाश रहे हैं। जर्मनी के हनोवर शहर के लेजर केन्द्र में इस बारे में प्रयोग चल रहा है। इससे जुड़े वैज्ञानिक क्रिस्टियान मार्क्स कहते हैं, हमारा मकसद खरपतवार को नष्ट करने का ऐसा तरीका ढूँढ़ निकालना है जो पर्यावरण के ज्यादा अनुकूल हो। कीटनाशक के प्रयोग में खतरे भी कम नहीं।

लेजर किरणों की सहायता से खरपतवार को नियंत्रित करने वाला कार्यक्रम थॉमस राथ और हेइन हाफरकांप की देखरेख में चलाया जा रहा है। जर्मनी में करीब 16 लाख लीटर कीटनाशक का इस्तेमाल हर साल किया जाता है।

उदयपुर

रा.उ.मा.वि., भबराना को श्री दिनेश कुमार जैन से एक लोहे का दरवाजा (12×6 फिट) वजन 426 कि.ग्रा. जिसकी लागत 30,501 रुपये। **रा.उ.मा.वि., जसवन्तगढ़** में श्री वेणीचन्द द्वारा एक रंगमंच (27×27) छत सहित निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 2,00,000 रुपये तथा इसी मंच के अन्दर एक सरस्वती मन्दिर का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 31,000 रुपये। श्री रमेश कुमार से छात्र-छात्राओं के लिए टेबल-स्टूल लोहे की भेंट की जिसकी लागत 13,000 रुपये, श्री रतन सिंह देवड़ा से तीन तीन टेबल स्टूल लागत 3,000 रुपये, **रा.बा.उ.मा.वि., सलुम्बर** में श्री भगवान रायकिया द्वारा 3,15,000 रुपये की लागत से एक कक्षा-कक्ष का निर्माण करवाया गया तथा एक वाटर कूलर लागत 35,000 रुपये विद्यालय को सप्रेम भेंट। **रा.मा.वि., धारता** में श्री दिनेश सोनी द्वारा 11,000 रुपये की लागत से एक प्रार्थना स्थल पर चबूतरा का निर्माण करवाया गया। ग्राम धारता के निवासियों की ओर से 25 सेट लोहे के स्टूल एवं टेबल भेंट एवं समाजसेवी स्व. भंवर लाल वया स्मृति में स्वेटर वितरित किये गये। **रा.मा.वि., शिशवी** को श्री उदय सिंह सारंगदेवोत से फर्नीचर हेतु 12,500 रुपये प्राप्त हुए, श्री विलास नवयुवक मण्डल शिशवी से फर्नीचर हेतु 6100 रुपये प्राप्त हुए। सर्वश्री पारसमल जैन, शम्भु सिंह, वरदीचन्द गायरी, गणेश भारती श्रीमती केशी प्रजापत से प्रत्येक से फर्नीचर हेतु 1300-1300 रुपये प्राप्त हुए। **रा.प्रा.वि., चान्दपोल, उदयपुर** में श्री दिनेश मोर द्वारा एक हजार आठ सौ पन्द्रह वर्ग फीट भूमि दान स्वरूप विद्यालय को भेंट जिसकी लागत 37,87,905 रुपये है।

अजमेर

रा.मा.वि., सेदरिया (श्रीनगर) को श्री सुलतान मोहम्मद खान देशवाली निवासी बड़गाँव से कक्षा 9 व 10 के विद्यार्थियों के लिए 20 लम्बी टेबल व 20 लम्बी बैंच (स्टूल) लागत 40,000 रुपये।

अलवर

रा.बा.उ.प्रा.वि., गुढ़ा (थानागाजी) में श्रीमती नवल व श्रीमती राजकँवर द्वारा अपना पुराना आवासीय भवन जिसका कुल क्षेत्रफल 5070 वर्गफुट रा.बा.उ.प्रा.वि., गुढ़ा को दान में दिया जिसका बाजार मूल्य 2,50,000 रुपये है।

श्रीगंगानगर

रा.मा.वि., पुरानी आबादी सूरतगढ़ को श्रीमती कला भारती (पुस्तकालयाध्यक्ष) से चार छत पंखे लागत 4200 रुपये। श्री ओमप्रकाश कालवा (व.अ.) से दो छत पंखे लागत 2100 रुपये, श्रीमती कविता सचदेवा से दो छत पंखे लागत 2100 रुपये। **रा.मा.वि., धर्मसिंह वाला** को श्री बग्गड़ सिंह से एक वाटर कूलर लागत 20,000 रुपये व कार्यालय हेतु फर्नीचर व एक पंखा लागत 13000 रुपये, श्री गुरुचरण सिंह जाखड़ से 3100 रुपये नकद, श्री काशीराम कड़वासरा से 1100 रुपये नकद, श्री राजेन्द्र सिंह जाखड़ से 1100 रुपये नकद प्राप्त हुए। श्री बग्गड़ सिंह से कक्षा-10 हेतु फर्नीचर लागत 15,500 रुपये, एक वाटर कूलर लागत 31,000 रुपये तथा एक पंखा सिलिंग लागत 1500 रुपये। **रा.मा.वि., 2 एम.एल. (नाथावाली)** में श्री धर्मदत्त शर्मा द्वारा 1,50,000 रुपये की लागत से एक कम्प्यूटर कक्ष मय बरामदा (26'×20'), प्र.अ. टेबल लागत 11,500 रुपये, पानी की मोटर लागत 3500 रुपये, पोषाहार के बर्तन लागत 6,000 रुपये। **रा.उ.प्रा.वि., बालूवाला (8 ओ)** को श्री योगेन्द्रपाल धमीजा से 117 बालक-बालिकाओं को जूते एवं जुराब उपलब्ध करवाई।

चित्तौड़गढ़

रा.मा.वि., काटुन्दा में श्री नारायण लाल धाकड़ द्वारा स्वयं के ट्यूबवेल से सन् 2008 से आज तक पाइप लाइन द्वारा पानी की टंकी निरन्तर रूप से भरते हुए जलापूर्ति कर रहे हैं। **रा.उ.प्रा.वि., मानसिंह जी का खेड़ा** में श्रीमती मधुमति वैष्णव द्वारा 31,000 रुपये की लागत से प्रवेश द्वार का निर्माण करवाया गया। श्री सुरेश प्रजापत द्वारा 25,000 रुपये की लागत से विद्यालय में जलमन्दिर का निर्माण करवाया गया।

चूरू

रा.उ.मा.वि., ढिगारला को श्री हरिसिंह चाहर से 100 सेट (स्टूल+मेज) लागत 1,25,000 रुपये। **रा.मा.वि., ढाढ़रिया चारनान** को समस्त ग्रामवासी द्वारा 1,30,000 रुपये की लागत से 70 टेबल, 70 स्टूल, खेल मैदान का विकास, 300 पादपों की रक्षार्थ हेतु तारबंदी, स्टाफ परिवार से 10 सेलो कुर्सियाँ, विद्यालय में प्रिन्टर, माइक्रोफोन (वायरलेस सेट रेंज 50 मीटर) लागत 11,000 रुपये, श्री खेमचन्द शास्त्री (से.नि. यू.डी.सी.) से एक सेलो वाटर थर्मस 25 लीटर के दो लागत 2500 रुपये, कक्षा-10 के विद्यार्थी से ओरियण्ट सिलिंग फैन एक लागत 2,000 रुपये। **रा.मा.वि., जोगलसर** को श्री मांगीलाल सोनी (पूर्व सरपंच) से एक लोहे की अलमारी लागत 8100 रुपये, श्रीमती नानी देवी पारीक (सरपंच) से चार दरी 12×10 लागत 9100 रुपये, केशूराम कस्वाँ (पू. पं.स. सदस्य) से एक लोहे की आलमारी लागत 6800 रुपये, सर्वश्री दलीप सिंह (प्र.अ.), छगनलाल कस्वाँ, सिरामा राम मेघवाल, मघाराम मेघवाल, गणेशदास स्वामी, चन्द्राराम, भगवाना राम सुथार, मोहन सिंह राठौड़ से प्रत्येक से एक-एक पोलर पंखा और प्रत्येक की लागत 1150 रुपये, ग्रामवासी से 5 प्लास्टिक कुर्सी लागत 2100 रुपये, श्री चन्द्राराम अध्यापक से दो प्लास्टिक कुर्सी लागत 800 रुपये, ईश्वर राम अध्यापक से दस टाटपट्टी लागत 850 रुपये, बुधाराम चौहान से पाँच टाटपट्टी लागत 450 रुपये। **रा.मा.वि., महाराणा प्रताप चौक, सादुलपुर** को श्री नेमीचन्द सरावगी से 106 सेट टेबल-स्टूल लोहे का लागत 1,00,000 रुपये, श्री तनसुखराम से 51 सेट टेबल-स्टूल लोहे का लागत 60,000 रुपये व स्कूल में रंग-रोगन पर खर्च 40,000 रुपये, श्री पुनमचन्द बोथरा से छात्रवृत्ति के रूप में 8500 रुपये नकद, श्री इन्द्रचन्द्र सेठिया से 5100 रुपये नकद, श्री छगनलाल घोड़ावत से वार्षिक उत्सव खर्च हेतु 2,000 रुपये नकद सर्वश्री धर्मचन्द कोचर, चम्पालाल घोड़ावत, गिरधारी लाल भार्गव से प्रत्येक से एक-एक आलमारी व प्रत्येक की लागत 1,500 रुपये, श्री इब्राहिम छींपा से एक छत पंखा लागत 1400 रुपये, सर्व श्री चम्पालाल घोड़ावत, रामावतार सरावगी से प्रत्येक से 5-5 कुर्सी व प्रत्येक की लागत 1200 रुपये। **रा.मा.वि., बीनासर** को बीनासर ग्रामवासी से एक सौ एक टेबल तथा एक सौ एक स्टूल लागत 87,000 रुपये, विद्यालय स्टाफ से दो सिलिंग पंखे लागत 2,500 रुपये, कक्षा-10 के छात्र से 2 कुर्सियाँ, यू.एस.बी.-एक लागत 1800 रुपये, श्री नरेन्द्र कँवल से तीन पंखे लागत 3600 रुपये, श्री लिच्छुराम राव से एक पंखा लागत 1200 रुपये, श्री विष्णुदत्त स्वामी व.अ. से विद्यालय द्वार बोर्ड हेतु 3500 रुपये, कमलकान्त कस्वाँ से एक माईक सेट लागत 10,000 रुपये, श्री कृष्ण कुमार ग्रोवर से एक हारमोनियम लागत 5,000 रुपये, श्री अजय पंवार (व.अ.) से नकद 31,000 रुपये, कक्षा-10 के छात्र से एक पंखा लागत 1100 रुपये। **रा.मा.वि., बाघसरा पूर्वी** को श्री अर्जुनराम चाहर (अ.) से एक माइक सेट लागत 9,000 रुपये, सर्वश्री कानाराम, भंवर लाल गोदारा, गणेशराम गोदारा, बालूराम गोदारा, सोहनराम गोदारा, जगनाराम जांगिड़, रामदेव मांडिया, शिवपाल गोदारा से प्रत्येक से एक-एक छत पंखा तथा प्रत्येक की लागत 1200-1200 रुपये, श्री कुरड़ा राम शर्मा से एक ढोलक प्राप्त हुई। **रा.उ.मा.वि., मालकसर** को सम्पूर्ण ग्रामवासियों के जनसहयोग से 260 मेज व 260 स्टूल लोहे की लागत 2,60,000 रुपये, श्री विजय प्रकाश कुल्हवी द्वारा 30,000 रुपये की लागत से एक पानी की टंकी का निर्माण करवाया गया। **रा.उ.प्रा.वि., मदवास** को श्री उगम सिंह नारायण सिंह व समुन्द्र सिंह ने विद्यालय का मुख्य गेट व नाम के लिए ऊपरी चाप हेतु 19,100 रुपये नकद प्राप्त हुए। **रा.प्रा.वि. नं. 1, सुजानगढ़** को श्री रामकुमार आसोपा द्वारा 84 छात्र-छात्राओं को पोशाक सिलवाकर प्रदान की गई जिसकी लागत 15,050 रुपये।

प्रतिध्वनि

कुत्ते के नाम वसीयत

यह न कोई व्यंग्य लेख है और न ही किंचित भी असत्य। सर्वथा सत्य और तथ्यपरक है। दो महीने पूर्व की बात है। इटली की एक धनाढ्य महिला ने अपनी सम्पूर्ण जायदाद अपने पालतू कुत्ते के नाम लिख दी। इस जायदाद का मूल्य 20 लाख यूरो है जो भारतीय मुद्रा में 14 करोड़ रुपये की बनती है। कुत्ते के नाम वसीयत लिखने वाली यह महिला अपनी पुत्री के साथ इटली के कसार्टा शहर में रह रही है।

कुत्ते के नाम वसीयत बात बहुत विचित्र लगती है। एक साथ कई सवाल दिमाग में खड़े हो रहे हैं। क्या कोई आगे-पीछे नहीं है उस महिला के? यह बात तो नहीं है। उसके कम से कम एक बेटी तो है जिसके साथ वह रह रही है। क्या उसे कोई पात्र परिवारी अथवा रिश्तेदार अथवा कोई सुधिजन नहीं मिला जिसके हवाले वह इतनी विपुल धनराशि कर सकती? आखिर कुत्ते के नाम वसीयत के क्या मायने हैं आदि-आदि।

इटली की यह महिला कोई साधारण महिला नहीं है, यह निश्चित है। हमारे समाज में असाधारण कहलाने के लिए आवश्यक लक्षणों में एक धन-सम्पत्ति है और वह भी कदाचित सर्वोपरि यानी जिसके पास रुपया-पैसा है, वह असाधारण है। इस दृष्टि से इटेलियन बहन का अन्दाज आप लगा सकते हैं। करोड़पति होना भारतीय समाज में बहुत बड़ी उपलब्धि का काम समझा जाता है। वह तो 14 बार करोड़पति है। परिश्रम एवं समझदारी में तो सिरे होगी ही, अन्यथा इतना सम्पदा संचयन कैसे होता। मगर यह क्या किया उसने! कुत्ते के नाम वसीयत! क्या करेगा-कैसे करेगा वह इस विशाल माया का। कुत्ता जो ठहरा। माया की माया भी गजब है। बहुत मुश्किल है इसे समझ पाना। कोई इसे अपरिहार्य मानते हैं तो कोई इसे महाठगिनी बताते हैं। व्यावहारिक रूप से देखें तो यह जरूरी है, मगर उसी सीमा तक जहाँ तक हमारी आवश्यक जरूरतें पूरी न हो जाएँ, उसके बाद तो वह अपने कौतुक दिखाती ही है। कदाचित इसीलिए धन को धिक्कार योग्य पदार्थ करार देते हुए विष्णु शर्मा ने लिखा है–

अर्थानामर्जने दुःखमर्जितानां च रक्षणे।
आये दुःखं व्यये दुखं धिगर्थाः कष्टसंश्रयाः॥

–पंचतंत्र 1/174

धनोपार्जन में दुःख। उपार्जित धन की रक्षा में दुःख। खर्चने में दुःख। आय में दुःख। व्यय में दुःख। सब प्रकार से दुःख देने वाले धन को धिक्कार। जिसके पल्ले धन होता है, उसके मित्र बांधव बेशुमार बन जाते हैं। उनको निहाल कर देने के सब्जबाग दिखाते नहीं अघाते। कैसे ही हो, धन को अपने नाम लिखवाना चाहते हैं। जो धन किसी के नाम प्रमाणित नहीं होता, वह सरकार का हो जाता है। सरकार उसका उपयोग जनहित में कर सकती है। कुत्ते के नाम लिखी वसीयत का भी अन्तपन्त यही होना है। सरकार और सरकार के वाया समाज के काम आना है। माया का यह वाया रूप कई संदेश दे रहा है।

हमारे समाज में ऐसे बहुदृष्टांत मिलते हैं जिनमें धन के औपचारिक वारिस बने लोगों ने अपने कर्तव्यपालन में विमुखता दिखाई है। वर्षों पहले राज्यस्तरीय भामाशाह सम्मान समारोह में एक ऐसी भामाशाह महिला से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था जिसने अपनी तमाम जायदाद एक स्कूल को सौंप दी। इससे नाराज हुए परिजनों ने उसको दुत्कार दिया और अन्ततः उस भामाशाह महिला ने भिक्षावृत्ति अपनाकर जीवनयापन करने का निर्णय कर लिया। कुछ भी हो, एक महान काम उस महिला ने कर दिया। कदाचित्, ऐसी ही किसी अप्रिय सम्भावना से बचने के लिए इटली की इस महिला ने कुत्ते के नाम वसीयत लिखी होगी।

वसीयतकर्ता का यह मन्तव्य लोगों को कुत्ते की स्वामीभक्ति से परिचय करवाने का भी हो सकता है। कुत्ता भले ही जानवर है मगर स्वामीभक्ति में अव्वल दर्जे का है। इंसान धन सम्पत्ति प्राप्त करने के बाद बदल सकता है लेकिन कुत्ता नहीं बदलता। कुत्ता नमक का मूल्य पहचानता है। वह कभी कृतघ्न नहीं हो सकता। इस प्रसंग में गाँधी का न्यासीवाद (Trusteeship) सिद्धान्त स्मरण आता है। हम जो कुछ कमाते हैं, उसमें से अपनी आवश्यकता पूरी होने के पश्चात् बचे धन को समाज को सौंप दें। तब न तो धन के असमान वितरण की कोई शिकायत होगी और न ही सामाजिक विषमता व विद्रुपतावाली कोई बात ही। कुत्ते के नाम वसीयत के मायनों को गहराई से समझा जाना चाहिए।

–ओमप्रकाश सारस्वत, वरिष्ठ सम्पादक
E-mail: opsaraswat58@gmail.com

''माया की माया भी गजब है। बहुत मुश्किल है इसे समझ पाना। कोई इसे अपरिहार्य मानते हैं तो कोई इसे महाठगिनी बताते हैं। व्यावहारिक रूप से देखें तो यह जरूरी है, मगर उसी सीमा तक जहाँ तक हमारी आवश्यक जरूरतें पूरी न हो जाएँ, उसके बाद तो वह अपने कौतुक दिखाती ही है।''

प्रकाशक, मुद्रक, सम्पादक डॉ. वीना प्रधान द्वारा डिपार्टमेंट ऑफ एज्यूकेशन गवर्नमेंट ऑफ राजस्थान, बीकानेर के लिए माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर-334011 से प्रकाशित एवं कोटावाला ऑफसेट, 82, सुदर्शनपुरा, इण्डस्ट्रियल एरिया, जयपुर से मुद्रित। **© प्रधान सम्पादक : डॉ. वीना प्रधान**

इन्दिरा प्रियदर्शनी पुरस्कार 2012 वितरण की फोटो झलकियाँ

दिवंगत प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी के जन्मदिन 19 नवम्बर, 2012 के दिन प्रदेश के सभी जिलों में इन्दिरा प्रियदर्शिनी पुरस्कारों का वितरण समारोह पूर्वक किया गया। पुरस्कारों के अन्तर्गत माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा आयोजित हायर सैकण्डरी एवं सैकण्डरी परीक्षा 2012 में जिला स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली सामान्य, अ.जा., अ.ज.जा., अन्य पिछड़ा वर्ग, विकलांग एवं अल्पसंख्यक वर्ग की बालिकाओं को क्रमशः 50,000 रुपये एवं 40,000 रुपये के चैक तथा प्रमाण-पत्र अर्पित किए गए।

डाक पंजीयन संख्या
RJ/JPC/M-29/2011-13

शिविरा पत्रिका (मासिक) जनवरी, 2013
प्रकाशन तिथि : 2 जनवरी, 2013 पृष्ठ 52
प्रेषण : हर माह की 5, 6 तारीख

समाचार-पत्र पंजीयन संख्या
10350/66

हमारी सांस्कृतिक धरोहर

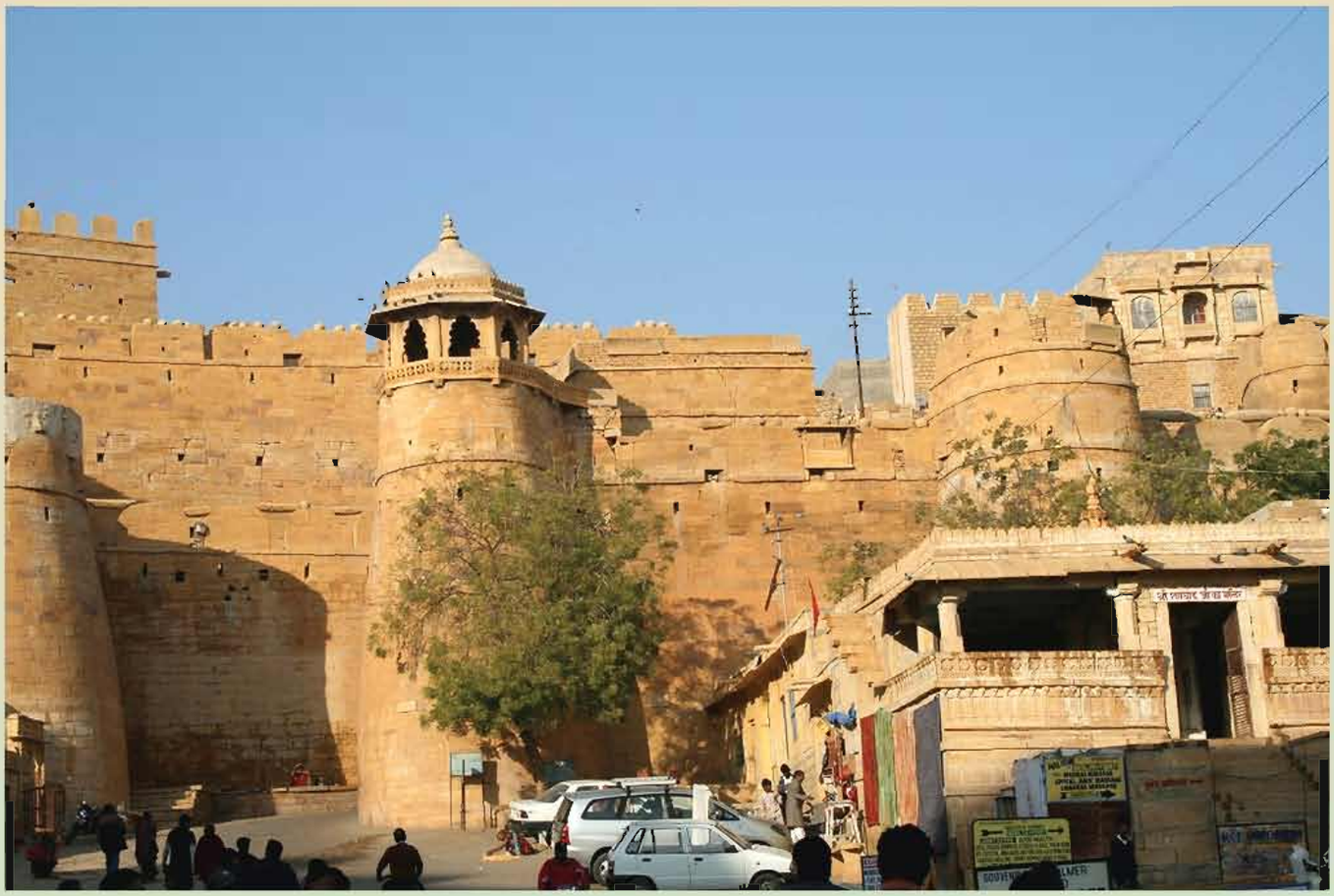

सोनारगढ़ दुर्ग, जैसलमेर

माड़धरा की पावनस्थली सरस्वती नदी के प्रवाह स्थल हेमनगर की त्रिकूट पहाड़ी पर स्थित सोनारगढ़ दुर्ग स्थापत्य कला का बेजोड़ नमूना है। यदुवंशी राजा महारावल जैसल सिंह ने 1156 ई. में इसका निर्माण करवाया। थार मरुस्थल के हृदय में स्थित इस किले के परकोटे में 99 शक्तिशाली बुर्ज दुर्ग की रक्षा हेतु सीना ताने खड़े हैं। मुख्य प्रवेश द्वार अखे प्रोल, सूरज प्रोल, गणेश प्रोल और हवा प्रोल इस अभेद्य किले की कहानी कहते हैं। 'चौहटा' सामाजिक एवं सांस्कृतिक झाँकी को संजोए है। राजमहल, लक्ष्मीनाथ मन्दिर, जैन मन्दिर स्थापत्य कला के बेजोड़ नमूने हैं। महाभारतकालीन जैसलू कुआं विश्व प्रसिद्ध है। ढाई साको का साक्षी यह किला विश्वधरोहर है, जिसमें पाँच हजार लोग आज भी निवास करते हैं।

साभार : रमेश आचार्य, वरिष्ठ अध्यापक, रा.मा.वि., वासोदरा (जैसलमेर)